ोक संस्कृ



स्कृति विभाग, उत्तर प्रदे

रुहेलखण्ड की लोक संस्कृति

(संस्कृति निदेशालय, उ.प्र., द्वारा पोषित सर्वेक्षण)

प्रस्तुतकर्ता :

प्रो० उदय प्रकाश अरोड़ा (मुख्य सर्वेक्षक)

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग

रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

डा. पंकज शर्मा
(सहायक सर्वेक्षक)

मनोज कुमार शर्मा
(सहायक सर्वेक्षक)

प्रकाशक . **के० के० उपाध्याय**
निदेशक, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रकाशन कार्य : डा० वीना विद्यार्थी

मुद्रक :
प्रिन्टआर्ट आफसेट,
33, कैन्ट रोड लखनऊ
दूरभाष : 219026

प्रकाशकीय

सामान्यतः किसी क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों के पारम्परिक धर्म, त्योहार, पर्व उत्सव, रीति–रिवाज, मान्यताएँ, विश्वास, लोकनृत्य, लोक गीत और लोक संगीत आदि जीवन की समग्रता को लोक–संस्कृति कहा जाता है। यह लोक–संस्कृति किसी क्षेत्र विशेष को अन्य क्षेत्रों से अलग एक स्वतंत्र पहचान प्रदान करती है। इसीलिए किसी क्षेत्र विशेष के लोक–जीवन को जानने के लिए उस क्षेत्र की लोक–संस्कृति का अध्ययन अपरिहार्य है।

उत्तर प्रदेश के संस्कृति विभाग ने कुछ वर्ष पूर्व प्रदेश के लोक–जीवन के गहन अध्ययन, सर्वेक्षण और अभिलेखीकरण की योजना बनाई थी। इसके अन्तर्गत प्रदेश को ब्रज, बुन्देलखण्ड, अवध, भोजपुरी, गढ़वाल, कुमायूँ, रुहेलखण्ड आदि अनेक सांस्कृतिक अंचलों में विभक्त करके प्रत्येक अंचल की लोक–संस्कृति के सर्वेक्षण के लिए एक–एक विशेषज्ञ नामित किया जिसके निर्देशन में निर्धारित रूपरेखा के आधार पर सम्पूर्ण प्रदेश का सांस्कृतिक सर्वेक्षण कराया गया। इसी क्रम में रुहेलखण्ड के विद्वान् प्रो० उदयप्रकाश अरोड़ा ने अपने अंचल के लोक–जीवन का सर्वेक्षण कराया। प्रसन्नता की बात है कि उनकी सर्वेक्षण–रिपोर्ट अब 'रुहेलखण्ड की लोक–संस्कृति' नामक पुस्तक के रूप में सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

रुहेलखण्ड प्राचीनकाल में 'पञ्चाल जनपद' के नाम से अपनी वैदिक विद्या और दार्शनिक विचारधारा के लिए प्रसिद्ध था। काशी से पहले पञ्चाल में ही विद्वत् परिषदों के आयोजन हुआ करते थे। बौद्धकाल में पञ्चाल की गणना 'सोलह महाजनपदों' में की जाती थी। महाभारतकाल में पञ्चाल राज्य उत्तरी तथा दक्षिणी पञ्चाल के नाम से बँट गया था। गंगा नदी दोनों को अलग करती थी। उत्तरी पञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी। इस नगर के ध्वंसावशेष बरेली जनपद की आँवला तहसील के ग्राम रामनगर के निकट अब भी मौजूद हैं जहाँ से शुंगकाल से लेकर गुप्तकाल तक के पुरावशेष पाए गए हैं। जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का सम्बन्ध भी अहिच्छत्रा से था। आज भी रामनगर में एक विशाल जैन मन्दिर है। यही पञ्चाल जनपद मध्यकाल से रुहेलखण्ड नाम से जाना जाता है।

धार्मिक विश्वासों–अनुष्ठानों, सामाजिक मेलजोल वाले मेलों, पर्वों, उत्सवों, व्यावसायिक हस्तकलाओं और गीत–संगीत के लिए रुहेलखण्ड की अपनी एक अलग लोक–संस्कृति है जिसका समग्र समावेश डा० अरोड़ा की पुस्तक 'रुहेलखण्ड की लोक–संस्कृति' में किया गया है। मुझे विश्वास है कि रुहेलखण्ड के लोक–जीवन को समझने में और उस क्षेत्र विशेष की लोक–संस्कृति के संरक्षण में यह पुस्तक निःसन्देह सहायक सिद्ध होगी।

के.के. उपाध्याय
निदेशक
संस्कृति विभाग, उ.प्र.

आभार

किसी क्षेत्र विशेष को जानने के लिए वहाँ की लोक संस्कृति का अध्ययन अत्यावश्यक है। भारत के अनेक क्षेत्रों की लोक संस्कृति का अध्ययन किया जा चुका है। परन्तु रुहेलखण्ड क्षेत्र अब तक इस प्रकार के अध्ययन से वंचित था। संस्कृति निदेशालय, उ०प्र० ने इस अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया और इस दिशा में पहल की। सर्वप्रथम हम संस्कृति निदेशालय उ०प्र० के आभारी हैं, जिसने 'रुहेलखण्ड की लोक संस्कृति' विषय पर कार्य करने हेतु वित्त पोषित किया। इसके अभाव में यह कार्य संभव नहीं था।

कार्यावधि में अनेक लोगों का अमूल्य सहयोग मिला है। इस सहयोग के बिना कार्य के वर्तमान स्वरूप की कल्पना करना भी असंभव था। हम डॉ० डब्ल्यू०एच० सिद्दकी (पुस्तकालय अध्यक्ष, रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर), श्री सुरेन्द्र मोहन मिश्र (मुरादाबाद), उस्ताद सख़ावत हुसैन खॉ "निशात" (रामपुर), हाजी शहजादे मियां (शह बुलाकी साहब ज़ारत – मुरादाबाद), श्री एन०एल० गगवार (बहेड़ी), डॉ० निर्मल कुमार (बरेली), कु० जेवा लतीफ़ (बरेली), श्री कमल कान्त (बरेली), श्री अनिल सिंह (शोध छात्र, रुहेलखण्ड वि०वि०), श्री राजकुमार कक्कड़, श्री विजय कुमार कक्कड़, श्री योगेन्द्र कुमार कक्कड़, श्री रवीन्द्र कुमार कक्कड़, (सभी – लीलाजी मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी – मुरादाबाद), श्री गिरिराज नन्दन (आँवला), फरहद अहमद जमाली साहब (रामपुर), जगदीश भाटी (शाहजहांपुर), एवं मो० अकरम (रामपुर) के विशेष रूप से आभारी हैं, जिन्होंने इस कार्य को वर्तमान रूप में पहुँचाने में अपना बहुमूल्य समय और सहयोग दिया है।

अन्त में हम श्री अलोक जौहरी एवं श्री जितेन्द्र दत्ता (कम्प्यूटर हाउस, बरेली) के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने प्रस्तुत सर्वेक्षण रिपोर्ट की सैटिंग करके हमें अपना सहयोग दिया।

प्रो० उदय प्रकाश अरोड़ा

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग

रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

अनुक्रम

प्रस्तावना

रुहेलखण्ड की भौगोलिक स्थिति :

रुहेलखण्ड क्षेत्र 26 डिग्री – 30 डिग्री उत्तरी अक्षांस, 77 डिग्री – 80 डिग्री पूर्वी देशान्तर में स्थित है। इस क्षेत्र में मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत, बरेली, बदायूँ तथा शाहजहाँपुर, जिले आते हैं। इस क्षेत्र से गंगा एवं उसकी सहायक नदियां प्रवाहित होकर निकलती हैं। यह क्षेत्र हिमालय पर्वत की तराई से लेकर चम्बल नदी तक फैला हुआ है।

रुहेलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास :

रुहेलखण्ड क्षेत्र का विशेष ऐतिहासिक महत्व है। इस क्षेत्र में प्राचीन राज्य पांचाल के अवशेष मिले हैं। पांचाल क्षेत्र में रहने वाले लोग क्षत्रिय थे। कालान्तर में यह लोग दो भागों में विभक्त हो गये। उनके दो मुख्य केन्द्र हुए–

(1) उत्तरी पांचाल
(2) दक्षिणी पांचाल

उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र थी तथा दक्षिणी पांचाल की राजधानी का नाम काम्पिल्य था।

उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र के अवशेष बरेली जिले के रामनगर नामक कस्बे के निकट प्राप्त हुए हैं। अहिच्छत्र का उल्लेख सर्वप्रथम वैदिक साहित्य में "परिचक्रा" नाम से मिलता है। महाभारत में "परिचक्रा" को स्पष्टतः अहिच्छत्र नाम दिया गया है। हरिवंश पुराण और पाणिनी की अष्टाध्यायी में अहिच्छत्र को "अहिछेत्र" कहा गया है। 1951 के अन्त में रामनगर (बरेली जिला) से एक यक्ष प्रतिमा प्राप्त हुई। इस पर द्वितीय शताब्दी का एक लेख अंकित है। इस लेख में अहिच्छत्र शब्द का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त जैन ग्रन्थों में भी उत्तरी पांचाल की राजधानी के रूप में अहिच्छत्र का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

पांचाल के अनेक राजाओं का उल्लेख वैदिक साहित्य और पुराणों में प्राप्त होता है। पांचाल के प्राचीन राजाओं में सुदास (बैदिक युगीन) का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सुदास ने कुरुराज संवरण के नेतृत्व में एकत्र हुए दस राजाओं की सम्मिलित सेना को रावी नदी के तट पर परास्त किया था। यह युद्ध "दसराज्ञ" युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

महाभारत काल में द्रुपद पांचाल के राजा हुए। कौरवों और पांडवों के गुरू द्रोणाचार्य ने द्रुपद को परास्त कर उत्तरी पांचाल पर अधिकार कर लिया था। दक्षिण पांचाल पर द्रुपद का ही अधिकार रहा। महाभारत युद्ध में उत्तरी पांचाल के शासक द्रोण और उनके पुत्र अश्वत्थामा ने कौरवों का साथ दिया था। वहीं दूसरी ओर दक्षिणी पांचाल के शासक द्रुपद ने पांडवों का साथ दिया।

जैन ग्रन्थ "विविध तीर्थ कल्प" के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात् पांचाल में हरिषेण नामक व्यक्ति का शासन हुआ। उसे पांचाल का चक्रवर्ती राजा कहा गया है।

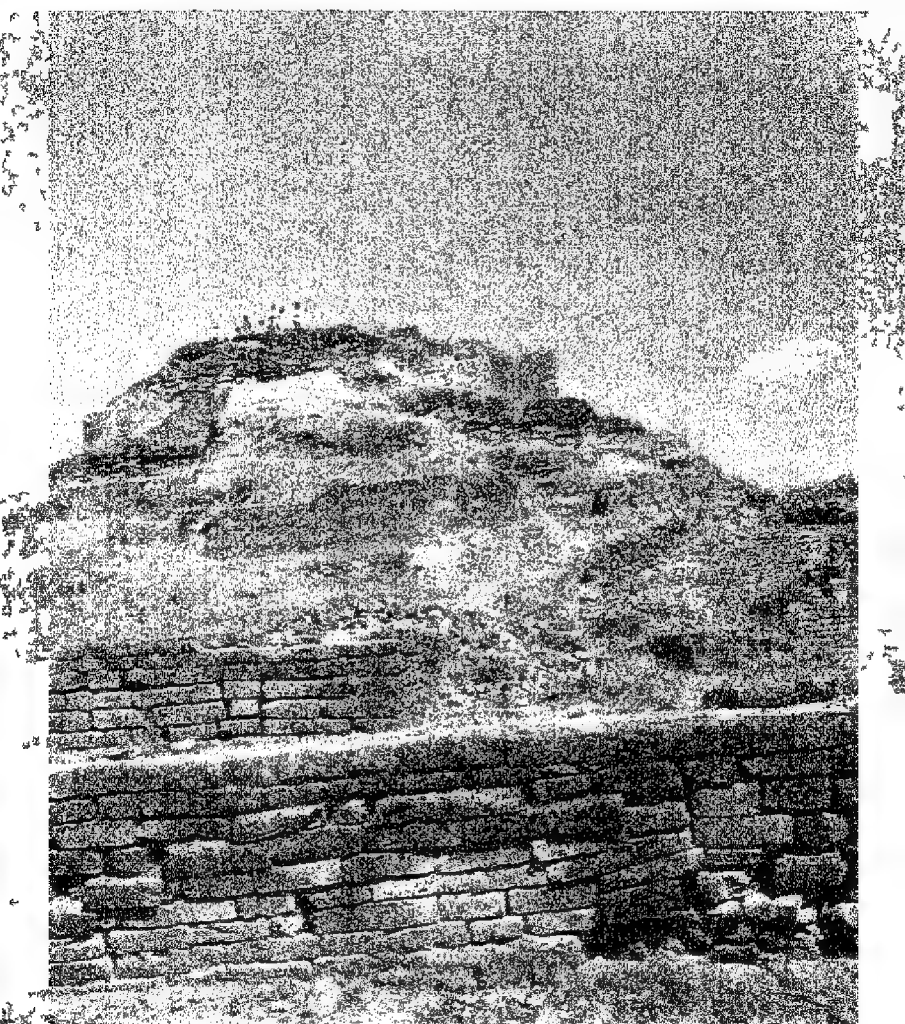
कालान्तर में बुद्धकालीन सोलह महा जनपदों में पांचाल भी सम्मिलित था, जिसकी सूचना बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में मिलती है।

मौर्य काल में पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र मोतियों के व्यवसाय के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थी। दूर–दूर के क्षेत्रों में यहाँ के मोतियों की मांग थी।

अहिच्छत्र में किए गए उत्खनन में ऐसे अनेक सिक्के प्राप्त हुये हैं, जो इस क्षेत्र पर शुंग राजाओं के आधिपत्य का संकेत देते हैं।

गुप्तकाल में भी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र का महत्व था। अहिच्छत्र से प्राप्त रुद्रगुप्त, जयगुप्त तथा दामगुप्त नामधारी सिक्के किसी न किसी रूप में पांचाल पर गुप्तों के आधिपत्य का संकेत देते हैं।

अहिच्छत्र का उत्खनन से प्रभूत मात्रा में ऐतिहासिक महत्व की पुरानिधियाँ प्राप्त हुई हैं



पाचाल राज्य की राजधानी अहिच्छत्र के अवशेष (रामनगर) बरेली

जिनका उल्लेख निम्नवत है–

(1) मौर्य कालीन मूर्तियाँ
(2) शुंग कालीन मूर्तियाँ
(3) कुषाण युगीन मूर्तियाँ
(4) गुप्त कालीन मूर्तियाँ

उपरोक्त सभी प्रकार की प्राप्त पुरानिधियाँ पांचाल क्षेत्र के अतिरिक्त मौर्य, शुंग, कुषाण तथा गुप्त कालीन संस्कृति की जानकारी हमें देती हैं।

मध्य काल में भी रुहेलखण्ड क्षेत्र का महत्व बना रहा। यद्यपि यह महत्व सांस्कृतिक दृष्टि से कम तथा राजनैतिक दृष्टि से अधिक था। 13वीं श०ई० में बदायूँ तथा इसके आस पास के क्षेत्र में अनेक तुर्की, कुत्वी तथा मुइज्जी सरदार रहते थे। इन लोगों ने सम्मिलित रूप से गुलाम वशी सुल्तान इल्तुतमिश के विरुद्ध मोर्चा तैयार किया। सुल्तान इल्तुतमिश ने वीरतापूर्वक इनका सामना किया और इन्हें परास्त करके बदायूँ तथा निकटवर्ती क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

सुल्तान बलबन (13वीं श०) के समय में बदायूँ तथा समीपवर्ती क्षेत्रों (तत्कालीन कटेहर क्षेत्र) में राजपूतों ने उसके खिलाफ विद्रोह किया। बलबन और राजपूतों में हुए युद्ध के उपरान्त बलबन की विजय हुई और कटेहरों के क्षेत्र पर उसका आधिपत्य स्थापित हो गया।

तुगलक वंश के पतनोपरान्त 15वीं शताब्दी में रुहेलखण्ड क्षेत्र के संभल तथा बदायूँ के राजपूतों ने सैय्यद वंश के राजाओं के विरुद्ध विद्रोह किया, जिसमें राजपूत लोग सैय्यद वंशीय राजाओं (खिज्र खां और मुबारक शाह) को निर्बल करने में सफल रहे। 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे लोदी वंश के शासक सिकन्दर लोदी ने संभल में अपना जागीरदार नियुक्त किया। इस नियुक्ति का उद्देश्य था इस क्षेत्र में अनुशासन बनाए रखना तथा एक निश्चित मात्रा मे आय प्राप्ति।

17वीं / 18वीं श०ई० में रुहेलखण्ड क्षेत्र में अफगानिस्तान स्थित रोह नामक स्थान के मूल

निवासी रोहिला जाति के लोगो को पदार्पण हुआ। ये लोग प्रारम्भ मे मुगल सेना से सम्बद्ध थे। रोहिला लोग युद्ध–कला में अत्यन्त निपुण थे तथा इनकी युद्ध शैली विशिष्ट प्रकार की थी। रुहेलखण्ड क्षेत्र का नाम इन्हीं के नाम के आधार पर पड़ा। बरेली जिले में स्थित फतेहगंज नामक स्थान पर 24 अक्टूबर 1794 ई० में रुहेला और अंग्रेजों के मध्य घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध मे अंग्रेजी सेना का नेतृत्व कर्नल जॉर्ज ब्यूरिंगटन ने किया था। फतेहगंज में इस युद्ध के स्मरण मे एक स्मारक भी स्थापित है जिसका निर्माण अंग्रेजों ने करवाया था।

सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में बरेली की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। इस संग्राम मे बरेली के असंख्य क्रान्तिकारियों ने भाग लिया। इन क्रान्तिकारियों में खान बहादुर खान का नाम सर्व प्रमुख है। खान बहादुर एक विद्वान व्यक्ति थे। इन्होंने 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध बरेली के क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया था। 5 मई 1858 को ब्रिटिश सेनाओं ने खान बहादुर खान को पराजित किया और 24 मार्च 1860 के दिन उन्हें फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। 1857 के क्रान्तिकारियों में उनका नाम सर्वोपरि स्थान पर है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर रुहेलखण्ड क्षेत्र का ऐतिहासिक महत्व स्वयं सिद्ध है।

रुहेलखण्ड की लोक संस्कृति के अध्ययन की आवश्यकता

सामान्यतः किसी क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों के पारम्परिक धर्म, त्यौहार, पर्व रीति रिवाज, मान्यताओं, कला आदि के समग्र को लोक संस्कृति का नाम दिया जाता है। लोक संस्कृति किसी क्षेत्र विशेष को अन्य क्षेत्रों से अलग एक स्वतन्त्र पहचान प्रदान करती है। वर्तमान में हम यदि राजस्थान, पंजाब, केरल, उड़ीसा, तमिलनाडु इत्यादि प्रान्तों का स्मरण करते हैं, तो मात्र उनकी लोक संस्कृति के आधार पर। पुनश्च यह प्रान्त भी अनेक क्षेत्रों में विभक्त हैं जिनमे से प्रत्येक की अपनी अलग–अलग लोक संस्कृति है। किसी क्षेत्र विशेष को जानने के लिए वहा की लोक संस्कृति का अध्ययन अत्यावश्यक है। भारत के अनेक क्षेत्रों की लोक संस्कृति का अध्ययन अत्यावश्यक है। भारत के अनेक क्षेत्रों की लोक संस्कृति का अध्ययन किया जा चुका है। परन्तु रुहेलखण्ड क्षेत्र इस प्रकार के अध्ययन से वंचित रहा है। अतः इस क्षेत्र की लोक संस्कृति के अध्ययन की महती आवश्यकता है।

हस्तकलाएं

रचनात्मकता मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। अपनी रचनात्मक प्रवृत्ति और क्षमता के बल पर मनुष्य ने अनेक कलाओं को जन्म दिया। इनमें से प्रत्येक कला की अपनी पृथक मौलिक विशेषताएं थीं। रुहेलखण्ड क्षेत्र प्रारम्भ से ही विविध हस्तकलाओं की भूमि रहा है। इस तथ्य की पुष्टि अहिच्छत्र इत्यादि पुरास्थलों के उत्खनन में प्राप्त विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों से होती है। यहाँ की कलाओं में कुछ अपने परम्परागत रूप में विद्यमान हैं। ऐसी कलाओं के केन्द्र रुहेलखण्ड के गाँव हैं। दूसरी ओर कुछ कलाओं ने समय के साथ-साथ बढ़ती हुई माँग के अनुसार वृहद् और व्यावसायिक रूप ग्रहण कर लिया है। इस प्रकार की कलाओं के केन्द्र प्राय रुहेलखण्ड क्षेत्र के नगर हैं। हालांकि परम्परागत ग्रामीण हस्तकलाएं भी व्यावसायिक रूप ग्रहण कर रही हैं, लेकिन उनका व्यावसायिक स्वरूप आस-पास के ग्रामीण इलाकों तक ही सीमित है।

इस तरह रुहेलखण्ड की हस्तकलाओं को निम्नलिखित वर्गीकरण के अन्तर्गत समझा जा सकता है-

(1) परम्परागत ग्रामीण हस्तकलाएं

(2) व्यावसायिक रूप ग्रहण कर चुकी हस्तकलाएं

(1) – परम्परागत ग्रामीण हस्तकलाएं

रुहेलखण्ड क्षेत्र के गाँवों में विभिन्न प्रकार की हस्तकलाओं के दर्शन होते हैं, जिनमें गॉव के स्त्री, पुरुष तथा बच्चे अत्यन्त निपुण हैं। इन कलाओं में अग्रलिखित प्रमुख हैं-

(i) डलिया निर्माण

(ii) चटौना निर्माण

(iii) हाथ के पंखे

(iv) सूप

(v) मिट्टी के बर्तन

i) डलिया निर्माण :

रुहेलखण्ड क्षेत्र के गाँवों में डलिया निर्माण एक प्रमुख हस्तकला है। यह डलिया विभिन्न रंगों और डिज़ायनों में बनाई जाती हैं। ग्रामीण परिवार की महिलाएं इन डलियों को बनाने में अत्यन्त निपुण होती हैं। इन डलियों का निर्माण भरा नामक जंगली घास से निकली एक विशिष्ट प्रकार की छाल (बरुआ) से किया जाता है। यह जंगली घास यहाँ के गाँवों में आसानी से उपलब्ध है। सर्वप्रथम बरुआ की छाल की गोलाकार (रस्सी की आकृति के समतुल्य) बत्तियाँ बनाई जाती हैं। अब इन बत्तियों पर विभिन्न प्रकार के रंग लगाए जाते हैं। ये रंग विशिष्ट प्रकार के होते हैं तथा इनको गर्म पानी में घोलकर तैयार किया जाता है ताकि यह पक्के बने रहें। रंग सूख जाने के उपरान्त विभिन्न रंगों की बत्तियों को एक–दूसरे के ऊपर गोलाकृति में व्यवस्थित करके डलिया का आकार दिया जाता है। डलिया निर्मित हो जाने के उपरान्त कई बार डलिया के किनारों पर रंगे–बिरंगे कपड़ों की झल्लरें लगाई जाती हैं। प्रायः इन झल्लरों पर काँच के छोटे–छोटे टुकड़ों से भी सजावट की जाती है। इस प्रकार निर्मित डलिया देखने में अत्यन्त मोहक प्रतीत होती हैं। यह डलिया वजन में हल्की तथा बहु उपयोगी होती है।

(ii) चटौनी निर्माण :

पूजा तथा भोजन के दौरान बैठने के लिए आसन के रूप में प्रयुक्त चटौना रुहेलखण्ड की ग्रामीण कला का एक मुख्य अंग है। ग्रामीण परिवार की लड़कियाँ तथा महिलाएं चटौना बनाने में विशेष रूप से दक्ष होती हैं। इनको बनाने में भी भरा नामक जंगली घास से प्राप्त बरुआ की छाल प्रयुक्त होती है। डलिया निर्माण की भाँति चटौने को बनाने में भी सर्वप्रथम बरुआ की छाल की गोलाकार लम्बी बत्ती बनाई जाती हैं। अब इन बत्तियों पर गर्म पानी में पृथक–पृथक घोलकर तैयार किए गए विभिन्न रंग लगाए जाते हैं। रंग सूख जाने के उपरान्त उस बत्तियों को चक्राकार घुमाते हुए तथा बत्ती की परतों को आपस में संयुक्त करते हुए चटौने को अन्तिम रूप दिया जाता है। चटौने को आवश्यकता के अनुरूप किसी भी आकार में बनाया जा सकता है। ये चटौना अत्यन्त हल्का तथा आरामदायक होता है। इसकी खूबसूरती के कारण लोग इसे अपने घरों में सजावट के लिए भी प्रयुक्त करते हैं।

(iii) हाथ के पंखे :

रुहेलखण्ड क्षेत्र के ग्रामीण लोग हाथ के पंखे बनाने में विशेष रूप से दक्ष होते है यह पंखे भी भरा से प्राप्त बरुआ की छाल से निर्मित होते हैं। सर्वप्रथम बरुआ की छाल क बारीक (लगभग ½ से.मी. चौड़े) तथा लम्बे टुकड़े काट लिए जाते हैं। अब इन टुकड़ा पर पृथक–पृथक विभिन्न रंग लगाए जाते हैं। इसके उपरान्त रंग–बिरंगे टुकड़ों को एक दूसरे में पिरोते हुए डिजायन–युक्त पंखा बुना जाता है। पंखे को मजबूती प्रदान करने के लिए इसके सिरों पर रंगीन कपड़ों की झल्लरें लगाई जाती हैं। यह झल्लरें पंखों को अनोखी सुन्दरता प्रदान करती हैं। तदुपरान्त पंखे के एक ओर लकड़ी का हत्था लगाकर इसे अन्तिम रूप दिया जाता है। यह पंखा झलने पर पर्याप्त हवा तो देता ही है साथ ही इसकी सुन्दरता भी देखते बनती है।

(iv) सूप :

गेहूँ, दालें तथा अन्य अनाजों को साफ करने हेतु रुहेलखण्ड के ग्रामों में एक विशिष्ट प्रकार के हस्तनिर्मित सूप का प्रयोग किया जाता है। ये सूप प्रायः ग्रामीण परिवारों लोग नहीं बनाते हैं। इनको बनाने वाले कारीगरों के पृथक के समूह हैं। बदायूँ तथा बरेली जिले के गाँवों में ऐसे कारीगरों के अनेक समूह हैं। बदायूँ जिले के कुछ कारीगरों से सूप निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी मिली। सूप का निर्माण सरकरा नामक पौधे की झाड़ियों से प्राप्त सिरकी से किया जाता है। इसके अतिरिक्त बाँस की खपच्ची, चमड़े का धागा तथा प्लास्टिक का तार इत्यादि सूप–निर्माण में प्रयुक्त अन्य वस्तुएं हैं। सर्वप्रथम सिरकियों को चमड़े के धागे, बाँस की खपच्ची तथा प्लास्टिक के तार की सहायता से आपस में सम्बद्ध किया जाता है। इसके उपरान्त बाँस की खपच्चियों की मदद से सूप के किनारों को मजबूती प्रदान की जाती है। बाँस की खपच्चियों की सहायता से सूप में हल्का सा घुमाव भी पैदा किया जाता है, ताकि अनाज साफ करने (या अनाज को फटकने) में आसानी रहे। इस सूप में पीछे की ओर लगभग चार इंच चौड़ी किनारी लगाई जाती है। यह किनारी सूप को पकड़ने तथा इसको दीवार पर टांगने में मदद देती है। इस प्रकार निर्मित सूप गाँवों के साथ–साथ शहरों मे भी प्रयुक्त होते देखे जा सकते हैं। सूप निर्माण में प्रायः एक परिवार के समस्त सदस्य संलग्न होते हैं।

V) मिट्टी के बर्तन :

मिट्टी द्वारा बर्तन तथा अन्य वस्तुएं बनाने की विधा अत्यन्त प्राचीन है। यह विधा देश के लगभग प्रत्येक हिस्से में किसी न किसी रूप में देखी जा सकती है। रुहेलखण्ड क्षेत्र के नगरो तथा गाँवों, दोनों में इस कला के दर्शन होते हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने का सम्पूर्ण कार्य गोल चाक पर किया जाता है, जिसको हाथ की सहायता से गति प्रदान की जाती है। कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त मिट्टी तालाब के किनारों पर स्थित दलदली भूमि से प्राप्त की जाती है। कुम्हार चाक की सहायता से गुँथी हुई गीली मिट्टी से विभिन्न आकृतियों में पात्र बनाते हैं। सूख जाने के उपरान्त इन पात्रों को भट्टी में उच्च ताप पर पकाया जाता है। तदुपरान्त इन पर रंग की सहायता से चित्रकारी करके बाजारों में बिक्री हेतु भेज दिया जाता है। रुहेलखण्ड क्षेत्र में निर्मित मिट्टी के बर्तनों में मटके तथा घड़े, प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी की अन्य वस्तुओं मे गमले, कूंडे, चिलम, हुक्के तथा भोजन रखने के पात्र भी उल्लेखनीय हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र मे निर्मित मिट्टी के बर्तनों इत्यादि के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि देश के अन्य हिस्सों में यह कला भले ही शनैः शनैः विलुप्त हो रही हो, लेकिन रुहेलखण्ड क्षेत्र में यह कला आज भी यथावत है। यह अलग बात है कि समय के साथ–साथ मिट्टी से निर्मित बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं की कीमत में तीव्र वृद्धि हुई हो।

(2) – व्यावसायिक रूप ग्रहण कर चुकी हस्तकलाएं

रुहेलखण्ड क्षेत्र में ऐसी अनेक हस्तकलाएं देखी जा सकती हैं, जो अपने प्रारम्भिक दौर मे अत्यन्त संकुचित दायरे के भीतर थीं किन्तु समय के अनुरूप उनकी मांग बढ़ती चली गई और उन्होंने व्यावसायिक रूप ग्रहण कर लिया। लेकिन व्यावसायिक रूप ग्रहण करने के उपरान्त भी इन कलाओं की अपनी एक मौलिक और क्षेत्रीय पहचान है। किसी भी अन्य क्षेत्र की कला से इनकी तुलना नहीं की जा सकती। इस प्रकार की कलाओं में अग्रउल्लिखित प्रमुख हैं–

(i) लकड़ी का फर्नीचर (बरेली)

(ii) बेंत की वस्तुएं (बरेली)

(iii) पीतल की वस्तुएं (मुरादाबाद)

(iv) चाकू (रामपुर)

(v) पतंग एवं मांझा (बरेली)

(vi) टोपियाँ (रामपुर)

(vii) बॉसुरी निर्माण (पीलीभीत)

(viii) लकड़ी से निर्मित बच्चों की गाड़ियाँ (बजीरगंज)

(ix) हुक्का (भोजपुर पीपल साना, जिला – मुरादाबाद)

(x) जरी का काम (बरेली)

(xi) लकड़ी की वस्तुएं (अमरोहा, जिला – मुरादाबाद)

(xii) सींग की वस्तुएं (सम्भल, जिला – मुरादाबाद)

(xiii) हड्डी की वस्तुएं (सम्भल, जिला – मुरादाबाद)

(I) लकड़ी का फर्नीचर (बरेली) :

जब से मनुष्य प्रकृति की गोद में आया, तभी से उसे किसी न किसी रूप में प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य धरोहर–लकड़ी का सहारा लेना पड़ा है, चाहे उसने लकड़ी को घर में प्रयुक्त किया हो या फिर आत्मरक्षा का साधन बनाया हो। प्रारम्भ में इस परम्परा को रुहेलखण्ड क्षेत्र के निवासियों ने अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपनाया। शनैः शनैः लोगों ने लकड़ी का सहारा अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए लिया। परन्तु दैनिक आवश्यकताओं की अवहेलना भी नहीं की जा सकती थी, अतः यहाँ के लोगों ने लकड़ी की मदद से ऐसी कलात्मक वस्तुएं बनानी प्रारम्भ कीं, जो उपयोगी भी थीं। ऐसी वस्तुओं में फर्नीचर का स्थान सर्वोपरि था। लकड़ी के फर्नीचर की कला ने बरेली में अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त कर, सम्पूर्ण भारत में ख्याति प्राप्त की है।

बरेली शहर शीशम, साल, सागौन इत्यादि की लकड़ी से निर्मित फर्नीचर के कारण देश मे एक विशिष्ट स्थान रखता है। देश का संभवतः कोई ही ऐसा भाग हो, जो बरेली में निर्मित फर्नीचर से परिचित न हो। बरेली महानगर के सिकलापुर, पुरानाशहर तथा आजमनगर इलाकों के हजारो कारीगर फर्नीचर निर्माण की कला से जुड़े हुए हैं। दस–बारह वर्ष की आयु के बालकों से लेकर वृद्ध वर्ग तक के लोग इस व्यवसाय में देखे जा सकते हैं। इतना अवश्य है कि उम्र की विभिन्न अवस्थाओं को पार करने के साथ–साथ कारीगरों की कुशलता में निरन्तर निखार आता जाता है। बरेली में निर्मित फर्नीचर अपनी मजबूती के कारण सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध है। मजबूती के अतिरिक्त

V) मिट्टी के बर्तन :

मिट्टी द्वारा बर्तन तथा अन्य वस्तुएं बनाने की विधा अत्यन्त प्राचीन है। यह विधा देश के लगभग प्रत्येक हिस्से में किसी न किसी रूप में देखी जा सकती है। रुहेलखण्ड क्षेत्र के नगरों तथा गाँवों, दोनों में इस कला के दर्शन होते हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने का सम्पूर्ण कार्य गोल चाक पर किया जाता है, जिसको हाथ की सहायता से गति प्रदान की जाती है। कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त मिट्टी तालाब के किनारों पर स्थित दलदली भूमि से प्राप्त की जाती है। कुम्हार चाक की सहायता से गुँथी हुई गीली मिट्टी से विभिन्न आकृतियों में पात्र बनाते हैं। सूख जाने के उपरान्त इन पात्रों को भट्टी में उच्च ताप पर पकाया जाता है। तदुपरान्त इन पर रंग की सहायता से चित्रकारी करके बाजारों में बिक्री हेतु भेज दिया जाता है। रुहेलखण्ड क्षेत्र में निर्मित मिट्टी के बर्तनों में मटके तथा घड़े, प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी की अन्य वस्तुओं मे गमले, कूंडे, चिलम, हुक्के तथा भोजन रखने के पात्र भी उल्लेखनीय हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र मे निर्मित मिट्टी के बर्तनों इत्यादि के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि देश के अन्य हिस्सों में यह कला भले ही शनैः शनैः विलुप्त हो रही हो, लेकिन रुहेलखण्ड क्षेत्र में यह कला आज भी यथावत है। यह अलग बात है कि समय के साथ–साथ मिट्टी से निर्मित बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं की कीमत में तीव्र वृद्धि हुई हो।

(2) – व्यावसायिक रूप ग्रहण कर चुकी हस्तकलाएं

रुहेलखण्ड क्षेत्र में ऐसी अनेक हस्तकलाएं देखी जा सकती हैं, जो अपने प्रारम्भिक दौर मे अत्यन्त संकुचित दायरे के भीतर थीं किन्तु समय के अनुरूप उनकी मांग बढ़ती चली गई और उन्होंने व्यावसायिक रूप ग्रहण कर लिया। लेकिन व्यावसायिक रूप ग्रहण करने के उपरान्त भी इन कलाओं की अपनी एक मौलिक और क्षेत्रीय पहचान है। किसी भी अन्य क्षेत्र की कला से इनकी तुलना नहीं की जा सकती। इस प्रकार की कलाओं में अग्रउल्लिखित प्रमुख हैं–

(i) लकड़ी का फर्नीचर (बरेली)

(ii) बेंत की वस्तुएं (बरेली)

(iii) पीतल की वस्तुएं (मुरादाबाद)

(iv) चाकू (रामपुर)

(v) पतंग एवं मांझा (बरेली)

(vi) टोपियाँ (रामपुर)

(vii) बाँसुरी निर्माण (पीलीभीत)

(viii) लकड़ी से निर्मित बच्चों की गाड़ियाँ (बजीरगंज)

(ix) हुक्का (भोजपुर पीपल साना, जिला – मुरादाबाद)

(x) जरी का काम (बरेली)

(xi) लकड़ी की वस्तुएं (अमरोहा, जिला – मुरादाबाद)

(xii) सींग की वस्तुएं (सम्भल, जिला – मुरादाबाद)

(xiii) हड्डी की वस्तुएं (सम्भल, जिला – मुरादाबाद)

(I) लकड़ी का फर्नीचर (बरेली) :

जब से मनुष्य प्रकृति की गोद में आया, तभी से उसे किसी न किसी रूप में प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य धरोहर–लकड़ी का सहारा लेना पड़ा है, चाहे उसने लकड़ी को घर में प्रयुक्त किया हो या फिर आत्मरक्षा का साधन बनाया हो। प्रारम्भ में इस परम्परा को रुहेलखण्ड क्षेत्र के निवासियों ने अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपनाया। शनैः शनैः लोगों ने लकड़ी का सहारा अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए लिया। परन्तु दैनिक आवश्यकताओं की अवहेलना भी नहीं की जा सकती थी, अतः यहाँ के लोगों ने लकड़ी की मदद से ऐसी कलात्मक वस्तुएं बनानी प्रारम्भ कीं, जो उपयोगी भी थीं। ऐसी वस्तुओं में फर्नीचर का स्थान सर्वोपरि था। लकड़ी के फर्नीचर की कला ने बरेली में अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त कर, सम्पूर्ण भारत में ख्याति प्राप्त की है।

बरेली शहर शीशम, साल, सागौन इत्यादि की लकड़ी से निर्मित फर्नीचर के कारण देश मे एक विशिष्ट स्थान रखता है। देश का संभवतः कोई ही ऐसा भाग हो, जो बरेली में निर्मित फर्नीचर से परिचित न हो। बरेली महानगर के सिकलापुर, पुरानाशहर तथा आजमनगर इलाकों के हजारो कारीगर फर्नीचर निर्माण की कला से जुड़े हुए हैं। दस–बारह वर्ष की आयु के बालकों से लेकर वृद्ध वर्ग तक के लोग इस व्यवसाय में देखे जा सकते हैं। इतना अवश्य है कि उम्र की विभिन्न अवस्थाओं को पार करने के साथ–साथ कारीगरों की कुशलता में निरन्तर निखार आता जाता है। बरेली में निर्मित फर्नीचर अपनी मजबूती के कारण सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध है। मजबूती के अतिरिक्त

ारेली के फर्नीचर की प्रमुख कलात्मक विशेषता है– नक्काशी / फर्नीचर की यह विशेषता अन्यत्र शायद ही देखने को मिले। कुशल कारीगर सबसे पहले लकड़ी के टुकड़ों पर पेन्सिल या स्टैन्सिल की सहायता से डिज़ाइन अंकित करते हैं। फिर अंकित डिज़ायन पर छेनी और हथौड़ी की सहायता से नक्काशी करते हैं। नक्काशी का विषय सुन्दर बेल–बूटे, पशु–पक्षी, मानवाकृतियाँ इत्यादि हैं। यहाँ के फर्नीचर की एक अन्य विशेषता है– जालीदार पारदर्शी नक्काशी। इस नक्काशी के प्रथम चरण में भी लकड़ी के टुकड़े पर स्टैन्सिल या पेंसिल की सहायता से आकृति अंकित की जाती है। तदुपरान्त एक विशेष प्रकार की मेजनुमा मशीन (जिसमें तीव्र धार युक्त ब्लेड लगा होता है, की सहायता से आकृति पर पारदर्शी नक्काशी की जाती है। इस तरह की नक्काशी से युक्त फर्नीचर की छटा देखते ही बनती है।

नक्काशी के उपरान्त फर्नीचर पर विशेष रूप से तैयार की गई वार्निश से पॉलिश की जाती है। बरेली में बनाए जाने वाले फर्नीचर के अन्तर्गत सोफा, मेज, कुर्सी, अल्मारियाँ, श्रृंगार मेज, पलंग इत्यादि का प्रमुख स्थान है। कच्चे सामान के रूप में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी की आपूर्ति निकटस्थ पहाड़ी क्षेत्रों से होती है। बरेली में निर्मित फर्नीचर की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है। यहाँ का फर्नीचर देश के लगभग हर हिस्से में भेजा जाता है।

(ii) बेंत की वस्तुएं (बरेली)

बरेली में निर्मित बेंत की लकड़ी का सामान अपनी उपयोगिता और सुन्दरता के कारण दूर–दूर तक प्रसिद्ध है। बेंत की वस्तुओं के निर्माण में नगर के सैकड़ो कारीगर संलग्न है। इस कला के केन्द्र नगर में स्थित पुराना शहर एवं आजमनगर क्षेत्र हैं। बेंत की वस्तुएं बनाने का अपना विशिष्ट तरीका है। सर्वप्रथम बेंत को छीलकर साफ किया जाता है। इसके उपरान्त बेंत को (यदि बेंत की मोटाई अधिक है) आँच पर गर्म करके विभिन्न आकारों में मोड़ा जाता है। कम मोटाई का बेंत बिना आँच की सहायता से मोड़ा जा सकता है। इसके उपरान्त बेंत के विभिन्न टुकड़ो को कोई विशेष आकृति प्रदान करते हुए कीलों की मदद से आपस में संयुक्त किया जाता है। अमुक वस्तु को अधिक मजबूती प्रदान करने हेतु जोड़ों पर बेंत के तारों से कलात्मक बुनाई की जाती है। तदुपरान्त चमकीली पॉलिश करके निर्मित वस्तु को अन्तिम रूप दिया जाता है। बरेली में निर्मित बेंत की वस्तुओं में कुर्सियाँ, मेज, सोफा, रैक, गमला–स्टैण्ड, विविध प्रकार के शो

पीस इत्यादि का प्रमुख स्थान है। यह बेंत की वस्तुएं वजन में हल्की, मजबूत तथा अत्यन्त सुन्दर होती हैं। बरेली नगर में बेंत की वस्तुओं की बिक्री के लिये शहर के मध्य एक बाजार भी स्थित है। बरेली के अतिरिक्त बेंत की वस्तुओं का व्यवसाय धीरे–धीरे समीपस्थ स्थानों पर भी विकसित हो रहा है। बरेली में निर्मित बेंत का सामान विभिन्न राज्यों में भेजा जाता है। कच्चे माल के रूप मे प्रयुक्त होने वाले ब्रेंत की आपूर्ति मुख्यतः आसाम राज्य से होती है।

(iii) पीतल की वस्तुएं (मुरादाबाद)

जब से विभिन्न धातुएं मनुष्य के सम्पर्क में आई, तब से उसने निरन्तर इनका प्रयोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति और सौन्दर्याभिव्यक्ति हेतु किया है। रुहेलखण्ड क्षेत्र आरम्भ से ही धातु कला में अग्रणी रहा है। इस तथ्य की पुष्टि अहिच्छत्र इत्यादि पुरास्थलों से प्राप्त विविध प्रकार की धातु निर्मित कलाकृतियों से होती है। वर्तमान में भी रुहेलखण्ड क्षेत्र अपनी इस प्राचीन परम्परा से विलग प्रतीत नहीं होता। इस क्षेत्र में स्थित मुरादाबाद नगर पीतल द्वारा निर्मित वस्तुओं के निर्माण के कारण देश–विदेश में एक विशिष्ट कलात्मक पहचान बनाए हुए है। यहाँ निर्मित पीतल के बर्तन, शो–पीस तथा अन्य बहुउयोगी वस्तुएं न केवल देश में, वरन् दूसरे देशो (अमेरिका, फ्रांस आदि) में भी निर्यात की जाती हैं। यहाँ निर्मित पीतल की वस्तुएं कितनी लोकप्रिय हैं, इस बात का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि मुरादाबाद को 'पीतलनगरी'' के नाम से भी जाना जाता है। मुरादाबाद में पीतल की वस्तुओं के छोट–बड़े सैकड़ों कारखाने हैं।

पीतल की वस्तुएं बनाने की विधि :

पीतल द्वारा वस्तुएं बनाने के लिए सर्वप्रथम पीतल अलॉय (Alloy) प्राप्त किया जाता है जा 67% पीतल तथा 33% जस्ता के मिश्रण से तैयार होता है। पीतल अलॉय की सहायता से विभिन्न वस्तुएं बनाई जाती हैं। इन वस्तुओं तथा कलाकृतियों का वर्गीकरण निम्नलिखित दो भागों मे किया जा सकता है–

(अ) ठोस पीतल की सहायता से निर्मित वस्तुएं।

(आ) पीतल की चादर द्वारा निर्मित वस्तुएं।

ठोस पीतल द्वारा नाना प्रकार की कलाकृतियों तथा वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। सर्वप्रथम जिस वस्तु का निर्माण करना है, उसका साँचा (Pattern) तैयार किया जाता है, जो कि लैड धातु से बनाया जाता है। अब इस साँचे की छाप गीले रेते तथा मिट्टी के गुंथे हुए मिश्रण की सतह पर ले ली जाती है। इसके उपरान्त उच्च ताप पर पिघली हुई धातु को छाप में डाला जाता है। कुछ समय उपरान्त पिघली हुई धातु जमकर साँचे का रूप ग्रहण कर लेती है। अब साँचे का रूप ग्रहण कर चुकी धातु को मिट्टी और रेते के मिश्रण से पृथक करके साफ कर लिया जाता है। अगले चरण में अमुक वस्तु को घिसकर साफ किया जाता है। इसके बाद एक विशिष्ट प्रकार की मशीन की सहायता से पॉलिश करके वस्तु को अन्तिम रूप दिया जाता है।

आ) पीतल की चादर द्वारा भी अनेक प्रकार की सुन्दर वस्तुएं बनाई जाती है। सबसे पहले पीतल को पिघलाकर बड़ी–बड़ी चादरों के रूप में ढाला जाता है। इसके पश्चात् इस चादर में से आवश्यकता के अनुरूप छोटे–बड़े टुकड़े काट लिए जाते हैं। इन टुकड़ों को डाई की सहायता से विभिन्न रूपों और आकृतियों में मोड़ा जाता है। इसके बाद इन आकृतियों पर छैनी की सहायता से नक्काशी की जाती है, जो अमुक आकृति की सुन्दरता में दोगुना निखार लाती है। अन्ततः चादर की सहायता से निर्मित वस्तुओं पर पॉलिश करके निखारा जाता है। पीतल की चादर द्वारा निर्मित वस्तुएं वजन में हल्की तथा अत्यन्त आकर्षक होती हैं।

(iv) चाकू (रामपुर) :

धातुओं के अस्तित्व में आने के उपरान्त मनुष्य ने इनका प्रयोग विविध प्रकार के उपकरण बनाने में किया, जो दैनिक जीवन में अत्यावश्यक थे। इन उपकरणों में चाकू भी एक था। चाकू को जहाँ एक ओर रक्षात्मक उद्देश्य से प्रयोग में लाया गया, वही अन्य अनेक आवश्यकताओं हेतु भी इसका प्रयोग किया गया। रुहेलखण्ड क्षेत्र में स्थित रामपुर नगर चाकू निर्माण के क्षेत्र मे अग्रणी है। यहाँ निर्मित चामू पैनी धार, कलात्मक बनावट तथा मजबूती के लिए सम्पूर्ण देश मे प्रसिद्ध हैं। रामपुर में चाकू निर्माण में लगभग 8000 व्यक्ति संलग्न हैं।

चाकू बनाने की विधि :

चाकू बनाने में आवश्यक वस्तुओं के रूप में पीतल, एल्युमिनियम, लोहा, सींग तथा विविध रंगों का प्रयोग किया जाता है।

चाकू दो हिस्सों में विभक्त होता है–

(अ) धारदार मुख्य भाग

(आ) चाकू का मूठ

चाकू का धारदार मुख्य भाग लोहे की सहायता से बनाया जाता है। इसको बनाने की प्रक्रिया में सबसे पहले लोहे को उच्च तापमान पर गर्म किया जाता है। अब इस लोहे को भारयुक्त हथौड़े की सहायता से पीटकर चाकू का आकार दिया जाता है। अन्त में एक गोलाकार मशीन की सहायता से चाकू पर धार लगाई जाती है।

चाकू का मूठ प्रायः पीतल की सहायता से बनाया जाता है। पीतल को गर्म करके मूठ की आकृति वाले साँचे में ढाल लिया जाता है। इसके पश्चात् मूठ को पुनः गर्म किया जाता है और फिर फरमे की सहायता से मूठ पर नक्काशी की जाती है। इस नक्काशी पर तरह–तरह के रंग लगाकर मूठ को खूबसूरती प्रदान की जाती है।

चाकू बनाने की अंतिम प्रक्रिया है धारदार भाग और मूठ को संयुक्त करना। इन दोनों हिस्सों में पहले एक बारीक सूराख किया जाता है। तदुपरान्त दोनों हिस्सों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार संयुक्त किया जाता है कि दोनों हिस्सों के छिद्र एक दूसरे के ऊपर आ जाएं। अब इन छिद्रों में धातु निर्मित कील को डालकर दोनों सिरों की ओर से ठोंक दिया जाता है। रामपुर में निर्मित चाकू विभिन्न आकृतियों और आकारों में उपलब्ध हैं।

(iv) पतंग एवं मांझा (बरेली) :

जब मनुष्य का मन अत्यधिक प्रफुल्लित होता है, तब वह अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए नाना प्रकार के उद्यम करता है। इसी प्रकार का एक उद्यम है– पतंग–बाजी। भारतवर्ष मे पतंगबाजी का शौक लोगों में किस सीमा तक है, इसका अनुमान इस तथ्य से ही लगाया जा

पकता है कि यहाँ विभिन्न प्रान्तों में भिन्न–भिन्न अवसरों पर पतंगबाजी की बड़ी–बड़ी प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता है। पतंगबाजी में पतंग के साथ–साथ मजबूत मांझे का प्रयोग भी किया जाता है। यद्यपि देश के कई हिस्सों में पतंग एवं मांझे का निर्माण किया जाता है, लेकिन बरेली मे निर्मित पतंग एवं मांझा अपनी गुणवत्ता तथा बनावट के कारण पूरे देश में लोकप्रिय है। रुहेलखण्ड में पतंग एवं मांझा बनाने की कला को मात्र व्यवसाय के ही रूप में नहीं अपनाया गया वरन् इसके द्वारा लोकभावनाओं को भी जागृत करने का प्रयास किया गया, जिसके फलस्वरूप यह कला इस क्षेत्र में एक लोककला के रूप में विकसित हुई।

पतंग बनाने की पद्धति :

पतंग बनाने में प्रयुक्त आवश्यक सामग्री में रंगीन पतंगी कागज, बाँस की खपच्ची, धागा तथा मोम सम्मिलित हैं। पतंग बनाने के लिए सबसे पहले रंगीन पतंगी कागज के छोटे–बडे आकार में चौकोर टुकड़े काट लिए जाते हैं। अब इन कागज के टुकड़ों पर मोम की सहायता से घुटाई की जाती है ताकि कागज में मजबूती आ जाए। इसके उपरान्त बाँस की दो बारीक खपच्चियों की सहायता से पतंग में खिंचाव पैदा किया जाता है। इन खपच्चियों को लेई की सहायता से कागज पर इस तरह चिपकाया जाता है कि यह दोनों एक दूसरे को क्रास करें। अब पतंग के चारों किनारों पर बारीक धागा खींचकर बाँधा जाता है और फिर चारों किनारों के कागज को लेई की मदद से पलटकर इस प्रकार चिपका दिया जाता है कि धागा इसके भीतर आ जाए। इससे पतंग के किनारे मजबूत हो जाते हैं। अन्त में पतंग के नीचे वाले कोने पर त्रिभुजाकार पूँछ लगाई जाती है, जो कि पतंग को नियन्त्रित करने के साथ–साथ उसे सुन्दरता भी प्रदान करती है। इस प्रकार पतंग निर्माण पूर्णता को प्राप्त होता है। पतंगे एकरंगीय तथा बहुरंगीय, दोनों ही प्रकार की बनाई जाती हैं। जहाँ तक पतंगों की आकृति का प्रश्न है बरेली में चौकोर पतंगों के अतिरिक्त मानवाकृति, पशु–आकृति, तारा आकृति आदि में भी पतंगें बनाई जाती हैं। बरेली की पतंगों की एक अन्य विशेषता यह है कि यहाँ की पतंगे अत्यन्त हल्की एवं संतुलित होती हैं।

मांझा बनाने की विधि :

माँझा बनाने के लिए बारीक सूती धागा, सीसा, विभिन्न रंग तथा विशेष प्रकार का चिपचिपा पदार्थ आदि कच्ची सामग्री के रूप में प्रयुक्त होते हैं। सर्वप्रथम अत्यन्त बारीक पिसे हुए सीसे, रंग

(रुचि के अनुसार कोई भी रंग) तथा विशेष प्रकार के चिपचिपे पदार्थ को एक साथ अच्छी तरह से मिलाकर लेप तैयार कर लिया जाता है। इसी क्रम में आमने–सामने स्थित लकड़ी की बल्लियों पर सूती धागे को एक सिरे से दूसरे सिरे की ओर अनेक बार खींचकर बाँधा जाता है। अगले चरण में तैयार लेप को कपड़े की सहायता से सूती धागों पर भलीभाँति लगाया जाता है। लेप सूख जाने के उपरान्त माँझा तैयार हो जाता है। अब इस माँझे को लकड़ी की चरखियों में लपेटकर बिक्री हेतु भेज दिया जाता है। बरेली में निर्मित माँझे की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ का माँझा अत्यन्त बारीक तथा तीखी धार से युक्त होता है। लेकिन धारयुक्त होने के बावजूद यह माँझा पतंग उड़ाने वाले व्यक्ति के हाथों को हानि नहीं पहुँचाता।

(vi) टोपियाँ (रामपुर) :

रुहेलखण्ड क्षेत्र का रामपुर जिला टोपी–निर्माण की कला के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। यहाँ लगभग 100 व्यक्ति टोपी बनाने की कला में रत हैं। यहाँ निर्मित टोपियों की विशेषता है – इनका हल्कापन तथा साफ – सुथरी बनावट। यह टोपियाँ न केवल रामपुर वरन् देश के अन्य हिस्सों में भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। दूसरे प्रान्तों के व्यापारी स्वयं आकर यहाँ से टोपियाँ ले जाते हैं और फिर उन्हें अपने प्रान्तों के बाजारों में बेचते हैं।

टोपी को बनाने में निम्नलिखित सामग्री प्रयुक्त होती है–

(अ) गत्ता

(आ) कागज

(इ) प्लास्टिक

(ई) बैलवेट या कृत्रिम फर

कारीगर बैलवेट तथा कृत्रिम फर को मशीन पर सिलकर गोलाकर (आगे तथा पीछे की ओर नुकीली) टोपियों को तैयार करते हैं। टोपी के गोलाकार किनारों को मजबूती प्रदान करने के लिए कारीगर प्लास्टिक तथा गत्ते का प्रयोग करते हैं। यह टोपियाँ अनेक रंगों के बैलवेट तथा फर से बनाई जाती हैं। चूँकि यह टोपियाँ मुख्यतः मुस्लिम लोगों के लिए बनाई जाती हैं, अतः आकृति तथा बनावट के आधार पर टोपियों को दिए जाने वाले नाम भी मुस्लिम पृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

इनमे से कुछ टोपियों के नाम इस प्रकार हैं–

(अ) रज़ा टोपी

(आ) हामिद कैप

(इ) सरहदी कैप

(ई) ईराकी कैप

(उ) कश्मीरी टोपी

(vii) बाँसुरी निर्माण (पीलीभीत) :

भावाभिव्यक्ति के लिए मनुष्य ने विभिन्न प्रकार की कलाओं को जन्म दिया। इन्हीं कलाओ मे एक थी– संगीत कला। संगीत में हुए विकास के साथ अनेक वाद्ययन्त्रों का आविष्कार हुआ जिनमें बाँसुरी का एक विशिष्ट स्थान था। बाँसुरी एक ऐसा वाद्य है, जिसको बजाने तथा बनाने दोनों में ही कला की भूमिका है। रुहेलखण्ड क्षेत्र के पीलीभीत नगर में बाँसुरी बनाने की कला को उसके पूर्ण यौवन में देखा जा सकता है। यहाँ की बनी बाँसुरियाँ भारतवर्ष के लगभग समस्त हिस्सों में बिक्री के लिए भेजी जाती है। पीलीभीत नगर के लगभग 2000 लोग बाँसुरी बनाने की कला से जुड़े हुए हैं। बाँसुरी को बनाने में बाँस, तुर अरहर की लकड़ी तथा रंग आदि प्रयुक्त होते है। कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त बाँस का आयात मुख्यतः आसाम राज्य से किया जाता है।

बाँसुरी को बनाने के लिए कारीगर सबसे पहले बाँस के टुकड़े के भीतरी तथा ऊपरी भाग की सफाई करते हैं। इसके बाद बाँस के एक सिरे को ठीक उसी प्रकार काटा जाता है, जिस प्रकार कलम का सिरा छीला जाता है। बाँस के आड़े छिले हुए सिरे को और तुर अरहर की लकड़ी से निर्मित एक आड़ा कटा हुआ विशेष प्रकार का टुकड़ा इस प्रकार से लगाया जाता है कि इसके तथा बाँस के मध्य में एक पतली सी दरार बनी रहें। अगले चरण में बाँस में अनेक गोलाकार छिद्र बनाए जाते हैं, जिनकी सहायता से सुरों को नियन्त्रित किया जाता है। अन्त मे बॉस पर चमकीला रंग लगाकर बाँसुरी को पूर्णता प्रदान करी जाती है। पीलीभीत में निर्मित बॉसुरियाँ काले तथा पीले रंगों में होती है। यह बाँसुरियाँ सुरीला स्वर तो उत्पन्न करती ही है साथ ही साथ यह देखने में भी अत्यन्त मनोहर होती हैं।

(viii) लकड़ी से निर्मित बच्चों की गाड़ियाँ (बजीरगंज) :

बदायूँ जिले के बजीरगंज नामक स्थान पर बच्चों के खेलने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की गाड़ियाँ बनाई जाती हैं। इन गाड़ियों को बनाने में आम की लकड़ी, रंग तथा कीलें इत्यादि आवश्यक सामग्री के रूप में प्रयुक्त होती हैं। इन गाड़ियों को बनाने का तरीका सरल तथा सीधा सा है। सबसे पहले लकड़ी की सहायता से लम्बी छड़ें, छोटे–छोटे पहिए तथा क्रास की आकृति वाले चक्र बना लिए जाते हैं। अब इन समस्त टुकड़ों पर रुचि के अनुसार रंग लगा दिए जाते हैं। अगले चरण में लकड़ी की छड़ के निचले सिरे की ओर कील की सहायता से पहिया और क्रांस की आकृति वाला चक्र लगा दिया जाता है। यह समस्त चीजें इस प्रकार व्यवस्थित की जाती हैं कि जब बच्चा इस गाड़ी को जमीन पर रखकर भागता है, तब पहिए को घूमने के साथ–साथ चक्र भी घूमता है।

यद्यपि बजीरगंज में निर्मित बच्चों की गाड़ियों का व्यवसाय अत्यन्त उन्नत अवस्था में नही है फिर भी कारीगर लोग विभिन्न मेलों के अवसर पर इन्हें बेचकर अपनी जीविका आसानी से कमा लेते हैं।

(ix) हुक्के का पाइप (भोजपुर पीपल थान – जिला मुरादाबाद) :

मुरादाबाद जिले में स्थित भोजपुर पीपल साना नामक स्थान हुक्के के सुन्दर पाइप को बनाने की कला के कारण आस–पास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध है। यहाँ पर बने हुए हुक्के के पाइप देश के कुछ बड़े शहरों में भी भेजे जाते हैं। यह पाइप अपनी सुन्दर बनावट के कारण किसी का भी मन अपनी ओर मोह लेने की क्षमता रखते हैं।

हुक्के के पाइपों को बनाने में निम्नलिखित सामग्री प्रयुक्त होती है –

(अ) बेंत

(आ) कपड़ा

(इ) ताँबे का तार

(ई) चमकीली पन्नी

(उ) सूती धागा

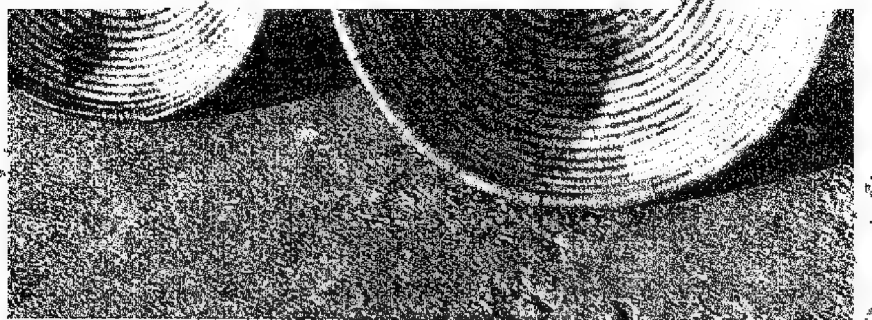
कच्चे माल के रूप मे प्रयुक्त बेत की आपूर्ति आसाम प्रान्त से की जाती है हुक्के के पाइप को बनाने की प्रक्रिया के अग्रलिखित चरण हैं

सर्वप्रथम बेंत की दो खोखली छड़ें काटी जाती हैं। इनमें से एक छड़ का आकार दूसरी छड की तुलना में 1/4 होता है। तदुपरान्त बड़ी छड़ पर रंगीन कपड़ा लपेटा जाता है। कपड़े से युक्त इस छड़ पर थोड़ी–थोड़ी दूरी पर चमकदार सुनहरी पन्नी के टुकड़े लगाए जाते हैं। अब इस छड के ऊपर ताँबे का बारीक तार घुमावदार आकृति में लपेटा जाता है। यह तार छड़ पर लिपटे कपड़े और पन्नी को स्थायित्व तो प्रदान करता ही है, साथ ही छड़ की सुन्दरता को भी बढ़ाता है। दूसरे चरण में छोटी वाली छड़ पर भी उपर्युक्त उल्लिखित विधि से कपड़ा और तार लपेटा जाता है। तीसरे चरण में इन दोनों छड़ों को कपड़े की एक विशेष प्रकार की गाँठ द्वारा एक तीसरी छड़ से जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार हुक्के का पाइप अपना पूर्ण आकार प्राप्त कराता है।

भोजपुर पीपल साना में निर्मित हुक्के के इन पाइपों की कीमत 10 रुपये से लेकर 30 रुपये तक होती है।

(x) जरी का काम (बरेली) :

आकर्षक वस्त्र धारण करना मनुष्य की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। आकर्षक वस्त्रों में जरी की कढ़ाई से युक्त परिधान विशेष स्थान रखते हैं। बरेली जिला जरी की कढ़ाई के लिए न केवल सम्पूर्ण देश में वरन् दूसरे देशों में भी लोकप्रिय है। बरेली में जरी की कढ़ाई मुख्यतः दुपट्टों, चुन्नियों तथा साड़ियों पर की जाती है। सर्वप्रथम कारीगर कपड़े पर स्टन्सिल की सहायता से डिजायन छाप लेते हैं। इसके बाद कपड़े को लकड़ी से निर्मित एक चौकोर अड्डे (फ्रेम) पर खींचकर तान दिया जाता हे। अगले चरण में कारीगर एक नुकीली सुई मे धागा डालकर डिजायन के ऊपर कढ़ाई करते हैं। प्रायः एक डिजायन में कई रंगों के धागो का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए कारीगर को एक ही डिजायन पर अलग–अलग रंग के धागों से अनेक बार कढ़ाई करनी पड़ती है। कढ़ाई के लिए प्रयुक्त धागों में रेशम के धागे प्रमुख होते हैं।



डलियां

विभिन्न डिजाइनों की डलियां

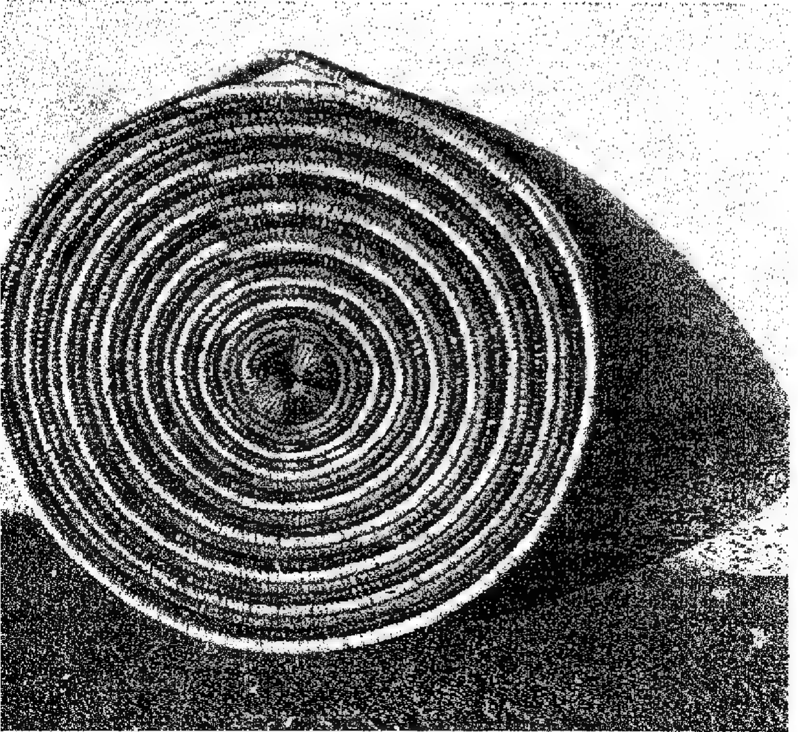


हस्तकला का नमूना – मिट्टी के पात्र

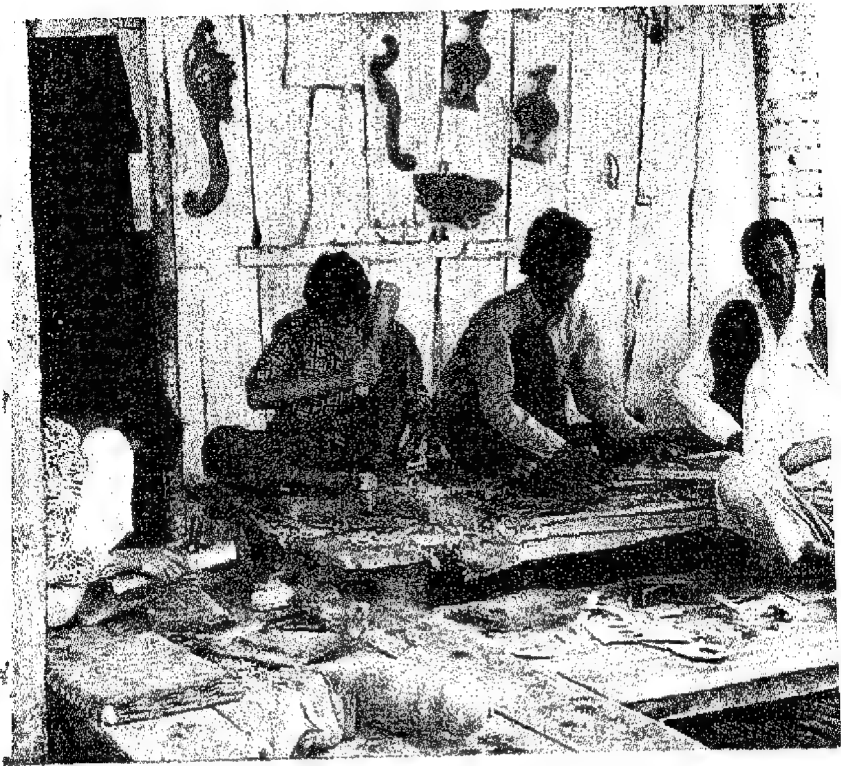
सूप बनाते कारीगर



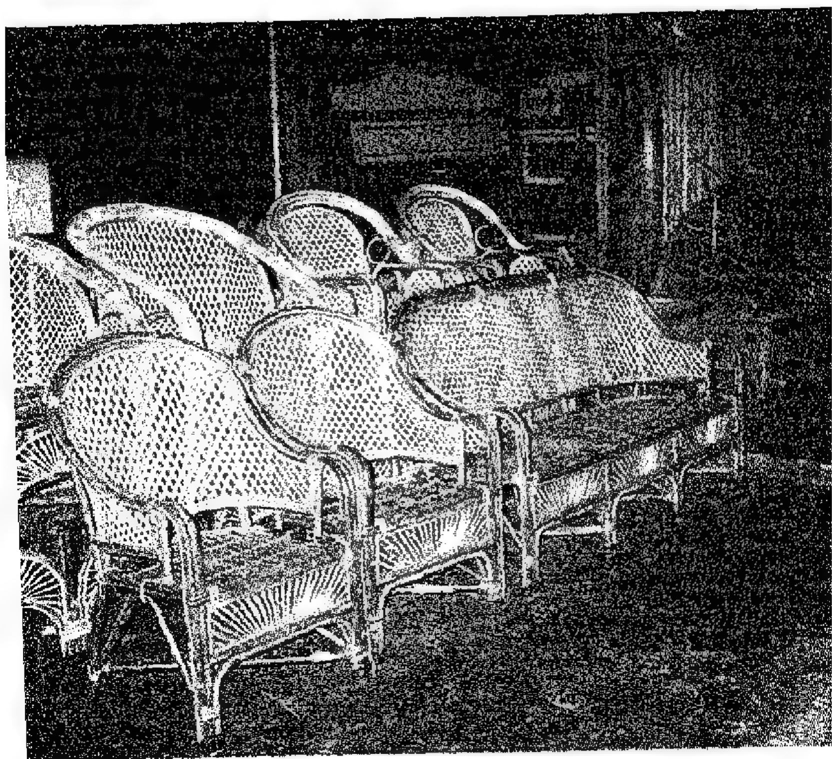
हस्तनिर्मित सूप



ग्रामीणों द्वारा बनाया चटौना



लकड़ी का नक्काशीदार फर्नीचर बनाते कारीगर (बरेली)

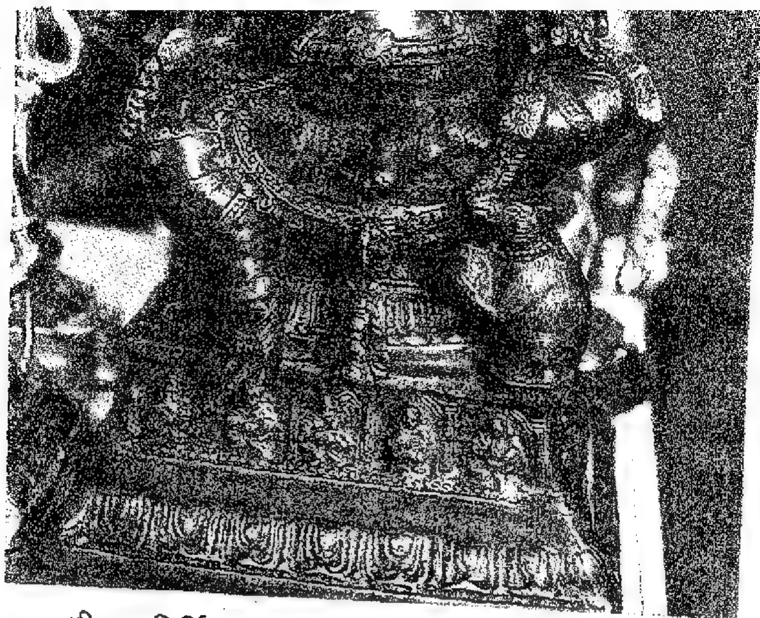


बेंत से निर्मित सुन्दर फर्नीचर (बरेली)



बेंत से निर्मित सामान की एक दुकान (बरेली)

निर्मित कृष्ण भगवान की सुन्दर प्रतिमाएं (मुरादाबाद)

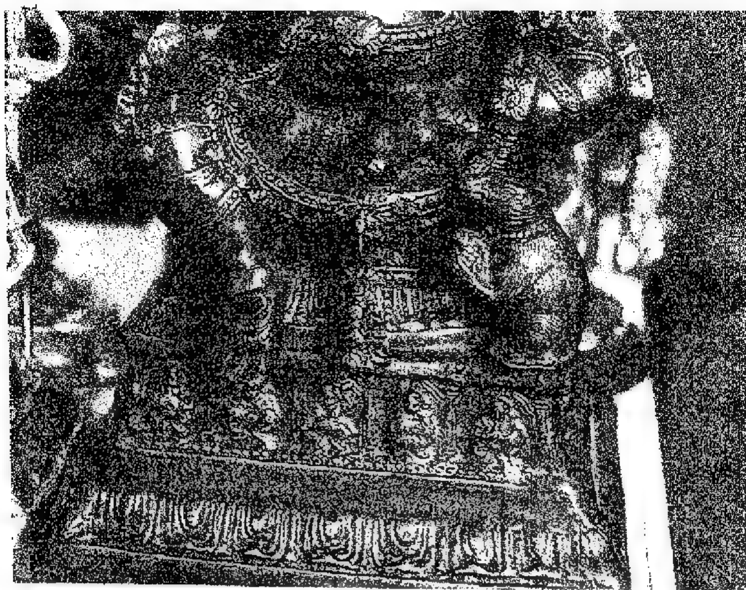


पीतल निर्मित गणेश की सुन्दर प्रतिमा (मुरादाबाद)

पीतल के सुन्दर "शो–पीस" बनाता कारीगर (मुरादाबाद)

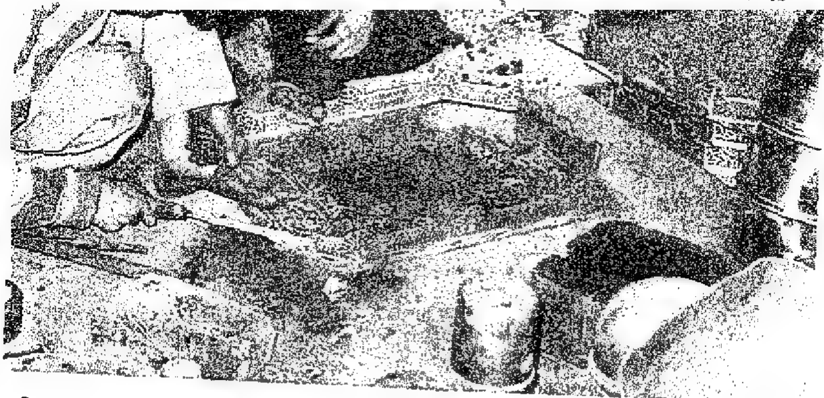


पीतल की सुन्दर "ट्रे" बनाते कारीगर (मुरादाबाद)



पीतल निर्मित गणेश की सुन्दर प्रतिमा (मुरादाबाद)

पीतल के सुन्दर "शो-पीस" बनाता कारीगर (मुरादाबाद)

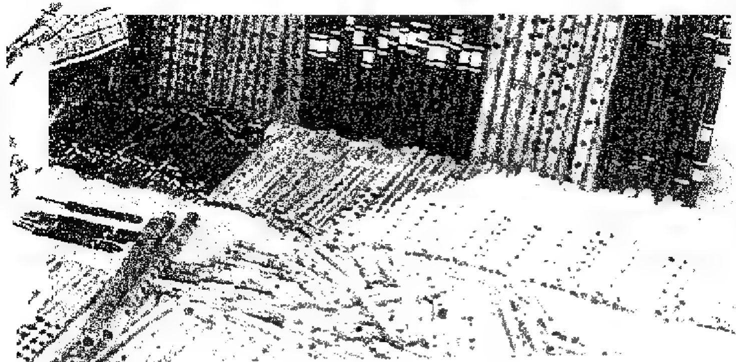


पीतल की सुन्दर "ट्रे" बनाते कारीगर (मुरादाबाद)



मांझा बनाते हुए कारीगर (बरेली)

ामपुर में निर्मित टोपियाँ (जो एशिया भर में प्रसिद्ध हैं। (रामपुर)



बासुरी बेचता एक कारीगर (पीलीभीत)



ड़ियाँ बनाता एक कारीगर (बदायूँ–बजीरगंज)

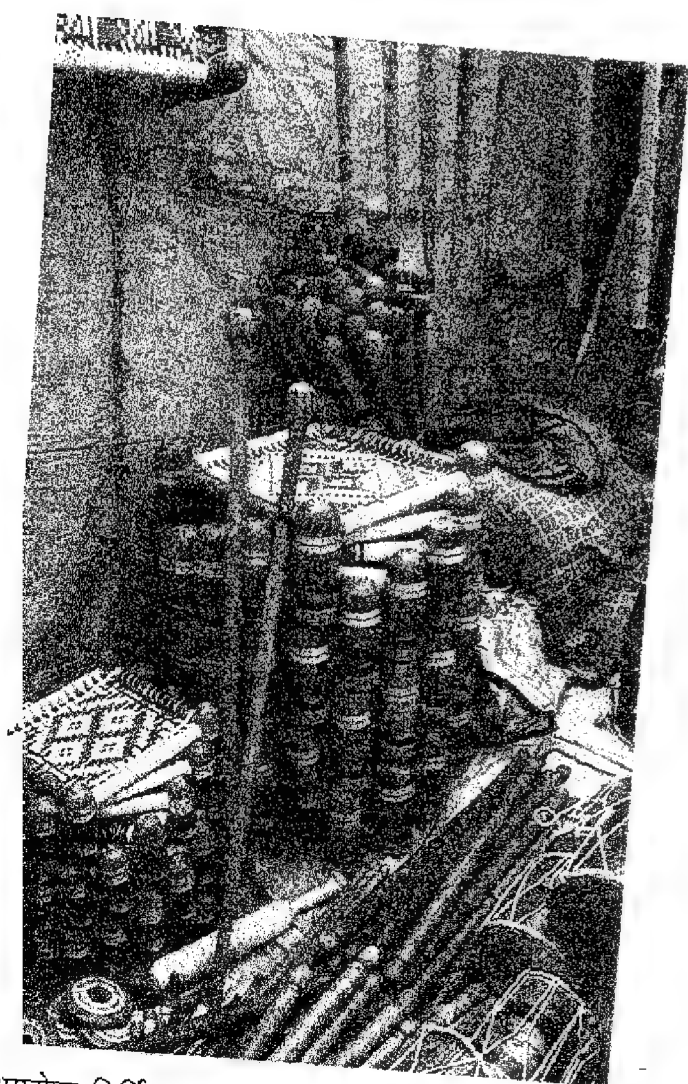


हुक्के का पाइप तैयार करता एक बच्चा (मुरादाबाद—भोजपुर)

ज़री का काम करते कारीगर (बरेली)



ढोलक बेचता एक दुकानदार (अमरोहा)



अमरोहा निर्मित लकड़ी का सामान (अमरोहा)



पशु सींग एवं हड्डियों की वस्तुयें बनाते कारीगर (सम्भल)

चूँकि जरी का यह कार्य अत्यन्त बारीक काम है, इसलिए इस कला में प्रायः युवा कारीगर ही संनग्न देखे जाते हैं। बरेली के अतिरिक्त जरी की कढ़ाई का काम ऑवला (बरेली जिले की तहसील) तथा रामपुर में भी देखा जा सकता है।

(xi) लकड़ी की वस्तुएं (अमरोहा, जिला – मुरादाबाद) :

मुरादाबाद जिले में स्थित अमरोहा नामक स्थान लकड़ी से बनाई जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के कारण प्रसिद्धी के चरम शिखर पर है। यहाँ पर बनाई जाने वाली लकड़ी की वस्तुओ में निम्नलिखित अत्यन्त लोकप्रिय हैं –

(अ) ढोलक
(आ) छड़ी
(इ) चकला–बेलन
(ई) बैठने में प्रयुक्त पिढ़ियाँ

यद्यपि उपरोक्त वस्तुएं देश के अन्य हिस्सों में भी बनाई जाती हैं, परन्तु अमरोहा में निर्मित लकड़ी की वस्तुओं की सर्वोपरि विशेषता है– उनकी नक्काशी (छड़ी के संदर्भ में) अमरोहा मे निर्मित लकड़ी की वस्तुओं में ढोलक की प्रसिद्धी दूर–दूर तक है। यहाँ बनाई जाने वाली ढोलको की देश के अनेक हिस्सों में माँग है। अमरोहा में निर्मित लकड़ी की वस्तुएं सुन्दरता तथा मजबूती दोनों ही में अग्रणी हैं। नगर के सैकड़ों व्यक्ति इस कला से जुड़े हुए हैं तथा अपना जीविकोपार्जन कर रहे हैं।

(xii) सींग की वस्तुएं (सम्भल, जिला – मुरादाबाद) :

मुरादाबाद जिले में स्थित सम्भल तहसील सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न स्थान है। जहाँ एक ओर यहाँ का विशेष धार्मिक महत्व है, वहीं दूसरी ओर हस्त–निर्मित वस्तुओं के कारण सम्भल की एक अलग पहचान है। यहाँ निर्मित सींग की वस्तुएं देश के लगभग समस्त हिस्सो में तो भेजी ही जाती है, साथ ही यह वस्तुएं दूसरे देशों को भी निर्यात की जाती है। इन देशा में अमेरिका तथा जापान प्रमुख हैं। यह वस्तुएं सम्भल के मोहल्ला सराय तरीन में व्यापक रूप में बनाई जाती हैं। यद्यपि इस कार्य में पुरुषों की प्रधानता है लेकिन स्त्रियों ने भी इस कार्य मे

अपनी भागीदारी को बखूबी समझा है। वह घर में रहकर ही कार्य करती हैं।

कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त पशु सींग मृत पशुओं से प्राप्त होता है। कारीगर लोग सींग को विभिन्न प्रकार की सजावटी वस्तुओं में परिवर्तित करते हैं। कुछ वस्तुएं उपयोगिता के आधार पर भी बनाई जाती हैं। इनमें कंघी, सिगरेट–केस, चूड़ी रखने के डिब्बे, श्रृंगार दानी, पर्स इत्यादि प्रमुख हैं। सुन्दरता बढ़ाने के लिए इन वस्तुओं पर सीप, मोती, लकड़ी तथा हड्डियों की मदद से नक्काशी की जाती है।

(xiii) हड्डी की वस्तुएं (सम्भल) :

सम्भल नगर यहाँ निर्मित पशु की हड्डियों से निर्मित वस्तुओं के कारण भी प्रसिद्ध है। यह हड्डिया मृत पशुओं से प्राप्त की जाती है। सम्भल का सराय तरीन मोहल्ला हड्डियों द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुओं का केन्द्र हैं। यहाँ निर्मित कलाकृतियों में आवश्यकता तथा सजावट की विभिन्न वस्तुएं सम्मिलित होती हैं। लेकिन स्त्रियों की रूप सज्जा के लिए प्रयुक्त हाथ का कंगन हड्डियों द्वारा बनाई जाने वाली कलाकृतियों में प्रमुख हैं। सम्भल में निर्मित हड्डी की वस्तुएं अपनी लोकप्रियता के कारण देश–विदेश में बिक्री के लिए भेजी जाती हैं।

●

प्रमुख धार्मिक स्थल और उनसे जुड़ी लोक मान्यताएँ

मानव सभ्यता के विकास के आरम्भिक चरण में विभिन्न धार्मिक परम्पराओं और रीतियों का जन्म हुआ। आरम्भिक मनुष्य के लिए, जो कि प्रकृति की समस्त शक्तियों के समक्ष असहाय सा था, तरह–तरह की अलौकिक और दिव्य शक्तियों की परिकल्पना करना एक सहज सी बात थी। इन अलौकिक और दिव्य शक्तियों ने उस समय के मनुष्य का सदेव मनोवैज्ञानिक दृढ़ता प्रदान की। सभ्यता के विकास क्रम में जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह मनुष्य की धार्मिक परम्पराओं में भी नवीन परिवर्तनों ने जन्म लिया। देवताओं या दिव्य पुरूषो की पूजा के लिये बनाये जाने वाले धार्मिक स्थल इन्हीं परिवर्तनों के परिणाम थे। प्रत्येक धार्मिक स्थल के साथ कोई न कोई लोक मान्यता अवश्य ही सम्बद्ध थी, जो मनुष्य की श्रद्धा के फलस्वरूप जन्मी थी।

वर्तमान में भारतवर्ष में ऐसे अनेक धार्मिक स्थल हैं जिसका प्राचीन महत्व हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र में ऐसे असंख्य धार्मिक स्थलों के दर्शन होते है जिनका अपना प्राचीन महत्व हैं। इनमें से लगभग प्रत्येक स्थल के साथ कोई न कोई लोक मान्यता अवश्य जुड़ी हुई है। रुहेलखण्ड मे स्थित धार्मिक स्थलों को निम्नलिखित वर्गो में विभक्त किया जा सकता है –

(1) हिन्दू धार्मिक स्थल एवं तीर्थ
(2) मुस्लिम धार्मिक स्थल
(3) जैन धार्मिक स्थल (पार्श्वनाथ तीर्थ–दिगम्बर जैन मन्दिर रामनगर, बरेली)।
(4) प्रमुख सिख धार्मिक स्थल

(1) हिन्दू धार्मिक स्थल एवं तीर्थ

हिन्दू धार्मिक स्थलों के रूप में रुहेलखण्ड में असंख्य मन्दिरो तथा तीर्थो के दर्शन होते हे। जन मानस में इन स्थलों के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा तथा भक्ति है। प्रत्येक स्थल से कोई न कोई

मान्यता सम्बद्ध है तथा प्रत्येक की अपनी मौलिक विशेषताएं है।

इन स्थलों में निम्नलिखित विशेष महत्वपूर्ण हैं –

(i) श्री काली माता जी मन्दिर (मुरादाबाद)
(ii) चौरासी घण्टा मन्दिर (मुरादाबाद)
(iii) श्री झाड़खण्ड शिव मन्दिर (मुरादाबाद)
(iv) श्री मन्दिर बगिया जोकी राम (रामपुर)
(v) कोसी मन्दिर (रामपुर)
(vi) गौरी शंकर मन्दिर (गुलहड़िया – जिला बरेली)
(vii) पुरैना मन्दिर (ऑवला – जिला बरेली)
(viii) सम्भल के विभिन्न मन्दिर तथा तीर्थ (सम्भल, जिला मुरादाबाद)
(ix) शीतला देवी मन्दिर (शाहजहाँपुर)
(x) काली देवी मन्दिर (शाहजहाँपुर)
(xi) अलखनाथ मन्दिर (बरेली)
(xii) धोपेश्वर नाथ मन्दिर (बरेली)
(xiii) बनखण्डी नाथ मन्दिर (बरेली)
(xiv) लक्ष्मीनारायण मन्दिर (बरेली)
(xv) टीबरीनाथ मन्दिर (बरेली)
(xvi) नीलकण्ठ महादेव का मन्दिर (बदायूँ)

(i) श्री काली जी मन्दिर (मुरादाबाद) :

मुरादाबाद शहर के लाल बाग नामक स्थान पर श्री काली माता जी का पुराना मन्दिर स्थित है। लगभग 150 वर्ष पूर्व इस स्थान पर श्री नागा बाबा मिस्री गिरी जी ने पूजा–पाठ के लिए एक मठ का निर्माण करवाया। कालान्तर में नागा बाबा मिस्री गिरी जी की मृत्यु के उपरान्त यह स्थान काली देवी के मन्दिर के रूप में विकसित हुआ। वर्तमान में इस स्थान पर काली माता के दो मन्दिर स्थित हैं जिन्हें क्रमशः छोटी काली तथा बड़ी काली नाम से जाना जाता है। इन मन्दिरों

की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ काली के अन्य मन्दिरों की भाँति पशु–बलि इत्यादि कर्मकाण्डों का प्रचलन नहीं है। यहाँ की पूजा पूर्णतः सात्विक है।

इन दोनों मन्दिरों के निकट प्राचीन समय में हुए 21 महात्माओं की समाधियाँ हैं। लाल बाग स्थित काली के मन्दिरों के बारे में मान्यता है कि भक्तगण यदि पवित्र हृदय से माँ की उपासना करें, तो उन्हें मनवांछित फल प्राप्त होता हैं। इसी मान्यतावश यहाँ विभिन्न पर्वो पर हजारों की संख्या में लोग काली की उपासना के लिए आते हैं।

(ii) चौरासी घण्टा मन्दिर (मुरादाबाद) :

मुरादाबाद नगर में स्थित चौरासी घण्टा मन्दिर (या कामेश्वर नाथ मन्दिर) लगभग 500 वर्ष पुराना है। इस मन्दिर के बारे में यह धारणा है कि किसी समय लोगों ने अपनी इच्छा पूर्ण होने पर यहाँ घण्टे चढ़ाने प्रारम्भ किये। धीरे–धीरे इन घण्टों की संख्या चौरासी लाख तक पहुँच गई। इसी कारण इस मन्दिर का नाम चौरासी (लाख) घण्टा मन्दिर पड़ा। इस मन्दिर में आज भी असंख्य घण्टे टंगे देखे जा सकते हैं। हाँलाकि इनकी संख्या चौरासी लाख नहीं है। चौरासी घण्टा मन्दिर में एक प्राचीन शिवलिंग स्थित है जिसे कामेश्वर नाथ शिवलिंग के नाम से पुकारा जाता हैं। आज भी इस मन्दिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण आते हैं और मनौती पूर्ण हो जाने पर घण्टे चढ़ाते हैं।

(iii) श्री झाड़खण्ड शिव मन्दिर (मुरादाबाद) :

मुरादाबाद में स्थित श्री झाड़खण्ड शिव मन्दिर भी अत्यन्त मन्दिरों में एक है। इस मन्दिर में स्थित शिवलिंग के बारे में लोक धारणा है कि यह शिवलिंग झाड़ियों के बीच से प्रकट हुआ था। इस घटना को एक दिव्य घटना मानकर लोगों ने शिवलिंग को वर्तमान स्थान पर स्थापित किया और इसके ऊपर मन्दिर का निर्माण कराया। तब से आज तक असंख्य लोग प्रतिदिन इस मन्दिर में आकर शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से झाड़खण्ड बाबा प्रसन्न होंगे और उन्हें मनवाँछित फल की प्राप्ति होगी।

(iv) श्री मन्दिर बगिया जोकी राम (रामपुर) :

2016 सम्वत् में निर्मित श्री मन्दिर बगिया जोकी राम का मन्दिर रामपुर नगर में स्थित है।

इस मन्दिर की विशेषता इसमें स्थित प्राचीन शिवलिंग है। शिवरात्रि तथा अन्य अवसरों पर लोग बडी संख्या में हरिद्वार से गंगा जल लाकर इस शिवलिंग पर प्रतिवर्ष चढ़ाते हैं।

मन्दिर बगिया जोकी राम के निकट ही 200 वर्ष पूर्व हुए महापुरुष परशुराम की समाधि है। इस समाधि के प्रति लोगों में प्रगाढ़ आस्था है। श्रद्धालुओं की मान्यता है कि बाबा परशुराम की आत्मा अमर हैं और वह अपने भक्तों की समस्याओं का समाधान करती है।

(v) कोसी मन्दिर (रामपुर) :

रामपुर नगर में रामलीला मैदान के निकट पुराना कोसी मन्दिर है। इस मन्दिर में एक प्राचीन शिवलिंग स्थापित है। लोग यहाँ आकर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने के लिए उपासना करते हैं।

(vi) गौरी शंकर मन्दिर (गुलहड़िया, जिला–बरेली) :

गौरी शंकर मन्दिर रुहेलखण्ड क्षेत्र के प्राचीनतम धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मन्दिर आँवला तहसील (जिला बरेली) के गुलहड़िया नामक ग्राम में स्थित हैं। यद्यपि मन्दिर का भवन अधिक पुराना नहीं है लेकिन इसमें स्थापित पत्थर का शिवलिंग लोग मान्यता के अनुसार कई हजार वर्ष पुराना है। कुछ स्थानीय लोग इस शिवलिंग को द्वापर युगीन बताते हैं। संरचना की दृष्टि से इस शिवलिंग की विशेषता यह है कि इस पर पार्वती का मुख भी उकेरा गया हैं। स्थानीय लोगों के अतिरिक्त रुहेलखण्ड के सभी इलाकों के लोगों की इस मन्दिर और इसमें स्थापित शिवलिंग में दृढ़ आस्था है।

(vii) पुरैना मन्दिर (ऑवला, जिला–बरेली) ।

ऑवला तहसील (जिला बरेली) में प्राचीन धार्मिक स्थल पुरैना मन्दिर है। इस मन्दिर मे स्थित शिवलिंग अत्यन्त प्राचीन है जिस पर पीतल का नक्काशी युक्त सुन्दर कवच चढ़ा हुआ है। शिवरात्रि तथा सावन के सोमवार के अवसरों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण यहाँ एकत्र होते है।

(viii) सम्भल के विभिन्न तीर्थ (जिला–मुरादाबाद) :

मुरादाबाद जिले की तहसील सम्भल यहाँ स्थित असंख्य तीर्थों के कारण दूर–दूर तक

प्रसिद्ध है। इस स्थल की मान्यता एक बड़े तीर्थ स्थल के रूप में स्थापित है। पौराणिक कथाओ में सम्भल के बारे में प्रचुर मात्रा में वर्णन मिलता है। पौराणिक कथाओं में सम्भल में स्थित 68 तीर्थ स्थलों का उल्लेख मिलता है।

यह तीर्थ आज भी किसी न किसी रूप में सम्भल में विद्यमान हैं। इन तीर्थों के नाम इस प्रकार हैं –

क्रमांक	तीर्थ का नाम	पर्व स्नानादि का समय
1.	अवन्तीसार	हस्त नक्षत्र, अष्टमी
2.	अंगारक	प्रत्येक मंगलवार
3.	अत्रिका श्रम	ऋषि पंचमी
4.	आनन्दसर	बुधाष्टमी, भाद्रपदमास चतुर्दशी
5.	कान्ति	भाद्र पद कृष्ण तृतीया
6.	अर्ध्वरेता	अष्टमी,
7.	सूर्यकुण्ड	प्रत्येक रविवार, सप्तमी युक्त रविवार कार्तिक शुक्ल षष्ठी का मेला
8.	हंसतीर्थ चैत्र कृष्ण अष्टमी	चैत्र कृष्ण अष्टमी
9.	कृष्णतीर्थ	एकादशी
10.	सन्निहित	वनयात्रा में स्वेच्छा से नियमपूर्वक
11.	कुरुक्षेत्र	प्रत्येक संक्रान्ति, सूर्यग्रहण
12.	पादोदक	कार्तिक मास, कार्तिक कृष्ण द्वादशी
13.	श्वेत द्वीप	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
14.	तार्क्ष्यकिश्व	गणेश चौथ
15.	चन्द्रेश्वर	चन्द्र ग्रहण
16.	लोलार्क	भाद्रपद शुक्लषष्टी तथा मार्ग शीर्षक सप्तमी
17.	शंखमाधव	मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी व सप्तमी
18.	दशाश्वमेध	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक

क्रमांक	तीर्थ का नाम	पर्व स्नानादि का समय
19	पिशाचमोचन	श्रावण शुक्ल चतुर्दशी
20	नैमि साख्य	हर बृहस्पतिवार, कार्तिकशुक्ल चर्तुदशी
21	विजयतीर्थ	विजय दशमी दशहरा
22	धर्म हद	मंगलवार चतुर्थी
23	चतुस्सागर	वन यात्रा में स्वेच्छानुसार
24	यमतीर्थ	कार्तिक शुक्ल द्वितीय (यमद्वितीया)
25	मणि कर्णिका	सोवती अमावस्या, एकादशी चन्द्र ग्रहण तथा पूर्णमासी
26	माहिष्मति नही	बुद्धवार युक्त नवमी
27	ऋण मोचन युक्त अमावस्या	बृहस्पतिवार अष्टमी पुण्य व्यतीतपातयोग
28.	पापमोचन	मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी, रविवार युक्त अष्टमी
29.	कालोदक	दीपावली के दिन
30.	सोमतीर्थ	प्रत्येक सोमवार–सोमवती अमावस्या
31.	गोतीर्थ	गोवर्धन, कार्तिक शुक्ल अष्टमी
32.	सुदर्शन तीर्थ	वन यात्रा में स्वेच्छानुसार
33.	रत्न प्रयाग	माघ मास तथा सप्तमी में
34.	वासुकि प्रयाग	नाग पंचमी
35.	क्षेमक प्रयाग	कृष्ण जन्माष्टमी
36.	गन्धर्व प्रयाग	वन यात्रा में स्वेच्छानुसार
37.	तारक प्रयाग	वन यात्रा में स्वेच्छानुसार
38.	मृत्युतीर्थ (मृत्युंजय)	कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (दीपावली के दूसरे दिन) चैत्र कृष्ण अमावस्या, मंगलवार युक्त अमावस्या
39.	ज्येष्ठ पुष्कर	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तथा कार्तिक मास की अष्टमी
40.	मध्य पुष्कर	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तथा कार्तिक मास की अष्टमी
41.	कन्ष्ठि पुष्कर	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तथा कार्तिक मास की अष्टमी
42.	वृहमवर्त	वैशाख शुक्ल तृतीया

43.	नर्मदा तीर्थ	बृहस्पति की सिंह की संक्रान्ति, सूर्य की सिंह की संक्रान्ति
44.	नन्दा	कार्तिक मास प्रत्येक सोमवार तथा प्रत्येक रविवार
45.	सुनन्दा	कार्तिक मास प्रत्येक सोमवार तथा प्रत्येक रविवार
46.	सुमना	कार्तिक मास प्रत्येक सोमवार तथा प्रत्येक रविवार
47.	सुशीला	कार्तिक मास प्रत्येक सोमवार तथा प्रत्येक रविवार
48.	सुरभि	कार्तिक मास प्रत्येक सोमवार तथा प्रत्येक रविवार
49.	विमलातीर्थ	कार्तिक पूर्णिमा चन्द्र ग्रहण प्रत्येक संक्रान्ति
50.	गोमती तीर्थ	संक्रान्ति
51.	गोदावरी सर तीर्थ	भाद्र पद शुक्ल द्वादशी
52.	भारती तीर्थ	श्रवण मास की चतुर्दशी
53.	रेवा कुण्ड	शुक्रवार पंचमी तथा वैशाख मास की तृतीय तथा चतुर्थी
54.	गोपाल तीर्थ, वंशगोपाल	मार्गशीर्ष की पंचमी
55.	मत्स्योदारी	कार्तिक शुक्ल नवमी
56.	देवखात	प्रत्येक पूर्णिमा
57.	विष्णुखात	वनयात्रा में स्वेच्छापूर्वक
58.	भागीरथ	प्रत्येक अष्टमी
59.	त्रिसंध्यतीर्थ	मेष की सूर्य संक्रान्ति
60.	मलहानि	दुर्गाष्टमी, मांडशीर्ष, शुक्ल चतुर्दशी
61.	शर द्वीप तीर्थ	प्रत्येक शुक्ल की तृतीया
62.	चक्रतीर्थ	प्रत्येक एकादशी
63.	रत्न युग्म तीर्थ	आश्विन कृष्ण नवमी
64.	पुष्प दन्त	पुष्य नक्षत्र युक्त नवमी
65.	कर्म मोचन	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
66.	गुप्त संज्ञक	प्रत्येक द्वादशी
67.	गया तीर्थ	सम्पूर्ण श्राद्धपक्ष तथा अमावस्य पितषि सर्जनी प्रत्येक द्वादशी
68.	मोक्ष तीर्थ	प्रत्येक पूर्णमासी

सम्भल स्थित उपरोक्त सभी तीर्थों के साथ कोई न कोई लोक मान्यता या लोकश्रुति अवश्य ही सम्बद्ध है। समस्त तीर्थों के साथ प्रायः एक सामान्य लोक श्रुति यह जुड़ी है कि इनमें से कुछ का निर्माण स्वयं किसी देवता ने किया था तथा कुछ तीर्थों का निर्माण अतीत में हुए किन्हीं दिव्य पुरुषों द्वारा करवाया गया था। एक लोक श्रुति के अनुसार इन सभी तीर्थ स्थलों का निर्माण स्वय विष्णु ने एक ही रात में किया था।

प्राचीन काल से यह माना गया कि मोक्ष प्राप्ति के लिए गया के पश्चात् सम्भल का ही प्रमुख स्थान था। सम्भल के समस्त तीर्थों के बारे में एक लोक धारणा यह है कि दीपावली पर्व के दो दिन उपरान्त सम्भल के इन तीर्थ स्थलों की परिक्रमा करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है।

(viii) शीतला देवी मन्दिर (शाहजहाँपुर) –

शाहजहाँपुर नगर में स्थित छोटा चौक नामक स्थान पर अनेक छोटे बड़े मन्दिर स्थित है। इनमें शीतला देवी मन्दिर का विशेष धार्मिक महत्व है। इस प्राचीन मन्दिर के बारे में यह विश्वास है कि सच्चे हृदय से माँगी कोई भी मनोकामना पूर्ण होती है।

(x) काली देवी मन्दिर (शाहजहाँपुर) –

काली देवी मन्दिर शाहजहाँपुर नगर के निकट स्थित खन्नौत नदी के तट पर स्थित हे। मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। यहाँ नवरात्र तथा रामनवमी के अवसर पर असंख्य श्रद्धालु एकत्र होते है और देवी की उपासना करते हैं। मन्दिर में स्थित काली देवी की प्राचीन प्रतिमा लोगों की श्रद्धा का केन्द्र हैं।

(xi) अलखनाथ मन्दिर (बरेली) –

बरेली स्थित अलखनाथ का मन्दिर यहाँ के प्राचीनतम मन्दिरों में से एक है। यहा अतिप्राचीन शिवलिंग स्थित है। यह मन्दिर शैव सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। शिवरात्रि तथा सावन के प्रत्येक सोमवार को यहां मेलों का आयोजन किया जाता हे। सावन के समस्त सोमवारों को श्रधालु यहां बड़ी मात्रा में गरीबों को भोजन इत्यादि का दान देते है। इस मन्दिर की एक अन्य विशेषता है पानी में तैरता हुआ एक प्रस्तर खण्ड। ऐसी मान्यता है कि यह प्रस्तर खण्ड रामायण युगीन उन प्रस्तर खण्डों में से एक है जिनकी सहायता से श्री राम

के नेतृत्व में हनुमान इत्यादि ने समुद्र पर पुल का निर्माण किया था।

(xii) धोपेश्वर नाथ मन्दिर (बरेली) –

बरेली नगर में स्थित धोपेश्वर नाथ के शिव मन्दिर के बारे में मान्यता है कि इसका निर्माण ऋषि धूम (तिथि अज्ञात) ने करवाया था। उन्हीं के नाम पर इसका प्राचीन नाम धूमेश्वरनाथ मन्दिर था। कालान्तर में इसे धोपेश्वर नाथ मन्दिर नाम दिया गया। यहाँ पर अवध के नवाब आसफउद्दौला के द्वारा एक विशाल जलाशय का निर्माण करवाया गया, जो आज भी विद्यमान हैं। शिवरात्रि तथा सावन के प्रत्येक सोमवार के अवसर पर असंख्य भक्तगण यहां शिव के दर्शन हेतु आते हैं। मन्दिर का प्रांगण अत्यन्त सुन्दर एवं मनोहारी है।

(xiii) बनखण्डी नाथ मन्दिर (बरेली) –

बनखण्डी नाथ मन्दिर भी बरेली के ऐसे मन्दिरों में है जिसका धार्मिक तथा प्राचीन महत्व है। इस मन्दिर का निर्माण 1857 की क्रान्ति के प्रसिद्ध नेता दीवान शोभाराम ने करवाया था। इस मन्दिर का प्राचीन महत्व इस तथ्य में निहित है कि यहाँ महापिण्ड का निर्माण द्रौपदी ने करवाया था। इस मन्दिर में प्रतिवर्ष शिवरात्रि तथा सावन के सोमवारों के अवसर पर भव्य मेले का आयोजन किया जाता है।

(xiv) लक्ष्मी नारायण मन्दिर (बरेली)

यह मन्दिर बरेली शहर के मध्य में स्थित है। यहाँ देवी लक्ष्मी तथा भगवान विष्णु की सुन्दर प्रतिमाएं स्थापित हैं। मन्दिर की वास्तुकला अनूठी है। इस मन्दिर की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इसका निर्माण चुन्ना मियां नामक एक मुसलमान व्यक्ति ने करवाया था। इस रूप में यह मन्दिर हिन्दू मुस्लिम एकता की एक अद्वितीय मिसाल है।

(viii) टीबरी नाथ मन्दिर (बरेली)

टीबरी नाथ मन्दिर बरेली नगर के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है। इस मन्दिर की स्थापना के विषय में एक लोकोक्ति है। इसके अनुसार – बाबा प्रमोदगिरी के शिष्य ने इस मन्दिर की स्थापना की थी। पहले यहाँ एक पीपल का पेड़ था, जिसकी जड़ से सूत निकलता था। बाबा प्रमोद गिरी ने पीपल की जड़ के पास वह नीम की टहनी गाड़ दी, जिससे उन्होंने दातून किया था। तभी से इस मन्दिर का नाम टीबरीनाथ पड़ा। वर्तमान में इस स्थान का जीर्णोद्वार किया गया है

जिसके फलस्वरूप यह स्थल अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होता है।

(xvi) नीलकण्ठ महादेव का मन्दिर (बदायूं)

बदायूं जिले में स्थित इल्तुतमिश कालीन (1202 - 1209 ई०) इस शिव मन्दिर का निर्माण राजा लखनपाल ने करवाया था। लखनपाल बदायूं नगर के राज अजयपाल के परिवार के सदस्य थे। इस रूप में यह मन्दिर रुहेलखण्ड क्षेत्र के प्राचीनतम मन्दिरों में एक है। इस मन्दिर में प्रतिवर्ष शिवरात्रि का भव्य मेला आयोजित होता है।

(2) मुस्लिम धार्मिक स्थल

रुहेलखण्ड क्षेत्र में ऐसे अनेक मुस्लिम धार्मिक स्थल देखने को मिलते हैं, जिनके प्रति मुस्लिम तथा अन्य सम्प्रदाय के लोगों की समान रूप से गहन आस्था है। इनमें से प्रत्येक स्थल की पृथक विशेषताएँ हैं, जो उस स्थल को अन्य स्थलों से अलग एक स्वतन्त्र पहचान प्रदान करती हैं। इन धार्मिक स्थलों से अग्रलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं–

(i) मजारे आला हजरत (बरेली)
(ii) हज़रत हाफिज सैय्यद शाह जमाल उल्लाह कादरी का मज़ार शरीफ (रामपुर)
(iii) हज़रत शाह दरगाही महबूबे इलाही का मज़ार शरीफ (रामपुर)
(iv) हज़रत अब्दुल्लाह शाह बगदादी का मज़ार शरीफ (रामपुर)
(v) हज़रत शाह बुलाकी साहब की ज़ारत (मुरादाबाद)
(vi) हज़रत सुल्तान आरफीन साहब रहमउल्लाह अलह (बड़े सरकार) की ज़ारत (बदायूँ)
(vii) हज़रत बदरुद्दीन शाह विलायत रहमतउल्लाह अलह (छोटे सरकार) की ज़ारत (बदायूँ)
(viii) ख़ानकाहे आलिया नियाज़िया (बरेली)
(ix) जामा मस्जिद (रामपुर)
(x) शाही जामा मस्ज़िद (पीलीभीत)
(xi) बारा बुजी मस्जिद (ऑवला जिला बरेली)

(i) मज़ारे आला हज़रत (बरेली) –

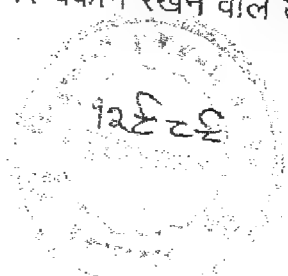
आला हज़रत बरेली नगर में हुए ऐसे व्यक्तित्व का नाम है, जिसने ज्ञान और विद्वता का

प्रकाश चारो ओर बिखेरा। लोकमान्यता के अनुसार आला हज़रत को ज्ञान रूपी दिव्य प्रकाश प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर से प्राप्त हुआ था। आला हज़रत की पैदाइश 14 जून 1856 को बरेली के मुहल्ला जिसौली में हुई थी। बचपन से ही वह कुदरती ज्ञान से युक्त थे। आपने चार वर्ष की आयु होने के साथ ही कुरान मज़ीद नाज़िरा का अध्ययन पूर्ण कर लिया था। तेरह वर्ष की आयु मे आला हज़रत ने अपनी शिक्षा पूर्ण की और दस्तार फ़जीलत से नवाज़े गए। आला हज़रत के बारे में यह कहा जाता है कि अल्लाह ताला ने अपने फज़ल से आपका सीना दुनिया के हर उलूम से भर दिया था। इन्होंने हर विषय पर किताबें लिखीं, जिनकी संख्या हजारों में हैं। आला हज़रत ने अपनी सम्पूर्ण जिंदगी बेवाओं और जरूरत मंदों की सेवा में व्यतीत की। आपके सारे कार्य सिर्फ अल्लाहताला के लिए थे। आपको किसी की तारीफ़ से कोई लेना–देना नहीं था। आपने दो बार (सन् 1878 ई० तथा 1906 में) हज यात्रा की।

अपनी शिक्षाओं और उच्च विचारों के कारण आला हज़रत न केवल भारतवर्ष अपितु दूसरे देशों में भी लोकप्रिय होने लगे। धीरे–धीरे आला हज़रत साहब के शिष्यों और अनुयायियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। आपके शिष्यों में हज़रत मौलाना हसन रज़ा खाँ, हज़रत मौलाना मुहम्मद रज़ा खाँ, मौलाना हामिद रज़ा खाँ, मौलाना सैय्यद अहमद, अशरफ कछौछवी, मौलाना सैय्यद जफरुद्दीन आदि के नाम प्रमुख हैं। अक्टूबर सन् 1921 में आला हज़रत ने इस दुनिया से विदा ली। लेकिन वह दुनिया के लिए ईमान और धर्म का ऐसा सन्देश देकर गए, जो आज तक लोगों के हृदय में प्रकाशवान है। आपने आम आदमी के लिए संदेश दिया था–

"ऐ लोगों तुम प्यारे मुस्तफा की भोली भेड़ें हो। तुम्हारे चारों ओर भेड़िए हैं। वह चाहते हैं कि तुम्हें बहकाएं। तुम्हें फ़ितना में डाल दें। तुम्हें अपने साथ जहन्नुम में ले जाएं। इनसे बचो और दूर भागो। ये भेड़िए तुम्हारे ईमान की ताक में हैं। इनके हमलों से अपने ईमान को बचाओ।"

आला हज़रत में बहुत सी खूबियाँ एक साथ थीं। आप एक ही वक्त में मफ़ुस्सिर, मोहद्दिस, मुफ्ती, कारी, हाफिज़, शायर, मुसन्निफ, अदीब, आलिम, फाजिल, शैखतरीकत और मजुददि शरीयत थे। आला हज़रत में घमण्ड नाम की कोई चीज़ नहीं थी। यह आला हज़रत की बेमिसाल कोशिशों का नतीजा है कि आज सुन्नी आकाएद पर यकीन रखने वाले लोग सिर्फ बरेली



मे नहीं वरन् तमाम दुनियाँ में मौजूद हैं।

आला हज़रत का मज़ार शरीफ बरेली स्थित मोहल्ला सौदागरान की एक विशाल और सुन्दर इमारत में है। यह इमारत भव्य गुम्बदों और नक्काशी के कारण अत्यन्त सुन्दर और मनोहर प्रतीत होती है। अलाहज़रत की मज़ार पर हिन्दू और मुस्लिम समान रूप से इबादत करने आते हैं। लोगो की मान्यता है कि आला हज़रत साहब की आत्मा अमर है और इनकी मज़ार पर शीश नवाने से मुरादें पूर्ण होने के साथ-साथ हृदय में ज्ञान का प्रकाश जागृत होता है।

(ii) हज़रत हाफिज़ सैय्यद शाह जमाल उल्लारह कादरी का मज़ार शरीफ़ (रामपुर) –

हज़रत हाफिज़ सैय्यद शाह जमाल उल्लाह कादरी का जन्म लगभग 300 वर्ष पूर्व पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के गूजरवाला जिला में हुआ था। रामपुर के नवाब फैजुल्ला खाँ इनके मुरीद थे। हज़रत साहब पहले नवाब फैजुल्ला खाँ की सेना में कार्यरत थे। हज़रत साहब स्वभाव से अत्यन्त विनम्र थे। आपके रहने का ढंग सादगी से परिपूर्ण था। हज़रत साहब की दयालु प्रवृति को इस दृष्टान्त से ही समझा जा सकता है कि फौज में काम करने के बदले में प्राप्त वेतन को यह गरीबों में बाँट देते थे। हज़रत हाफिज सैय्यद शाह ने अपने जीवन के दौरान कभी भी हिन्दू और मुसलमानों में भेद नहीं माना। ये हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। इनके बारे में लोक मान्यता है कि इन्हें विशेष ईश्वरीय शक्ति प्राप्त थी। एक लोक मान्यता के अनुसार –

"एक बार हज़रत सैय्यद शाह जमाल साहब कहीं जा रहे थे। कुछ शरारती लोगों ने हज़रत साहब को परेशान करने की योजना बनाई। योजना के अनुसार उन लोगों में से एक व्यक्ति धरती पर मृतक के समान लेट गया। उन लोगों ने मृतक समान लेटे हुए व्यक्ति के निकट बैठकर अल्लाह की इबादत करने हेतु हज़रत साहब से आग्रह किया। हज़रत साहब ने उन लोगों से पूछा कि मैं जिन्दा व्यक्ति के लिए इबादत करूँ अथवा मृत व्यक्ति के लिए? इस पर वह लोग बोले– "हमारा साथी मृत है। आप मृत व्यक्ति के लिए ही अल्लाह की इबादत करें।" यह सुनकर हज़रत साहब ने अल्लाह की इबादत की। इबादत समाप्त होते ही मृतक के समान लेटा हुआ व्यक्ति वास्तव में मृत्यु को प्राप्त हो गया।

हज़रत हाफिज सैय्यद शाह जमाल उल्लाह कादरी के जीवन के सम्बन्धित ऐसी अन्य

कथाएं भी है, जो उनकी दिव्यता को प्रमाणित करती है। हज़रत साहब की मज़ार रामपुर नगर में एक अत्यन्त खूबसूरत इमारत में स्थित है। इस जारत पर इबादत करने हिन्दू और मुस्लिम मज़हबों के लोग समान रूप से आते हैं। लोगों की मान्यता है कि यहाँ माँगी गई हर मन्नत पूरी होती है। यदि सच्चे दिल से हज़रत साहब की ज़ारत पर सिर नवाया जाए, तो हर तकलीफ का अन्त होता है।

(iii) हज़रत शाह दरगाही महबूबे इलाही की मज़ार शरीफ (रामपुर) –

हज़रत शाह दरगाही महबूबे इलाही, हज़रत हाफिज़ सैय्यद शाह जमाल उल्लाह कादरी के शिष्य थे। हज़रत शाह दरगाही महबूके इलाही ने भी लोगों को हिन्दू मुस्लिम एकता का संदेश दिया था। इनकी मज़ार रामपुर नगर में एक खूबसूरत इमारत के भीतर स्थित है। लोगों की मान्यता है कि यहाँ सच्चे दिल से माँगी हर मुराद पूर्ण होती है। लोक मान्यता है कि हज़रत शाह दरगाही महबूबे इलाही की आत्मा अमर है और वह गरीब, आवश्यकतामन्द तथा तकलीफ से ग्रसित लोगों की फरियाद अवश्य सुनते हैं।

(iv) हज़रत अब्दुल्लाह शाह बगदादी का मज़ार शरीफ (रामपुर)

रामपुर नगर में लगभग 200 वर्ष पूर्व हज़रत अब्दुल्लाह शाह बगदादी नामक महापुरुष हुए। यह दिव्य शक्ति से युक्त थे तथा इन्होंने भी सदैव हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल दिया। रामपुर नगर में स्थित इनकी ज़ारत पर बड़ी संख्या में लोग आते हैं। इन लोगों में हिन्दू तथा मुस्लिम, दोनों ही सम्प्रदायों के लोग सम्मिलित होते हैं।

(v) हज़रत शाह बुलाकी साहब की ज़ारत (मुरादाबाद) –

हज़रत शाह बुलाकी साहब का जन्म 1042 हिज़री सम्वत् में स्योहारा (जिला बिजनौर) में हुआ था। हज़रत साहब बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। मदरसे में यह सदैव अपने सहपाठियों से अलग रहा करते थे। इनके सहपाठी इनको दीवाना और पागल कहकर चिढ़ाते थे। मदरसे में जब उनके उस्ताद ने इनसे विस्मिल्लाह शब्द बोलने को को कहा, तब शाह बुलाकी साहब ने विस्मिल्लाह शब्द की व्याख्या अपने तरीके से की। इस पर उस्ताद चकित रह गए और उन्होंने समझ लिया कि यह बालक अत्यन्त असाधारण है तथा भविष्य में यह लोगों में ज्ञान का प्रकाश बिखेरेगा। हज़रत साहब ने मात्र सात वर्ष की आयु में कुरान का अध्ययन पूर्ण कर लिया

था। आपको इस आयु में पूरा कुरान जुबानी याद था।

शाह बुलाकी साहब को अपाहिजों, बेवाओं तथा निर्धनों की सहायता करने में बहुत संतुष्टि मिलती थी। वह अपनी आत्मिक शान्ति के लिए अपाहिज़ों, बेवाओं तथा निर्धनों के घर में सफाई इत्यादि का कार्य किया करते थे। जब साथ के लोगों ने इनका विरोध किया, तब यह मुरादाबाद आकर रहने लगे। उन्होंने मुरादाबाद में एक मस्जिद का निर्माण कराया (मोहल्ला चक्कर का मिलक में)। आज इसी मस्जिद के निकट हज़रत शाह बुलाकी साहब की ज़ारत मौजूद है।

लोगों की मान्यता है कि शाह बुलाकी साहब की जारत पर इबादत करने में समस्त कष्टो से मुक्ति मिलती है। इसीलिए हज़रत शाह बुलाकी साहब की ज़ारत पर सभी धर्मों के लोग बडी सख्या में इबादत करने आते हैं। यहाँ आने वाले लोगों में दूसरे मुल्कों के लोग भी आते हैं।

(vi) हज़रत सुल्तान अरफीन साहब रहम उल्लाह अलह (बड़े सरकार) की जारत (बदायूँ)

हज़रत सुल्तान आरफीन साहब रहम उल्लाह अलह का जन्म सन् 1215 ई० में यमन मे हुआ था। यह अरब के शाही खानदान से संबंधित थे। बचपन से ही इनकी रुचि धार्मिक विषयो मे अधिक थी। उम्र बढ़ने के साथ–साथ धार्मिक क्षेत्र में हज़रत साहब की रुचि बढ़ती गई जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने घर त्याग दिया और फकीर का जीवन व्यतीत करने लगे। बाद मे हज़रत साहब अरब से हिन्दुस्तान रवाना हुए और यहाँ आकर उन्होंने बदायूँ के निकट एक सूनसान स्थान पर रहना प्रारम्भ किया। लोक कहावत के अनुसार फक़ीर होने के उपरान्त हज़रत साहब में विशिष्ट प्रकार की दिव्य शक्ति विकसित हुई। इस दिव्य शक्ति के बल पर हज़रत साहब विभिन्न रोगों से ग्रसित मरीजों का इलाज करने लगे। शनैः शनैः उनके पास आने वाले मरीजो की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि होने लगी। लोकप्रियता के इस क्रम में लोग उन्हें बड़े सरकार के नाम से सम्बोधित करने लगे। बड़े सरकार के बारे में एक लोक मान्यता अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसके अनुसार– "एक बार एक ऐसा मरीज बड़े सरकार के पास आंया, जिसका आधा जिस्म पत्थर का हो गया था। बड़े सरकार ने उस मरीज के शरीर पर दृष्टि डाली। देखते ही देखते उसके शरीर का पत्थर मोम की तरह पिघलकर बह गया और वह मरीज दुरुस्त होकर वापस अपने घर चला गया।" बड़े सरकार का कहना था कि यदि कोई मरीज तीन दिनों में उनके

इलाज से दुरुस्त नहीं होता, तो लोग उन्हें जिन्दा ही कब्र में दफन कर सकते हैं।

वर्तमान में बड़े सरकार (हज़रत सुल्तान आरफीन साहब रहम उल्लाह अलह) की मज़ार बदायूँ में उसी स्थान पर मौजूद है जहाँ वह रहते थे और जहाँ बाद में उन्हें दफन किया गया था। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी लोगों में यह धारणा अत्यन्त प्रबल है कि बड़े सरकार की जारत पर इबादत करने के उपरान्त बड़े से बड़ा असाध्य रोग भी ठीक हो जाता है। यहॉ देश–विदेश से हजारों की संख्या में मरीज आते हैं और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। यहाँ आने वाले मरीजों में दिमागी रोग बहुतायत में होते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्ति भी अपने इलाज के लिए यहाँ आते हैं जिन पर बुरी हवाओं का असर होता है। इस प्रकार के रोगियों का इलाज 40 दिन तक लगातार चलता है। इलाज की प्रक्रिया में मरीज को बड़े सरकार की मजार शरीफ से स्पर्श कराया जाता है। विभिन्न रोगों से ग्रस्त रोगी बड़े सरकार की ज़ारत के प्रागंण में बने स्थाई तथा अस्थाई आवासों में निःशुल्क रहते हैं। पूर्णतया स्वस्थ हो जाने के उपरान्त यह रोगी अपने घरों को वापस चले जाते हैं।

(vii) हज़रत बद्दरुीन शाह विलायत रहमत उल्लाह अलह (छोटे सरकार) की जारत (बदायूँ)–

हज़रत बदरुद्दीन शाह विलायत रहमत उल्लाह अलह बड़े सरकार के छोटे भाई थे। इनको छोटे सरकार के नाम से प्रसिद्धि मिली। यह सुल्तान उल आरफीन के शिष्य थे। छोटे सरकार की रुचि भी बचपन से धार्मिक विषयों में थी। बड़े होकर यह भी अरब छोड़कर अपने भाई की भाँति बदायूँ के निकट एक शान्त क्षेत्र में निवास करने लगे। छोटे सरकार को भी विशिष्ट दिव्य शक्ति प्राप्त हुई। इन दिव्य शक्तियों के बारे में तरह–तरह की मान्यताएं प्रचलित है। एक मान्यता के अनुसार– "एक बार चार व्यक्ति छोटे सरकार के पास आए और अपने गुरु से प्राप्त सोना उनको दिखाया जो कि उन्हें गुरु की सेवा करने के बदले में मिला था। छोटे सरकार ने उस सोने को पास के कुँए में फेंक दिया। इस पर वे चारों व्यक्ति अत्यन्त निराश हुए। इसके बाद छोटे सरकार ने उन चारों व्यक्तियों को आदेश दिया कि वे बाल्टियों में उस कुएं का पानी भरकर लाएं। उन चारों ने ऐसा ही किया। अब छोटे सरकार ने अपनी दिव्य शक्ति का प्रयोग करते हुए चारों बाल्टियों में भरे पानी को सोने में परिवर्तित कर दिया। वे चारों व्यक्ति अत्यन्त

प्रसन्न हुए और अपने घरो को लौट गए

छोटे सरकार की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों ने उनकी मजार शरीफ का निर्माण कराया, जो बदायूँ नगर के समीप स्थित है। एक मान्यता के अनुसार छोटे सरकार की मज़ार पर मुगल बादशाह अकबर भी आया था। अकबर ने यहाँ पुत्र प्राप्ति की मन्नत माँगी थी। अकबर की यह मन्नत पूर्ण हुई और उसके यहाँ सलीम का जन्म हुआ। अकबर ने प्रसन्न होकर 700 बीघा जमीन छोटे सरकार की दरगाह के नाम की थी। आज भी देश विदेश से असंख्य लोग छोटे सरकार की सरकार की दरगाह पर आते है और मनोकामनाएं माँगते हैं। इसके अतिरिक्त छोटे सरकार की दरगाह पर भी विभिन्न रोगों से ग्रसित रोगी अपने इलाज़ के लिए आते हैं। यहाँ मानसिक बीमारियों से ग्रस्त लोगों को विशेष लाभ मिलता है। छोटे सरकार की जारत पर बुरी हवाओं के प्रभाव से ग्रस्त लोग भी अपने इलाज के लिए आते हैं।

(viii) खानकाहे आलिया नियाजिया (बरेली)–

खानकाहे आलिया नियाजिया चिश्तिया सिलसिले की एक अहम शाखा है। इस संस्था के पूर्ववर्ती सरकारों के बारे में यह मान्यता है कि वे सभी महान सूफी ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अजमेरी के रुहानी उत्तराधिकारी थे। बरेली स्थित इस संस्था के संस्थापक कुतुबे आलम मदारे आज़म नियाज़ वेनियाज़ हज़रत शाह नियाज़ अहमद साहब थे। वह लगभग 275 वर्ष पूर्व बुखारा (पाकिस्तान) से अपने परिवार के सदस्यों के साथ बरेली आए थे। उन्होंने बरेली में सूफीवाद की शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार किया। धीरे–धीरे उनकी शिक्षाएं देश–विदेश में फैलने लगी। हज़रत साहब मानवता और साम्प्रदायिक एकता के प्रबल समर्थक थे। वे न केवल धार्मिक विषयों के ज्ञाता थे, बल्कि उच्च कोटि के कवि और विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता भी थे। कुतुबे आलम मदारे आजम नियाज वेनियाज हज़रत शाह नियाज़ अहमद साहब की विद्वता का अनुमान एक दृष्टान्त से लगाया जा सकता है। 12 वर्ष की आयु में शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त जब आपको शिक्षा की उपाधि प्रदान की जाने लगी, जब आपने वह डिग्री लेने से मना कर दिया। हज़रत साहब ने कहा कि जब तक समस्त ज्ञानीं बुजुर्ग मेरी परीक्षा नहीं ले लेते, तब तक मैं डिग्री स्वीकार नहीं करुँगा उनके ऐसा कहने पर विद्वान बुजुर्गों ने उनसे अत्यन्त गूढ़ प्रश्न पूछे। हज़रज शाह नियाज अहमद साहब ने सभी प्रश्नों का उत्तर अत्यन्त सहजता के साथ दिया। बुजुर्गों की सन्तुष्टि के उपरान्त ही आपने डिग्री स्वीकार की।

वर्तमान मे हज़रत शाह नियाज़ अहमद साहब की मज़ार बरेली के माहल्ला ख्वाजा कुतुब में स्थित है। लोगो की मान्यता है कि हजरत शाह नियाज़ अहमद साहब की आत्मा अमर है और उनकी मज़ार पर इबादत करने से समस्त कष्टों से मुक्ति मिलती हैं। आपकी मज़ार के बारे में एक आश्चर्यजनक लोक मान्यता यह है कि यहाँ आकर इबादत करने पर सर्प, बिच्छू तथा अन्य विषैले जानवरों के काटने का असर स्वतः समाप्त हो जाता है। वर्तमान में प्रतिदिन इस तरह के असंख्य लोग आपकी मज़ार पर आते है। जिन्हें सर्प या बिच्छू ने डसा है। आपकी मजार पर न केवल हिन्दुस्तान वरन् संसार के विभिन्न अन्य देशों से लोग आते हैं। और इबादत करते हैं।

मुस्लिम धर्म में सूफीवाद ही एक ऐसी शाखा है जिसमें संगीत को रुहानी शुद्धी के माध्यम के रुप में अपनाया गया है। कुतुबे आलम मदारे आज़म नियाज़ वेनियाज हज़रत शाह नियाज वेनियाज़ हज़रत शाह नियाज अहमद साहब की दरगाह पर प्रतिवर्ष (मार्च और नवम्बर माह मे) सगीत सम्मेलनों का भव्य आयोजन किया जाता है। इन सम्मेलनों में शास्त्रीय संगीत की जानी–मानी हस्तियों शरीक होती है। अब तक लगभग 142 संगीतज्ञ यहाँ आ चुके हैं। इन संगीत सम्मेलनों में हज़ारों श्रोता रुहानी सुकून प्राप्त करते हैं।

(ix) जामा मस्जिद (रामपुर) –

रामपुर नगर में स्थित जामा मस्जिद खुदा की इबादत के लिए एक अत्यन्त पवित्र एव प्रसिद्ध स्थल है। इस मस्जिद का निर्माण 1180 हिज़री संवत् (1176 ई०) में रामपुर के नवाब फैजउल्लाह खाँ ने करवाया था। कालान्तर में नवाब कल्वेअली खाँ ने 1297 हिज़री संवत (1874 ई०) में इस मस्जिद का जीर्णोद्धार करवाया। इसके बाद 1331 हिज़री संवत् (1913 ई०) मे पुनः इस मस्जिद का जीर्णोद्धार करवाया गया, जिसका श्रेय तत्कालीन नवाब हामिद अली खाँ को जाता है।

यह मस्जिद एक ऊँचे धरातल पर अत्यन्त बड़े प्रांगण में स्थित हैं। मस्जिद की मुख्य इमारत के ऊपर तीन विशाल गुम्बद तथा चार मीनारें अवस्थित हैं। तीनों गुम्बदों के ऊपर आलीशान कलश चढ़े हुए हैं। मस्जिद की मुख्य इमारत के द्वार पर एक दो रुखा घण्टा लगा हुआ है जिस लन्दन से मँगवाया गया था।

रामपुर की जामा मस्जिद के प्रति लोगो मे अपार श्रद्धा है. विभिन्न मुस्लिम त्यौहारो के अवसर पर असंख्य लोग यहाँ नमाज अदा करते हैं। स्थानीय लोगों की मान्यता है कि यहाँ आकर सच्चे दिल से इबादत करने पर हर मुराद पूरी होती है।

(x) शाही जामा मस्जिद (पीलीभीत) :

पीलीभीत नगर में स्थित शाही जामा मस्जिद का निर्माण 1767 ई० में नवाबुल मलक हाफिज रहमत खाँ ने करवाया था। तब से आज तक पीलीभीत शहर में इस मस्जिद का विशेष धार्मिक महत्व है। मुस्लिम लोगों में यह विश्वास अत्यन्त दृढ़ है कि यहाँ आकर इबादत करने पर दिल की सारी इच्छाएं पूर्ण होती है। ईद के अवसर पर असंख्य लोग यहाँ नमाज़ अदा करते हैं।

(xi) बारह बुर्जी मस्जिद (आँवला, जिला – बरेली) :

आँवला तहसील में स्थित मध्यकालीन बारह बुर्जी मस्जिद मुसलमानों के लिए एक अहम मजहबी स्थान है। यह मस्जिद अपनी अनूठी वास्तुकला के कारण अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होती है। मस्ज़िद की मुख्य इमारत के ऊपर बने बारह विशाल गुम्बद इस मस्जिद की सुन्दरता में चार चॉद लगाते हैं। इन्हीं गुम्बदों के कारण इस मस्जिद का नाम बारह बुर्जी मस्जिद पड़ा।

मुसलमान लोग बारह बुर्जी मस्जिद में गहरी श्रद्धा रखते हैं। ईद इत्यादि अवसरों पर न केवल स्थानीय वरन् आस पास के क्षेत्रों के मुसलमान भी बड़ी संख्या में आकर इस मस्जिद मे नमाज अदा करते हैं।

(3) जैन धार्मिक स्थल

पार्श्व नाथ अतिशय तीर्थ – दिगम्बर जैन मन्दिर (रामनगर)

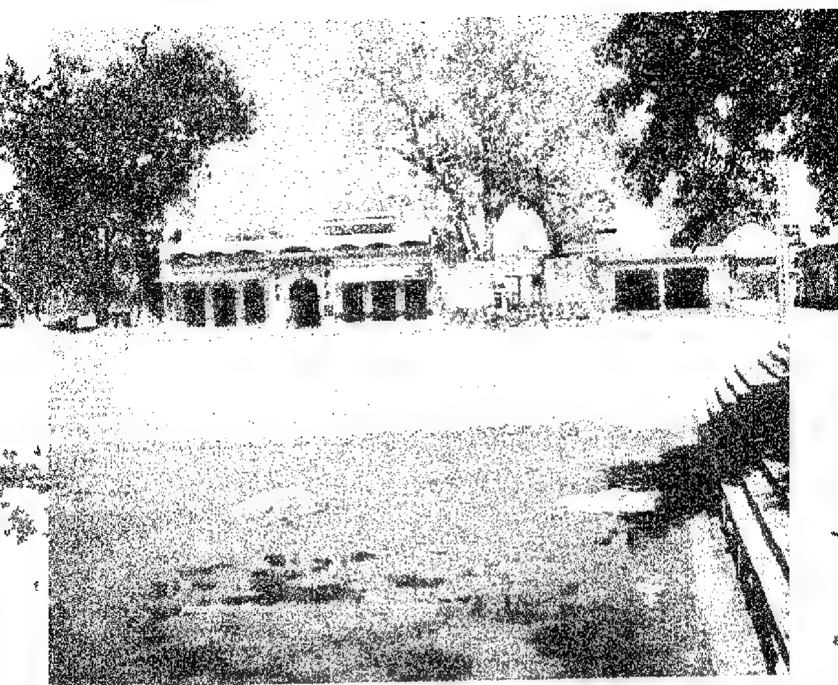
बरेली जिले की आँवला तहसील के निकट स्थित रामनगर नामक स्थान पर भगवान पार्श्वनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसी स्थान पर भगवान पार्श्वनाथ ने अखण्ड तप किया था। इस पुण्य स्थली पर पार्श्वनाथ ने कैवल्य ज्ञान पाकर अरहन्त प्राप्त किया। इस पुण्य स्थली पर प्राचीन काल से ही लाखों भक्तों ने पुण्य लाभ लेकर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण की है। यहाँ अनेक श्रद्धालुओं ने पश्चाताप करके अपने को सुमार्ग पर लगाया है। इस पुण्य स्थली के बारे में एक लोकमान्यता है कि यहाँ के मुख्य मन्दिर में एक विशाल सर्प प्रतिदिन अदृश्य रूप से आता है और भगवान पार्श्वनाथ की प्रदक्षिणा लगाकर बिना किसी को हानि पहुँचाए वापस चला जाता है।



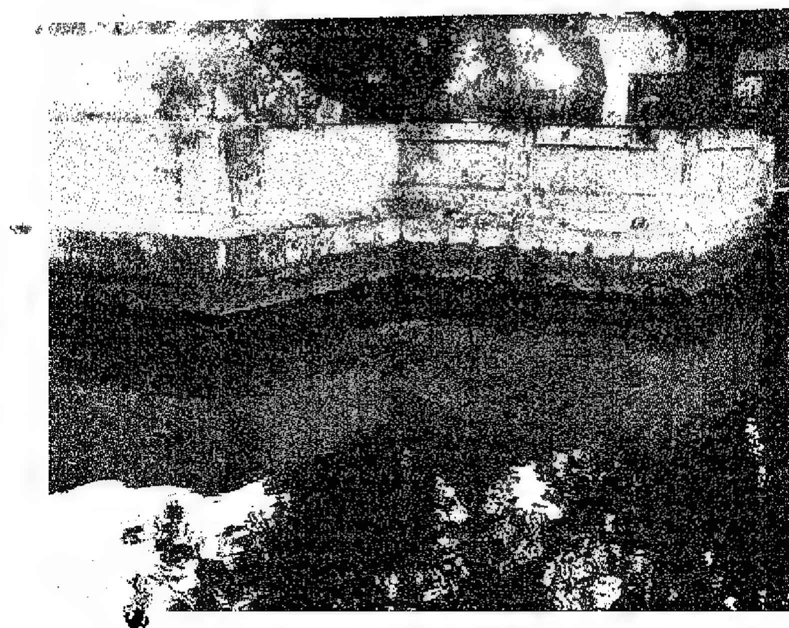
बनखण्डीनाथ मन्दिर (बरेली)

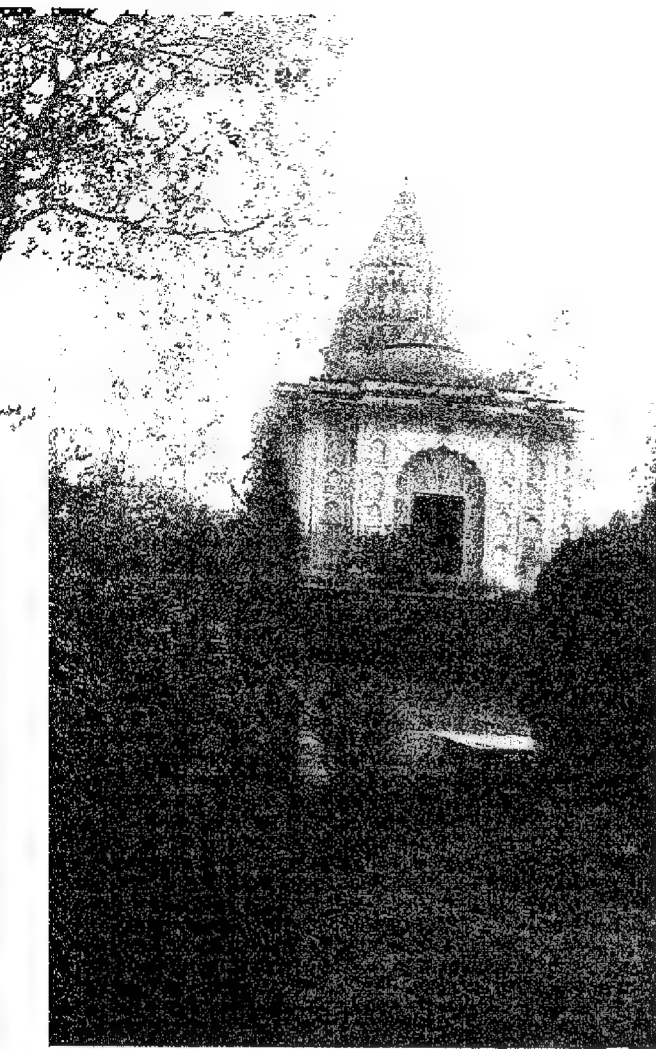


अलखनाथ मन्दिर (बरेली)



धोपेश्वरनाथ मन्दिर (बरेली)



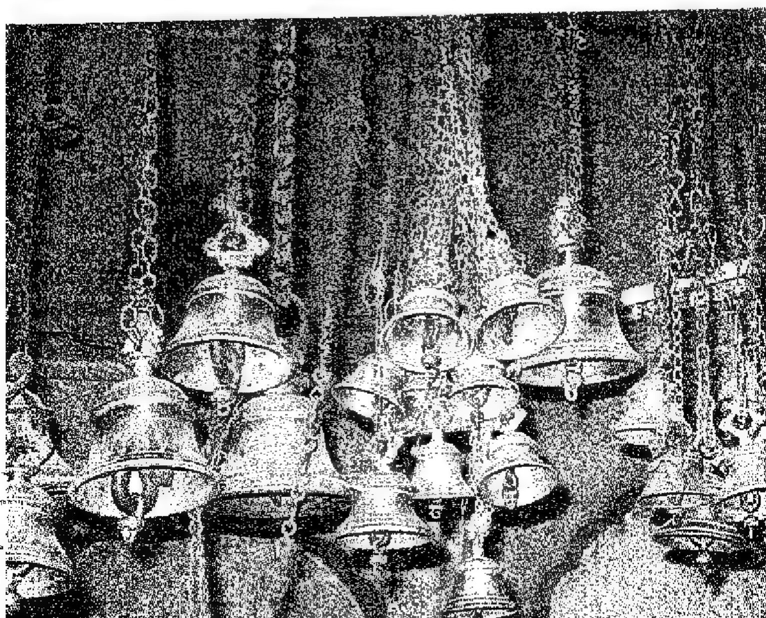


भगवान कल्कि का मन्दिर (सम्भल)



रामनवमी मेले में लगी दुकानें (मुरादाबाद)

श्री काली माता जी का मन्दिर (मुरादाबाद)

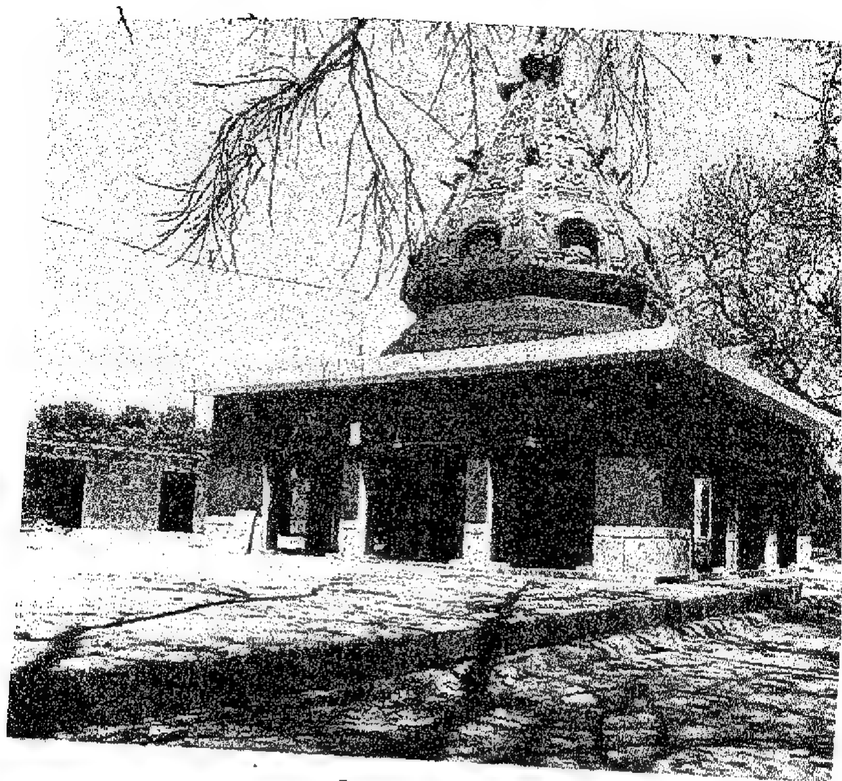


ग (मुरादाबाद)

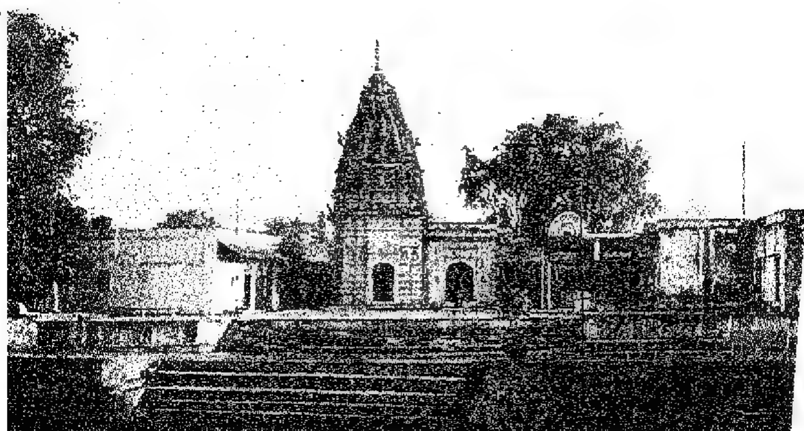


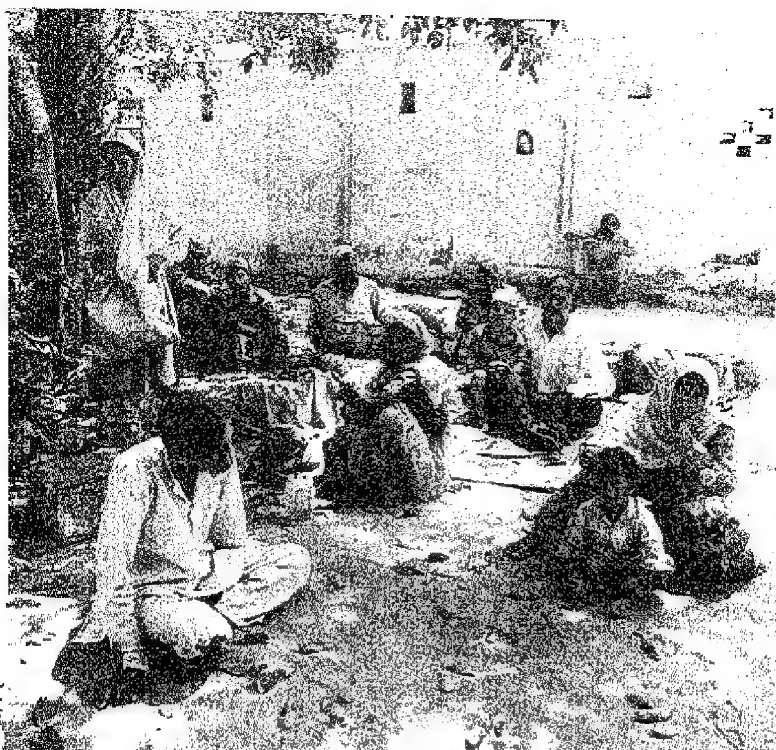


गुलहड़िया गौरीशंकर मन्दिर का शिवलिंग (बरे

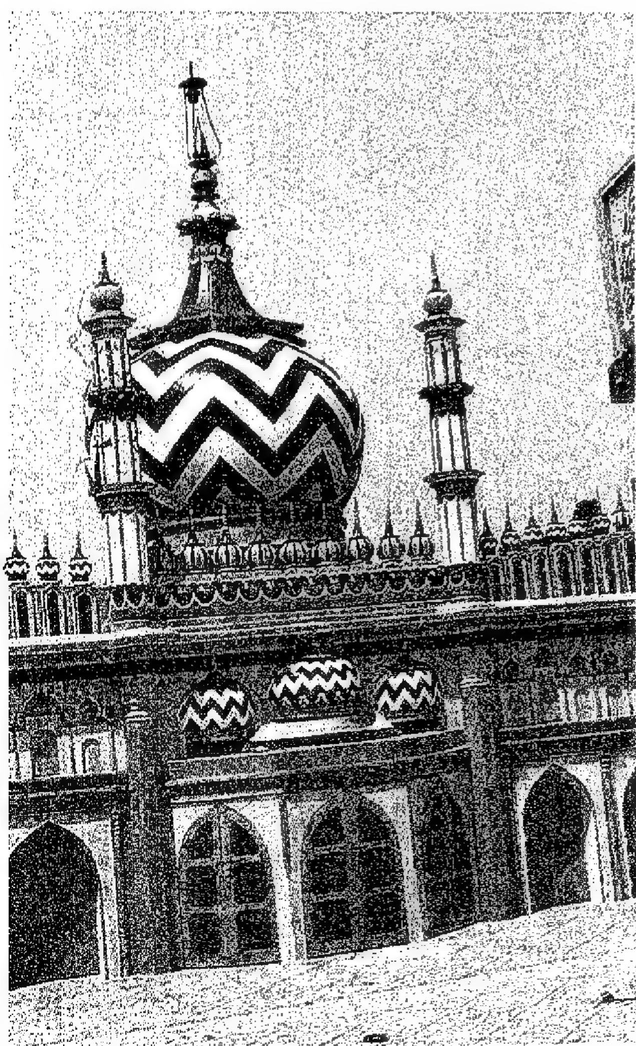


गुलहड़िया गौरीशंकर मन्दिर (बरेली)

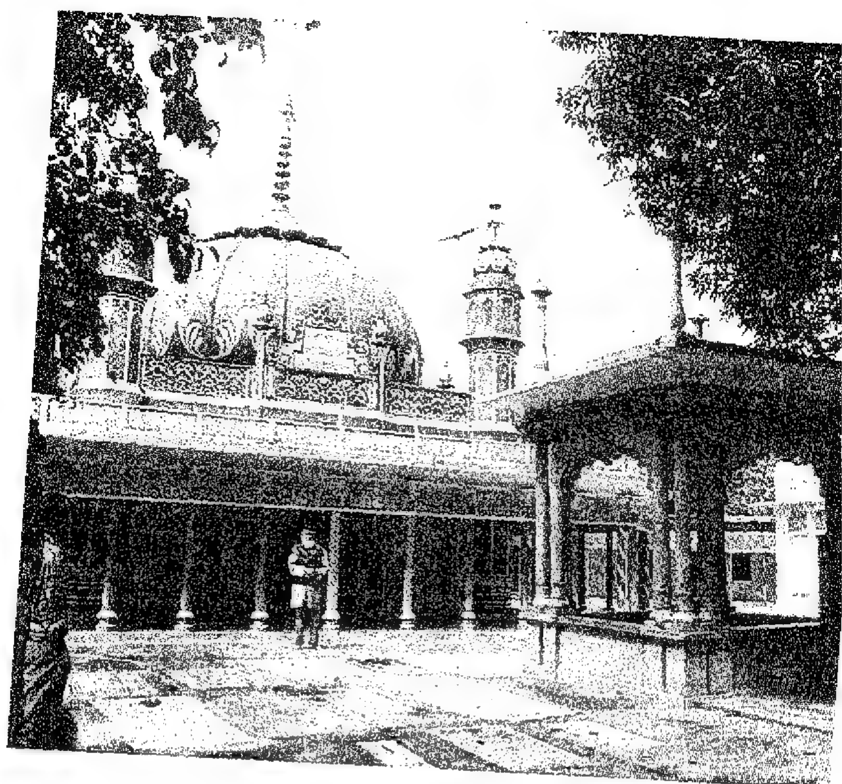




सरकार की ज़ारत पर इलाज़ कराने आये लोग (बदायूँ)

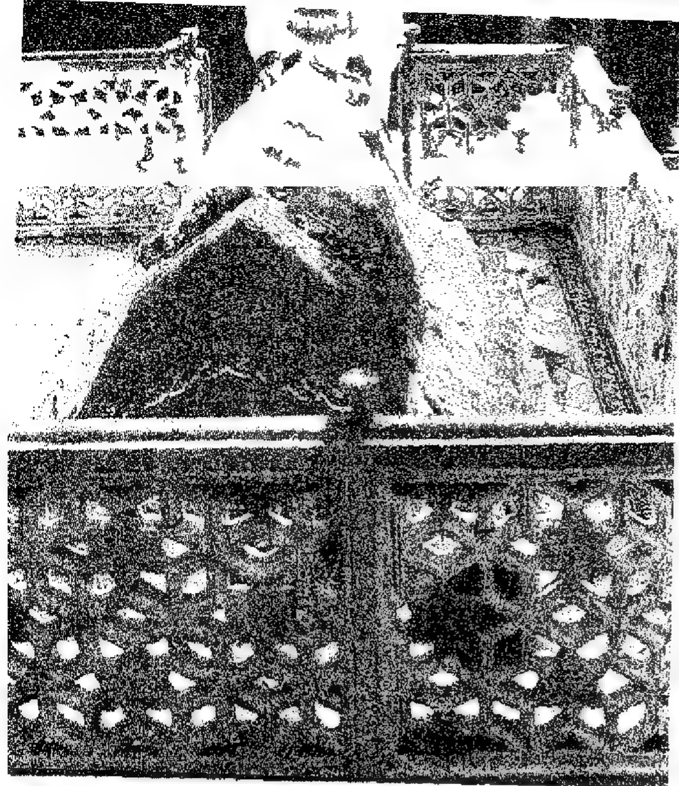


ा हजरत की मजार शरीफ के ऊपर निर्मित गुम्बद (बरेली)

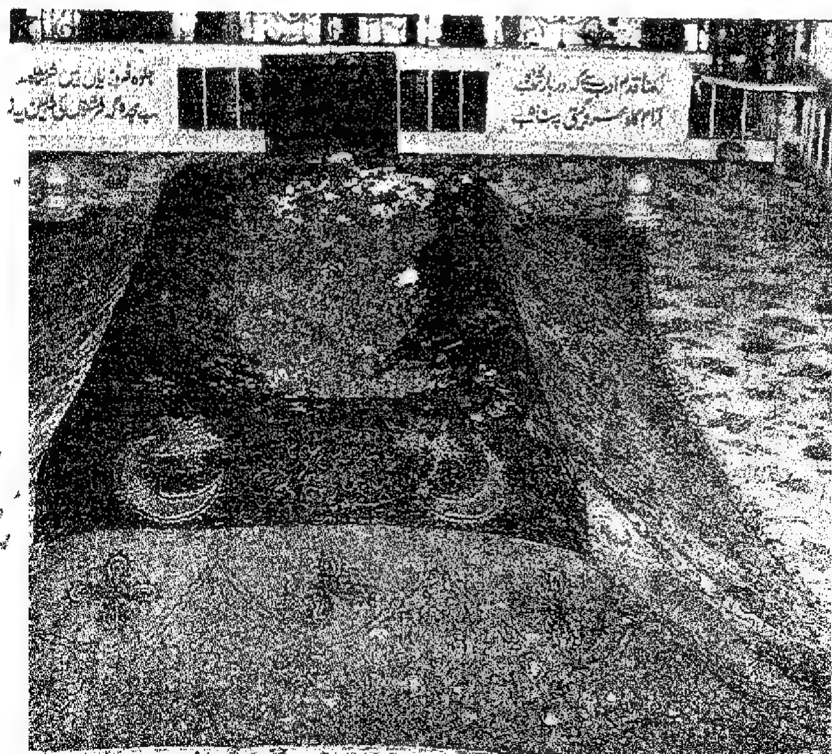


हज़रत शाह दरगाही महबूबू-इलाही मजार (रामपुर)

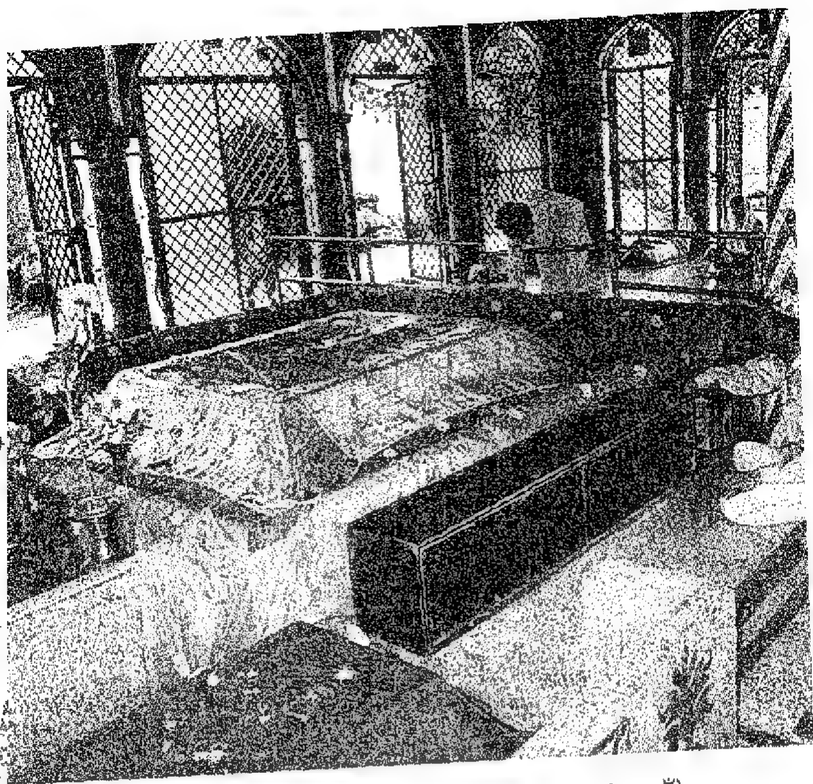




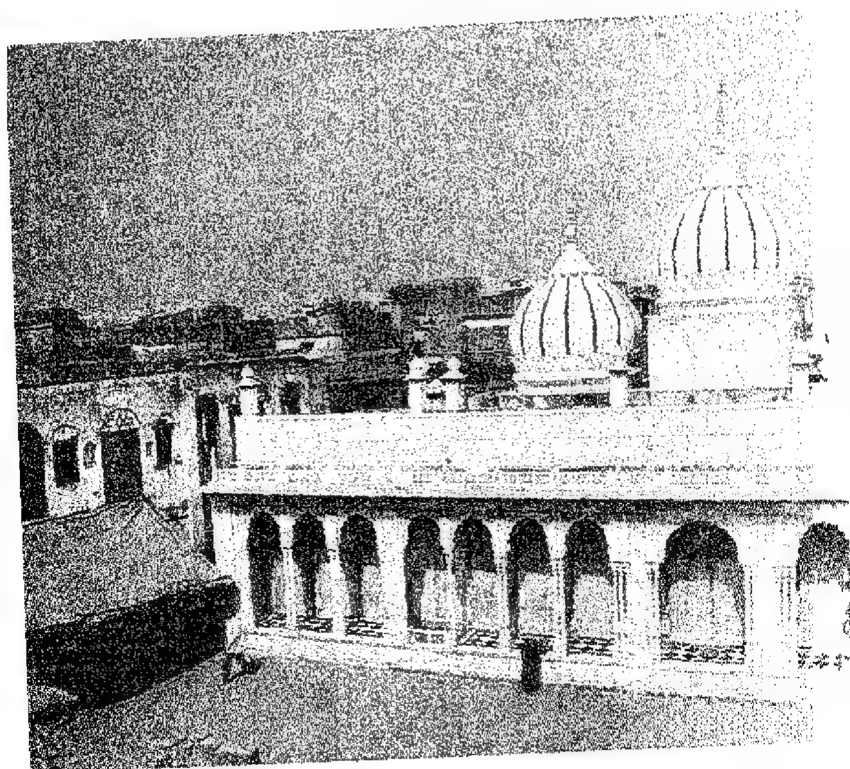
हज़रत शाह बुलाकी साहब की ज़्यारत (मुरादाबाद)



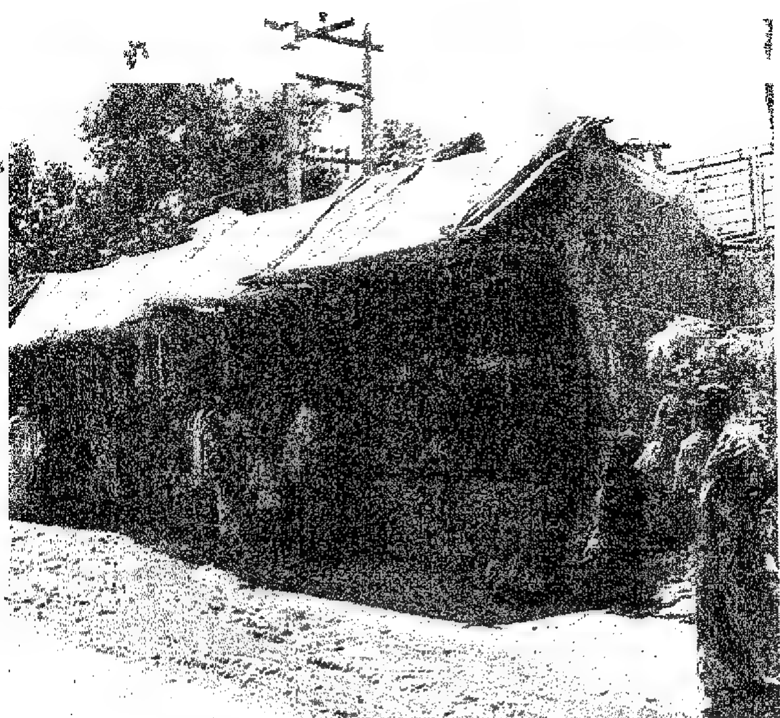
छोटे सरकार की मज़ार शरीफ़ (बदायूँ)



बड़े सरकार की मज़ार शरीफ़ (बदायूँ)



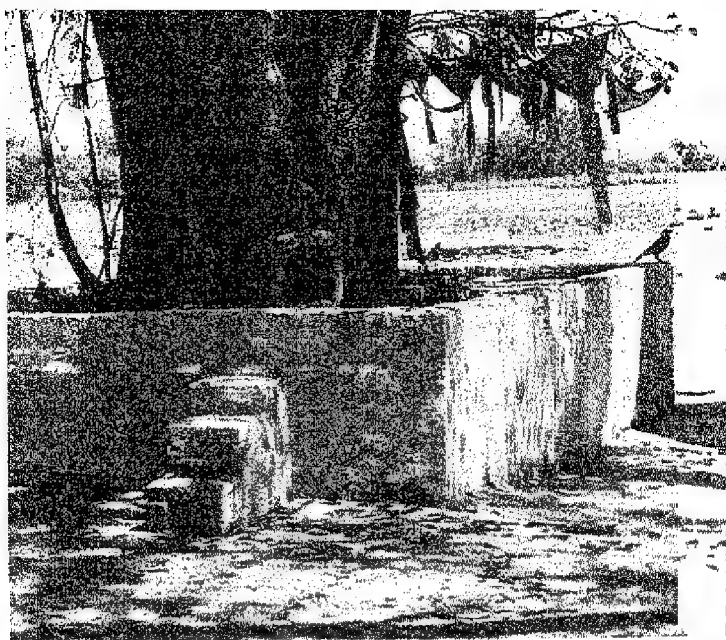
खानकाहे–अलिया नियाजिया (बरेली)



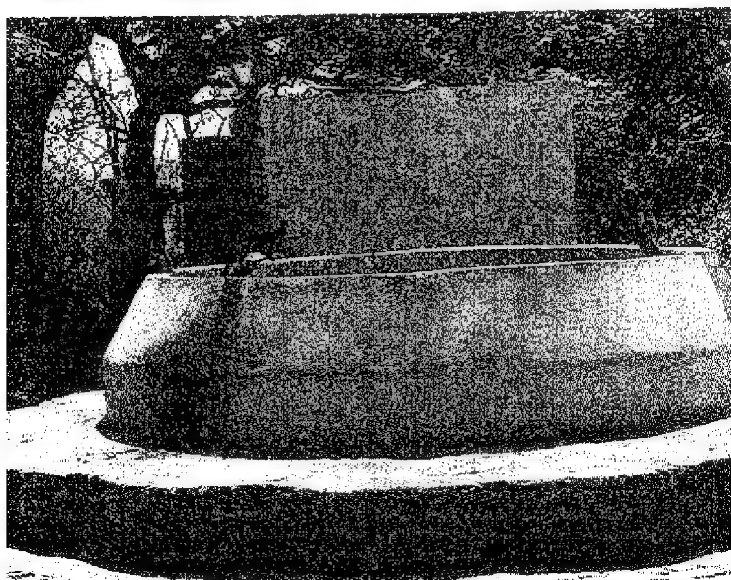
जैन मेला (रामनगर–बरेली)



री मेले में लगा पशुओं का बाजार–(नखासा) – (बरेली)



ब्रह्मदेव बाबा के थान के रूप में पीपल के वृक्ष की पूजा

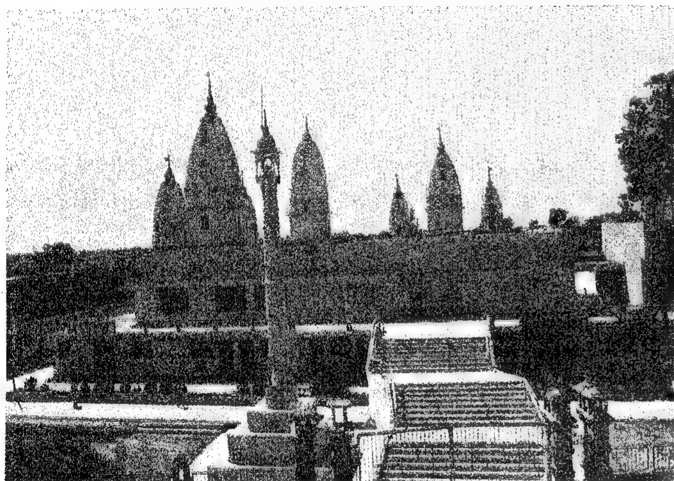


परियों का कुआँ (बदायूँ)

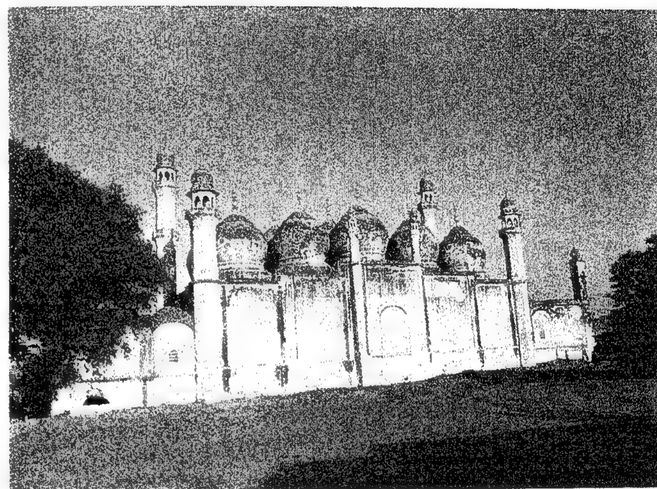


नवाब नौबत राम मन्दिर का चमत्कारी फर्श
जिस पर लेटकर त्वचा रोग दूर हो जाते हैं।

न्दिर (रामनगर जि० बरेली) में स्थित पार्श्वनाथ की प्रतिमा



आँवला तहसील (जिला बरेली)
रामनगर कस्बे में स्थित जैन मन्दिर का दृश्य



बारह बुर्जी मस्ज़िद (आँवला, बरेली)

यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की पाषाण निर्मित एक पद्मासन प्रतिमा है, जिसके शीर्ष पर पंचमुखी फण है। इस प्रतिमा के बारे में लोक धारणा है कि सन् 1857 के गदर के समय कुछ आक्रमणकारियों ने यहाँ हमला किया। मन्दिर का माली इस प्रतिमा को लेकर निकट स्थित एक कुँए में लगातार तीन दिन बैठा रहा। जब खतरा टल गया, तब प्रतिमा को लेकर वह माली कुँए से बाहर निकला। प्रतिमा के प्रभाव के कारण इस कुँए का जल पवित्र हो गया। आज सैकड़ों श्रद्धालु इस कुँए के पवित्र जल से स्नान करते हैं। लोगों का मानना है कि इस जल में स्नान करने तथा इसका सेवन करने से कैन्सर जैसी घातक बीमारियों का सफलता पूर्वक अन्त हो जाता है।

रामनगर में स्थित वर्तमान जैन मन्दिर अपनी अनूठी वास्तुकला के कारण किसी का भी मन मोह सकने में समर्थ है। इस मन्दिर का मुख्य द्वारा अत्यन्त सुन्दर तथा विशाल है। मन्दिर प्रांगण मे स्थित मुख्य हाल में पार्श्वनाथ की अनेक सुन्दर प्रतिमाएं हैं। इस कक्ष में छः फुट ऊँची भगवान महावीर की प्रतिमा भी स्थित है, जो शिल्प कला की दृष्टि से उच्च कोटि की है।

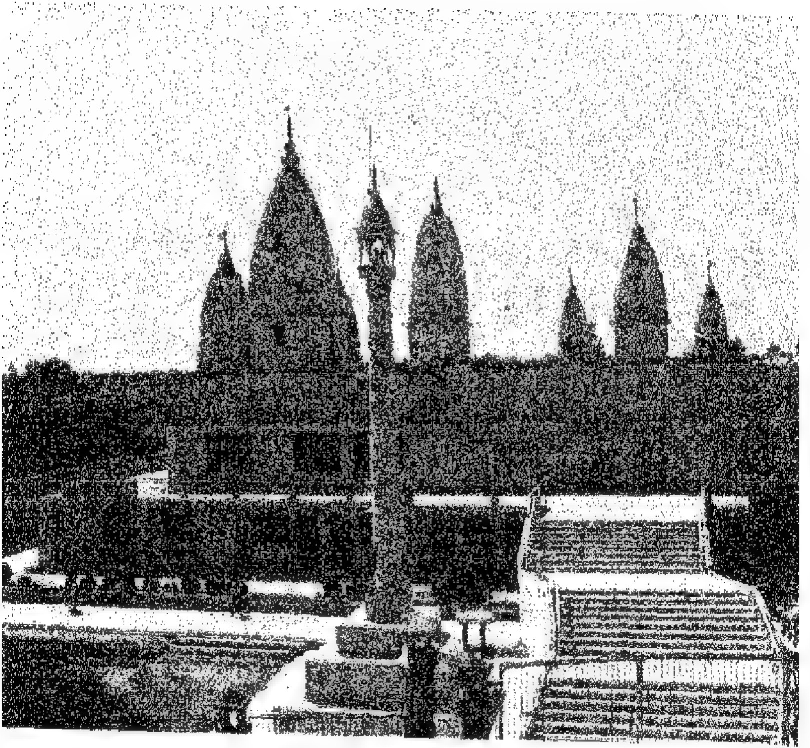
(4) प्रमुख सिख धार्मिक स्थल –

रुहेलखण्ड क्षेत्र में सिख सम्प्रदाय से सम्बन्धित अनेक धार्मिक स्थल है। इन स्थलों में से गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा (मुरादाबाद) विशेष उल्लेखनीय है।

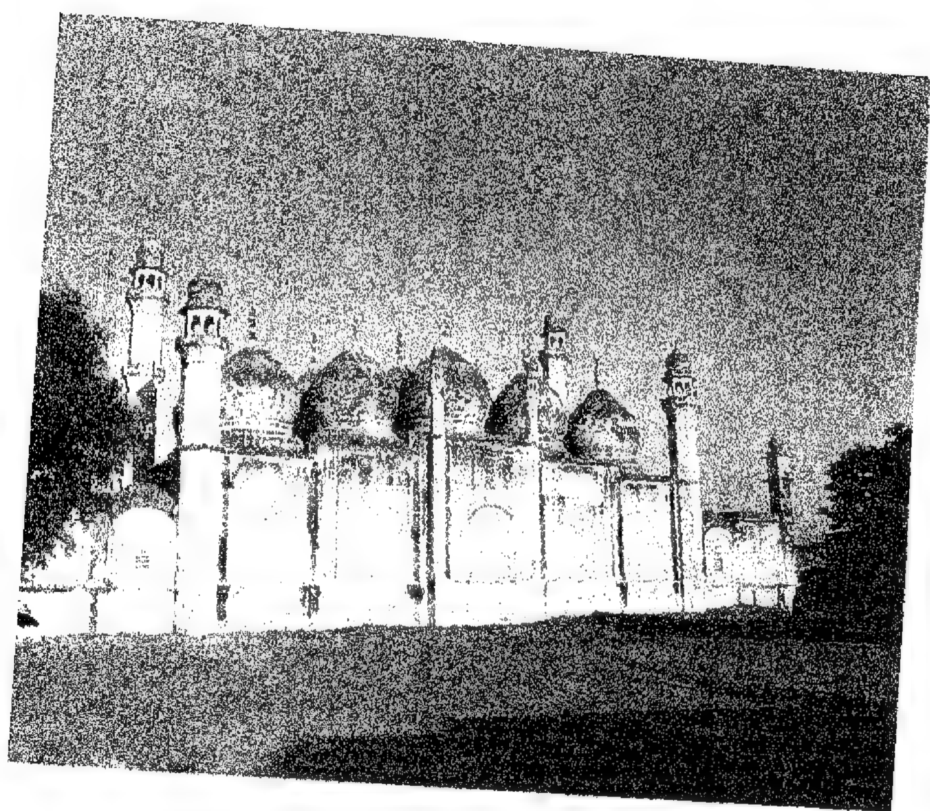
(1) गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा (मुरादाबाद)

(i) गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा (मुरादाबाद)

मुरादाबाद नगर में लाल बाग नामक स्थान पर प्रसिद्ध गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा स्थित है। इस स्थल के बारे में यह मान्यता है कि यहाँ 13 सितम्बर 1670 को गुरु तेग बहादुर धर्म प्रचार हेतु स्वयं आए थे। उन्होंने यहाँ आकर विनम्रता, आपसी भाईचारे और अहंकार के त्याग की शिक्षा दी। उनकी मृत्यु के उपरान्त इस स्थल पर गुरुद्वारे का निर्माण किया गया। हालाँकि गुरुद्वारे की वर्तमान इमारत अधिक प्राचीन नहीं है। संभवतः गुरुद्वारे की तत्कालीन इमारत का स्वरूप कुछ और रहा होगा। इस गुरुद्वारे में प्रत्येक मंगलवार को सैकड़ों लोग एकत्र होते हैं और कीर्तन में भाग लेते हैं। लोगों का विश्वास है कि इस गुरुद्वारे में मस्तक नवाने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।



आँवला तहसील (जिला बरेली)
रामनगर कस्बे में स्थित जैन मन्दिर का दृश्य.



बारह बुर्जी मस्जिद (आँवला, बरेली)

यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की पाषाण निर्मित एक पद्मासन प्रतिमा है, जिसके शीर्ष पर पंचमुखी फण है। इस प्रतिमा के बारे में लोक धारणा है कि सन् 1857 के गदर के समय कुछ आक्रमणकारियों ने यहाँ हमला किया। मन्दिर का माली इस प्रतिमा को लेकर निकट स्थित एक कुँए में लगातार तीन दिन बैठा रहा। जब खतरा टल गया, तब प्रतिमा को लेकर वह माली कुँए से बाहर निकला। प्रतिमा के प्रभाव के कारण इस कुँए का जल पवित्र हो गया। आज सैकड़ों श्रद्धालु इस कुँए के पवित्र जल से स्नान करते हैं। लोगों का मानना है कि इस जल में स्नान करने तथा इसका सेवन करने से कैन्सर जैसी घातक बीमारियों का सफलता पूर्वक अन्त हो जाता है।

रामनगर में स्थित वर्तमान जैन मन्दिर अपनी अनूठी वास्तुकला के कारण किसी का भी मन मोह सकने में समर्थ है। इस मन्दिर का मुख्य द्वारा अत्यन्त सुन्दर तथा विशाल है। मन्दिर प्रांगण मे स्थित मुख्य हाल में पार्श्वनाथ की अनेक सुन्दर प्रतिमाएं हैं। इस कक्ष में छः फुट ऊँची भगवान महावीर की प्रतिमा भी स्थित है, जो शिल्प कला की दृष्टि से उच्च कोटि की है।

(4) प्रमुख सिख धार्मिक स्थल –

रुहेलखण्ड क्षेत्र में सिख सम्प्रदाय से सम्बन्धित अनेक धार्मिक स्थल है। इन स्थलों में से गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा (मुरादाबाद) विशेष उल्लेखनीय है।

(1) गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा (मुरादाबाद)

(i) गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा (मुरादाबाद)

मुरादाबाद नगर में लाल बाग नामक स्थान पर प्रसिद्ध गुरु तेग बहादुर गुरुद्वारा स्थित है। इस स्थल के बारे में यह मान्यता है कि यहाँ 13 सितम्बर 1670 को गुरु तेग बहादुर धर्म प्रचार हेतु स्वयं आए थे। उन्होंने यहाँ आकर विनम्रता, आपसी भाईचारे और अहंकार के त्याग की शिक्षा दी। उनकी मृत्यु के उपरान्त इस स्थल पर गुरुद्वारे का निर्माण किया गया। हालाँकि गुरुद्वारे की वर्तमान इमारत अधिक प्राचीन नहीं है। संभवतः गुरुद्वारे की तत्कालीन इमारत का स्वरूप कुछ और रहा होगा। इस गुरुद्वारे में प्रत्येक मंगलवार को सैकड़ों लोग एकत्र होते हैं और कीर्तन में भाग लेते हैं। लोगों का विश्वास है कि इस गुरुद्वारे में मस्तक नवाने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

●

रुहेलखण्ड के लोक गीत

मानव सभ्यता के विकास क्रम में जिन विभिन्न कलाओं का जन्म हुआ, उनमें संगीत भी एक था। लेकिन संगीत गीतों के अभाव में अधूरा था। अतः मनुष्य ने संगीत को पूर्णता प्रदान करने के लिए गीतों की रचना प्रारम्भ की। भाषा शास्त्रीय आधार पर गीतों के दो वर्ग हुए। प्रथम वर्ग ऐसे गीतों का था, जो व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध थे तथा सर्वमान्य भाषा में लिखे जाते थे। दूसरे प्रकार का वर्ग ऐसे गीतों का था, जो किसी स्थान विशेष की क्षेत्रीय भाषा में रचे गए और सर्वमान्य भाषा शास्त्रीय नियमों पर आधारित नहीं थे। इस प्रकार के गीत लोक गीत कहे जाते थे। हमारे देश में लोक गीतों की परम्परा आरम्भ से वर्तमान तक यथा रूप में विद्यमान है। भारतवर्ष के विभिन्न भागों के अपने पृथक–पृथक लोकगीत हैं, जो स्थानीय भाषा में रचित हैं। यह गीत विभिन्न अवसरों तथा विषयों पर आधारित हैं। लोक गीतों के बारे में एक रुचिकर तथ्य यह है कि इनमें से अधिकांश गीत परम्परागत हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र में भी असंख्य लोकगीत प्रचलित हैं। यह लोक गीत यहाँ की स्थानीय क्षेत्रीय भाषा (अवधी और ब्रज भाषा का मिश्रण) में रचित हैं और आज भी यहाँ के गाँवों में इन गीतों को सुना जा सकता है। इन गीतों को अग्रलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं–

(1) होली के गीत

(2) होली की चौपाइयाँ

(3) विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत

(4) सावन के गीत

(5) नवरात्र के अवसर पर गाए जाने वाले गीत

(1) होली के गीत :

त्यौहारों को आधार बनाकर गीत लिखने की परम्परा हमारे देश में अत्यन्त प्राचीन है। भारत वर्ष के प्रत्येक हिस्से में प्रारम्भ से ऐसे गीतों की रचना की गई, जो विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर गाये जाते थे। रुहेलखण्ड क्षेत्र में ऐसे अनेक गीत प्रचलित है जिन्हे त्यौहारो के मौके पर गाया जाता है। होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों की अपनी पृथक पहचान हैं। इन गीतों में कुछ इस प्रकार हैं–

होली गीत

सं० – (i)

कल कहाँ थे कन्हाई हमें रात नींद न आई
आओ–आओ कन्हाई न बातें बनाओ
कल कहाँ थे कन्हाई हमें रात नींद न आई

एजी अपनी जली कुछ कह बैठूँगी,
सास सुनेगी रिसाई हमें रात नींद न आई।

एजी तुमरी तो रैन–चैन से गुजरी,
कुवजा से आँख लगाई हमें रात नींद न आई।

एजी चोया चंदन और आरती,
मोति न मांग भराई हमें रात नींद न आई।

कल कहाँ थे कन्हाई हमें रात नींद न आई,
आओ–आओ कन्हाई न बातें बनाओ,
कल कहाँ थे कन्हाई, हमें रात नींद न आई।

होली गीत

सं० – (ii)

होली खेलै अटल बल्देव हरजू की कुन्जन में।
वसुदेव खेलै देवकि खेलै और खेलै बल्देव हरजू की कुन्जन में।
मोर मुकुट पीताम्बर सो हो और सोहै गले हार हरजू की कुन्जन में।

बाजत ताल मृदंग झांझा ढप और मुरली मोचंग
घुमुड़त कुन्जन में होली खेलै अटल बल्देव, हरजू की कुन्जन में।
होली खेलत खेलै अटल बल्देव हरजू की कुन्जन में।
वसुदेव खेलै देवकी खेलै और खेलै बल्देव हरजू की कुन्जन में।

होली गीत

सं० – (iii)

सैंया होली में लादो गुलाल मेरा जिया न माने रे,
खाने को ला दो पूरी कचौरी चखने को लादो कवाब,
मेरा जिया न माने रे।

पीने को लादो लैमन बोतल चखने को लादो शराब,
मेरा जिया न माने रे।

बजाने को लादो तबला सरंगी गढ़ने को लादो किताब,
मेरा जिया न माने रे।

बैठन को लादो चौकी कुर्सी लिखने को दे दो किताब,
मेरा जिया न माने रे।

रंगन को ला दो पुड़िया बसंती मलने को ला दो गुलाल,
मेरा जिया न माने रे।

होली गीत

सं० – (iv)

अरी भागो री भागो री गोरी भागो,
रंग लायो नन्द को लाल।

बाके कमर में वंशी लटक रही
और मोर मुकुटिया चमक रही

संग लायो ढेर गुलाल,
अरी भागो री भागो री गोरी भागो
रंग लायो नन्द को लाल।

इक हाथ पकड़ लई पिचकारी
सूरत कर लै पियरी कारी
इक हाथ में अबीर गुलाल
अरे भागो री भागो री गोरी भागो
रग लायो नन्द को लाल।
भर भर मारैगो रंग पिचकारी
चून कारैगो अँगिया कारी
गोले गालन मलैगो गुलाल
अरे भागो री भागो री गोरी भागो
रग लायो नन्द को लाल।

यह पल आई मोहन टोरी
और घेर लई राधा गोरी
होरी खेलै करैं छेड़ छाड़
अरे भागो री भागो री गोरी भागो
रंग लायो नन्द को लाल।

(2) होली की चौपाइयाँ :

रुहेलखण्ड के गाँवो में होली के उपरान्त लोग होलीमिलन हेतु किसी सामूहिक स्थल पर एकत्रित होते हैं। इस अवसर पर लोग गोलाकार श्रृंखला बनाकर नृत्य करते हैं और विभिन्न प्रकार की चौपाइयाँ गाते हैं। यह चौपाई परम्परागत हैं। ढोल की संगत पर गाई जाने वाली इन चौपाइयों में गाँव के समस्त लोग हिस्सा लेते हैं।

इन चौपाइयों में से कुछ इस प्रकार हैं –

चौपाई

सं० – (i)

चौपाई का विषय – रामचन्द्र जी की वन यात्रा।

वन को चले दोनों भाई री माई इन्हें समझावो न कोई,
आगे–आगे राम चलत हैं, पीछे से लक्ष्मण भाई री माई,
इन्हें समझावो न कोई।

ताके पीछे चलैं जानकी शोभा बखानी न जाए री माई,
इन्हें समझावो न कोई।

राम बिना मेरी सूनी आयोध्या, लक्ष्मण बिना ठकुराई,
सीता बिना मेरी सूनी रसुइया, जे दुख सहे न जाये री,
इन्हें समझावो न कोई।

अरे भादों की रैन अन्धेरी पवन चलैं पुरवाई
इन्हें समझावो न कोई।

वन कौ चले दोनों भाई री माई इन्हें समझावो न कोई,
आगे–आगे राम चलत हैं, पीछे से लक्ष्मण भाई री माई,
इन्हें समझावो न कोई।

चौपाई

सं० – (ii)

चौपाई का विषय – मन्दोदरी द्वारा रावण को यह समझाना कि वह सीता को राम को लौटा दें।

उठ देखो समुद्र जी के तीर रे बालम
जनक सिया जी के पति आए
पड़े–पड़े दिन बहुतक हुए गए
समुद्र बधतु है नाए रे बालम
जनक सिया जी के पति आए

सिला काट हनुमत लै आए
उरसई से सेतु बधो रे बालम
जनक सिया जी के पति आए रे

चन्दन कटवावो रथ बनवावो
सिये लैओ बैठाए रे बालम
जनक सिया जी के पति आए

क्यों मन डरपे चतुर कामिनी
क्यों मन शंका खाए रे बालम
जनक सिया जी के पति आए

महादेव शिव शंकर वश में
काल बँधो पाटी से हमारे
जनक सिया जी के पति आए

उठ देखो समुद्र जी के तीर रे बालम
जनक सिया जी के पति आए।

चौपाई

सं० – (i)

चौपाई का विषय – रामचन्द्र जी की वन यात्रा।

वन को चले दोनों भाई री माई इन्हें समझावो न कोई,
आगे–आगे राम चलत हैं, पीछे से लक्ष्मण भाई री माई,
इन्हें समझावो न कोई।

ताके पीछे चलैं जानकी शोभा बखानी न जाए री माई,
इन्हें समझावो न कोई।

राम बिना मेरी सूनी आयोध्या, लक्ष्मण बिना ठकुराई,
सीता बिना मेरी सूनी रसुइया, जे दुख सहे न जाये री,
इन्हें समझावो न कोई।

अरे भादों की रैन अन्धेरी पवन चलैं पुरवाई
इन्हें समझावो न कोई।

वन कौ चले दोनों भाई री माई इन्हें समझावो न कोई,
आगे–आगे राम चलत हैं, पीछे से लक्ष्मण भाई री माई,
इन्हें समझावो न कोई।

चौपाई

सं० — (ii)

चौपाई का विषय — मन्दोदरी द्वारा रावण को यह समझाना कि वह सीता को राम को लौटा दें।

उठ देखो समुद्र जी के तीर रे बालम
जनक सिया जी के पति आए
पड़े–पड़े दिन बहुतक हुए गए
समुद्र बधतु है नाए रे बालम
जनक सिया जी के पति आए

सिला काट हनुमत लै आए
उसाई से सेतु बधो रे बालम
जनक सिया जी के पति आए रे

चन्दन कटवावो रथ बनवावो
सिये लैओ बैठाए रे बालम
जनक सिया जी के पति आए

क्यों मन डरपे चतुर कामिनी
क्यों मन शंका खाए रे बालम
जनक सिया जी के पति आए

महादेव शिव शंकर वश में
काल बँधो पाटी से हमारे
जनक सिया जी के पति आए

उठ देखो समुद्र जी के तीर रे बालम
जनक सिया जी के पति आए।

चौपाई

सं० – (iii)

चौपाई का विषय – राम के बनवास के दौरान की घटनाओं का संक्षिप्त वृत्तान्त।

राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर
पहले राम तपे वन में तपसी दोनों वीर
पंचवेदिका तापे रे सरजू के तीर
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

दूजे मया मृग मारन को निकले दोनों वीर
बिना मारे मृगा को रे अचबए को नीर
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

तीजे रौजा छल कीनो सीता जी के साथ
सिया हरी बन में से रे माता भिक्षा डार
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

चौथो सोंच जटायु को दशरथ जी को सोंच
सिया हरीं बन में से तिनहु को सोंच
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

पंचाए तस्सुरा मारन को खरदूषण मार
नार ताडुका मारी से नक लीनी काट
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

छठे वाण छल से मारो प्रभु एकहे वाण
राज दियो सुग्रीवो रे अंगद जुवराज
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

सातवे सायथ शादी रे अजन के लाल
जाए समुद्र में छाए रे दल उल्ले पार
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

आठवें पद में आठासी से लौके भगवान
सेतु बाँध दल उतरे रे दल पल्ले पार
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

नवें वाण झर लागो रे धरती धर्म द्वार
हर की शरणा लागी रे उभरें रे प्राण
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

दसए रावण हाँसो रे जुद खेलो अथाय
सीधो चलो बैकुंठो रे रघुवर के हाथ
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

एकादशी गड़ तोरो रे सिया लाए लिवाए
जाए अवधपुर छाए रे घर मंगल चार
राम लखन सिया कैसे रे कहाओ हनुमत वीर

चौपाई

सं० – (iv)

नीम पेठ आ गईं नींव निवौरी
आम पे आ गए अम्बा
होली पे आ गए पान फूल
पनिहारी पे जोवन धल्ला
तेरी कौन जात परिहार ठाड़ी होई जा री।

(3) विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत :

शादी–विवाह के अवसर पर गीत गाने की परम्परा हमारे देश की संस्कृति का अभिन्न अंग है। इन गीतों के अभाव में विवाह के अवसर को पूर्ण नहीं माना जाता। रुहेलखण्ड में ऐसे अनेक लोक गीत प्रचलित हैं, जिन्हें विवाह के अवसर पर गाया जाता हैं। परिवार की महिलाएं ढोलक–मजीरे की ताल पर सामूहिक रूप से इन गीतों को गाती हैं। प्रायः इन गीतों की धुन पर महिलाएं नृत्य करती हैं। इनमें से कुछ गीत इस प्रकार हैं –

गीत

सं० – (i)

बन्ना बुलाए, बन्नो न आए।
मैं कैसे आऊँ, बन्ना मेरी पायल बजनी है।।

बाबा तेरे बैठे नाना तेरे बैठे।
मैं कैसे आऊँ बन्ना, मेरी पायल बजनी है।।

नीचे निगाह डाल कै लम्बा घूँघट काढ़ के, पायल उतार के।
आज मेरी बन्नो रे, अट्रिया मेरी सूनी पड़ी।।

बन्ना बुलाये, बन्नो न आये।
मैं कैसे आऊँ, बन्ना, पायल मेरी बजनी है।।

चाचा तेरे बैंठे, ताऊ तेरे बैठे।
मैं कैसे आऊँ बन्ना, पायल मेरी बजनी है।।

नीचे निगाह डाल कै, लम्बा घूँघट काढ़ के, पायल उतारे के।
आज मेरी बन्नो रे, अट्रिया सूनी पड़ी।।

बन्ना बुलाये, बन्नो न आये।
मैं कैसे आऊँ बन्ना, पायल मेरी बजनी है।।

नीचे निगाह ड़ाल कै, लम्बा घुँघट काढ़ के, पायल उतार के।
आज मेरी बन्नो रे, अटरिया सूनी पड़ीं।।

गीत

सं० – (ii)

लगन आई हरे–भरे
लगन आई मेरे अँगना।
चाचा सज गए, चाची सज गई,
सज गयी सारी बारात।

रघुनन्दन तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।।

लगन आई हरे–भरे,
लगन आई मेरे अँगना।
मामा सज गये मामी सज गयीं,
सज गयी सारी बारात।

रघुनन्दन तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।।

लगन आई हरे–भरे,
लगन आई मेरे अँगना।
भईया सज गये, भाभी सज गयीं,
सज गयी सारी बारात।

रघुनन्दन तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।।

लगन आई हरे–भरे,
लगन आई मेरे अँगना।
फूफा सज गये, बुआ सज गयीं,
सज गयी सारी बारात।

रघुनन्दन तो ऐसे सज गए, जैसे श्री भगवान।।

गीत

सं० – (iii)

बन्नो सोहाग भरी किसी को नजर न लगे। बन्नो
दादी आई सोहाग चढ़ाने माता आई सोहाग चढ़ाने
उसकी मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी ताई आई सोहाग
चढ़ाई चाची आई सोहाग चढ़ाने मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी बुआ आई
सोहाग चढ़ाने मौसी आई सोहाग चढ़ाने
जीजी आई सोहाग चढ़ाने भाभी आई सोहाग
चढ़ाने मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी नानी आई सोहाग
चढ़ाने मामी आई सोहाग चढ़ाने मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी मेरी लाड़ो
सोहाग भरी किसी की नजर ना लगे।

गीत

सं० – (iv)

सासुल पनिया कैसे लाऊँ रसीले दोऊ नैना
सासुल पनिया कैसे लाऊँ रसीले दोऊ नैना

[illegible] नदरिया सिर पै रखो गगरिया

[illegible] लै लेओ साथ

[illegible] पनिया कैसे लाऊँ रसीले दोऊ नैना।

मैने ओढ़ी चटक चुनरिया, सिर पै रखी गगरिया,

छोटी ननदी लै लई साथ।

रसीले दोऊ नैना।

तुम बैठौ कदम की छैया, मैं भर लाऊँ ठन्डो पनिया,

ननदी घर मत कहइयो जाय।

रसीले दोऊ नैना।

वह मोसे पहले आई, उसने दो की चार लगाई,

भैया भाभी के दो यार।

रसीले दोऊ नैना।

फागुन में ब्याह करूँगी, बैसाख में गौना करूँगी,

ननदी कबहूँ न लेऊ तेरो नाम।

रसीले दोऊ नैना।

फागुन मैं ब्याह रचइयो, बैसाख में गौना करइयो,

भाभी तीजो पे लियो बुलाय,

रसीले दोऊ नैना।

(4) सावन के गीत :

विभिन्न ऋतुओं को आधार बनाकर गीत लिखने की परम्परा अति प्राचीन है। सावन ऋतु को आधार बनाकर असंख्य गीत लिखे गये हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र में भी ऐसे गीतों के दर्शन होते हैं। इसी प्रकार के गीत हैं —

गीत

सं० – (iii)

बन्नो सोहाग भरी किसी को नजर न लगे। बन्नो
दादी आई सोहाग चढ़ाने माता आई सोहाग चढ़ाने
उसकी मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी ताई आई सोहाग
चढ़ाई चाची आई सोहाग चढ़ाने मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी बुआ आई
सोहाग चढ़ाने मौसी आई सोहाग चढ़ाने
जीजी आई सोहाग चढ़ाने भाभी आई सोहाग
चढ़ाने मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी नानी आई सोहाग
चढ़ाने मामी आई सोहाग चढ़ाने मोतिन से मांग भरी।

और फूलों से गोद भरी। किसी मेरी लाड़ो
सोहाग भरी किसी की नजर ना लगे।

गीत

सं० – (iv)

सासुल पनिया कैसे लाऊँ रसीले दोऊ नैना
सासुल पनिया कैसे लाऊँ रसीले दोऊ नैना

तुम आए चटक चदरिया, सिर पै रखो गगरिया,
छोटी ननदी लै लैओ साथ।
सागुल पनिया कैसे लाऊँ रसीले दोऊ नैना।

मैने ओढ़ी चटक चुनरिया, सिर पै रखी गगरिया,
छोटी ननदी लै लई साथ।
रसीले दोऊ नैना।

तुम बैठो कदम की छैया, मैं भर लाऊँ ठन्डो पनिया,
ननदी घर मत कहइयो जाय।
रसीले दोऊ नैना।

वह मोसे पहले आई, उसने दो की चार लगाई,
भैया भाभी के दो यार।
रसीले दोऊ नैना।

फागुन में ब्याह करूँगी, बैसाख में गौना करूँगी,
ननदी कबहूँ न लेऊ तेरो नाम।
रसीले दोऊ नैना।

फागुन मैं ब्याह रचइयो, बैसाख में गौना करइयो,
भाभी तीजो पे लियो बुलाय,
रसीले दोऊ नैना।

(4) सावन के गीत :

विभिन्न ऋतुओं को आधार बनाकर गीत लिखने की परम्परा अति प्राचीन है। सावन ऋतु को आधार बनाकर असंख्य गीत लिखे गये हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र में भी ऐसे गीतों के दर्शन होते हैं। इसी प्रकार के गीत हैं –

गीत

सं० – (i)

ऊँची अटरिया झझन किवरिया,
कोरि आवे झरोकन व्यार जी।
विजनी डुलाउत सास नै देखो,
कोई सास को मुडवा पिराने जी।

लावौ ना अम्मा मेरी कसी खुरपिया,
कोई जंगल बूटी लै आवै जी।
जंगल बूटी वेच कुछ नाही हुये हैं,
कोई लावै ना रनिया करेजी जी।

लावै ना जम्मा मेरी पाँचौ से कपड़े,
कोई लावौ ना पाँचौ हतियार जी।
कोई रनिया करेजी लै आवे जी,
लेउ ना अम्मा मेरी रनिया करेजी कोई घिस–घिस मुडवा लगावौ जी।

कोह कौ–बेटा मेरे छलवल करत हौ,
कोई लाए न हिरन करेजी जी।
तुमरे पीहर में रनिया ब्याह उठो है,
कोई तुम्हे पीहर पहुचावें जी।

न मेरे भैया न भतीजो,
कोई किन घर उठो है ब्याहो जी।
तुमरे पिछैला रनिया भैया जो जनमें,
कोई उन्हीं को उठो है ब्याहो जी।

आपको तो राजा ने घुडेला सजाये,
कोई रनिया को डुलिया सजायी जी।

एक वन नागो दूजो वन नागो,
कोई तिजवन पहुँचे वन जाये जी।

न हिया चिरही न दिया चिरंगली,
कोई वन में काहे ले आए जी।
पहली कटारी जब मारी राजा नै,
कोई लै लई वैयान बीच जी।

दूसरी कटारी जब मारी राजा नै,
कोई लै लई जंघन बीच जी।
बिना खता के राजा काहे कौ मारौ,
कोई बाई कोख नन्द लाल जी।

तीसरी कटारी जब मारी है राजा नै,
तीसरी में तजे है प्राण जी।
बाई हाथ राजा लई है करेजी,
कोई दाहिने लहै है नन्द लाल जी।

मलिन—मलिन में बेचत फिरत है,
कोई लाल नै लैलो मौल जी।
कई रूपैया जाको मोल बुलत है,
कोई कइयो रूपैया दै दो जी।

लाख रुपैया जाको मोल बुलत है,
कोई पाँच रुपैया दे दो जी।
लेयो न अम्मा मेरी रनिया करेजी,
कोई घिस—घिस मुडवा लगावोजी।

लावो न अम्मा मेरी पाँचों से कपड़े
होई हम जोगी हो जावेगें।
चन्दा सी मेरी बहू गई है सूरज सी ससुराल जी,
काहे को बेटा मेरे सोच करत हो दो–दो ब्याह कराऊंगी एक गोरी एक साँवली जी।

गीत

सं० – (ii)

नन्हीं–नन्हीं बुदियाँ सावन का मेरा बरसना जी।
पहला झूला–झूला मैंने बावुल जी के राज्य में,
सारी–सारी रतियां बागों का मेरा झूलना जी।
दूसरा झूला–झूला मैंने भैया जी के राज्य में,
सारी–सारी रतियां सखियों संग मेरा झूलना जी।
एक झूला–झूला मैंने ससुरा जी के राज्य में,
सारी–सारी रतियाँ महलों में मेरा झूलना जी।
एक झूला–झूला मैंने ससियां जी के राज्य में,
सारी–सारी रतियाँ सेजों पर मेरा झूलना जी।

(5) नवरात्र के अवसर पर गाए जाने वाले गीत :

विभिन्न धार्मिक अवसरों का गीतों से गहन सम्बन्ध है। नवरात्र के अवसर पर गाए जाने वाले गीत, भारत के अनेक प्रान्तों में देखे जा सकते हैं। रुहेलखण्ड के गाँवों में ऐसे अनेक गीत प्रचलित हैं, जिन्हें नवरात्र में गाया जाता है। इनमें से कुछ गीत इस प्रकार हैं–

गीत

सं० – (i)

पलका पीतल को बनवा लो, पटापट बोले लांगुरिया,
सासुल पीसे पीसनों, ससुरा सौवे खाट।
निवृत आवै पीसनो, सरकत आवै खाट।।

पलका पीतल के बनवा लो पटापट बोले लाँगुरिया,
देवरानी पीसे पीसनो देवर सौवे खाट।
निवृत आवै पीसनो, सरकत आवै खाट।।

पलका पीतल को बनवा लो, पटापट बोले लाँगुरिया,
भाभी पीसे पीसनो, भाईया सौवे खाट।
निवृत आवै पीसनो, सरकत आवै खाट।।

पलका पीतल को बनवा लो, पटापट बोले लाँगुरिया,
चाची पीसे मीसनो, चाचा सौवे खाट।
निवृत आवै पीसनो, सरकत आवै खाट।।

पलका पीतल को बनवा लो, पटापट बोले लाँगुरिया,
मामा पीसे पीसनो, मामा सौवे–खाट।
निवृत आवै पीसनो, सरकत आवै खाट।।

गीत

सं० – (ii)

दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लांगुरिया।
पहली जोगिनी यो उठ बोली झूमड़ ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली लटकन ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेली लॉगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली नथनी ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली झुमकी ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली हरवा ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली पैन्डल ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली तगड़ी ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली गच्छा ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली पायल ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली आयल ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली बिन्दी ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली सिंदूर ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉगुरिया।

गीत

संo – (ii)

मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

मेरो ससुरा जान[illegible]य देय भवानी जी के दर्शन कौ,
बहुअर घर ही [illegible]ाँगो वरदान हाथ जोड़ विनती करौ
मेरो जीय लह[illegible] लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

मेरो जेठा जान नाय देय भवानी जी के दर्शन कौ,
बहुअर घर ही से माँगो वरदान हाथ जोड़ विनती करौ
मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

मेरो देवर जान नाय देय भवानी जी के दर्शन कौ,
बहुअर घर ही से माँगो वरदान हाथ जोड़ विनती करौ
मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

नवनात्र के समय रुहेलखण्ड के गाँवों और नगरों में छोटी–छोटी बच्चियों द्वारा गाए जाने वाले झुझिया गीत भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। नवरात्र के दिनों में छोटी बच्चियाँ टोलियाँ बनाकर घर–घर जाती हैं और इन गीतों को सामूहिक रूप से गाती हैं। इन गीतों को गाते समय यह बालिकाएं अपने साथ मिट्टी से बने जालीदार कंडील भी रखती हैं। छोटे–छोटे इन कंडीलो के भीतर दिया जलाया जाता है, जिससे कंडील सुन्दर प्रतीत होते हैं।

पहली जोगिनी यो उठ बोली नथनी ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली झुमकी ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉंगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली हरवा ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली पैन्डल ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉंगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली तगड़ी ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली गच्छा ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉंगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली पायल ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली आयल ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉंगुरिया।

पहली जोगिनी यो उठ बोली बिन्दी ला दे मोय,
दूजी जोगिनी यो उठ बोली सिंदूर ला दे मोय।
दो–दो जोगिनी के बीच अकेला लॉंगुरिया।

गीत

सं० – (ii)

मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

मेरो ससुरा जान नाय देय भवानी जी के दर्शन कौ,
बहुअर घर ही से माँगो वरदान हाथ जोड़ विनती करौ,
मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

मेरो जेठा जान नाय देय भवानी जी के दर्शन कौ,
बहुअर घर ही से माँगो वरदान हाथ जोड़ विनती करौ
मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

मेरो देवर जान नाय देय भवानी जी के दर्शन कौ,
बहुअर घर ही से माँगो वरदान हाथ जोड़ विनती करौ
मेरो जीय लहरिया लेय भवानी जी के दर्शन कौ।

नवनात्र के समय रुहेलखण्ड के गाँवों और नगरों में छोटी–छोटी बच्चियों द्वारा गाए जाने वाले झुझिया गीत भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। नवरात्र के दिनों में छोटी बच्चियाँ टोलियाँ बनाकर घर–घर जाती हैं और इन गीतों को सामूहिक रूप से गाती हैं। इन गीतों को गाते समय यह बालिकाएं अपने साथ मिट्टी से बने जालीदार कंडील भी रखती हैं। छोटे–छोटे इन कंडीलों के भीतर दिया जलाया जाता है, जिससे कंडील सुन्दर प्रतीत होते हैं।

संगीत

संस्कृति शब्द से जीवन का प्रत्येक पक्ष सम्बद्ध है। किसी भी पक्ष मे अभाव में संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। संगीत भी इन्हीं पक्षों में से एक है। संगीत और भारतीय संस्कृति का सम्बन्ध बहुत पुराना है। भारत के प्रत्येक प्रान्त और क्षेत्र का अपना पृथक संगीत है। हर प्रान्त के संगीत की अपनी कुछ मौलिक विशेषताएँ हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र का भी अपना मौलिक संगीत है। रुहेलखण्ड के संगीत को निम्नलिखित भागों में विभक्त करके समझा जा सकता है।

1. चारबैत
2. ढोला
3. आलहा
4. भारतीय संगीत के लिए रुहेलखण्ड की देन–सहसवान रामपुर घराने का संगीत

1. चारबैत :

"चारबैत" रुहेलों का प्रसिद्ध संगीत है। इसके सम्बन्ध में रुहेला साहित्य नहीं मिलता। उर्दू भाषा में एक पुस्तक "शब्बीर अली खाँ शकेब रामपुरी" की उपलब्ध है जिसको "खुदा बक्श आरिएन्टल पब्लिक लाईब्रेरी पटना" 1995 में प्रकाशित किया है। इसका नाम "चारबैत" तअरुफ व इन्तेखाब" है। चारबैत पर यह प्रथम पुस्तक है जिसके आधार पर इस संगीत की जानकारी मिलती है।

रुहेलखण्ड में (विशेष रूप से रामपुर में) "चारबैत" की परम्परा रुहेला पठानों के कारण पडी। रुहेला पठान "पश्तो" भाषा बोलते थे और उनकी अपनी सभ्यता–संस्कृति थी। "चारबैत" का सम्बन्ध उनके लोक संगीत से था। "पश्तों" में "चारबैत" को "चरबैत्यह" कहा जाता था। इस प्रकार "चारबैत" रुहेला पठानों का लोकसंगीत था, जिसको वह अपना दिल बहलाने के लिये गाते थे "कव्वाली का भाँति "चारबैत" को कई पठान मिलकर गाते थे। "चारबैत" गाने वालों के दल होते थे। जिनको "अखाड़ा" कहते थे। सरदार के साथ जो पठान दायें–बायें बैठते थे, वह बाजू" कहलाते थे। "चारबैत" का "दफ" की धुन पर गाया जाता था। "दफ" में एक ओर

चमड़ा लगता है जिससे धुन उत्पन्न की जाती है। गाने वाले जितनी ऊंची तान लेते थे उतनी ही उनकी प्रशंसा की जाती थी। रामपुर में रुहेला पठानों के "अखाड़े" थे। रुहेलों के प्रशासन के समय "पश्तो भाषा" में "चारबैत" गाने की परम्परा थी। जब 18वीं शताब्दी में रुहेला पठानों का प्रशासन समाप्त हो गया और रियासत रामपुर स्थापित हो गयी तो "चारबैत" पश्तों के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं में गाये जाने लगे और उनकी लोकप्रियता भी बढ़ गयी। "चारबैत" के लिए कोई एक शीर्षक नहीं था। उसको खुशी और शोक, दोनों मौकों पर गाया जाता था। बारह मासा की भॉति उसको प्रत्येक मौसम में गाया जाता था। प्रायः सावन के महीने में "चारबैत" अधिक गाये जाते थे। ऐसे "चारबैत" को "बरसाती" या "मल्हार" कहा जाता था। प्रत्येक वर्ष उन तारीखो मे जब धार्मिक त्यौहार होते थे, "चारबैत" गाने का प्रबन्ध किया जाता था। अगर कोई घटना घटती, तो उसको भी "चारबैत" में प्रस्तुत किया जाता था। उदाहरणर्थः जब रामपुर के नवाब अली मोहम्मद खाँ की 19 अगस्त 1974 को हत्या कर दी गयी, तो इस घटना की पर "अब्दू" ने 'चारबैत" कविता की रचना की। इस समय जो उर्दू के प्रसिद्ध कवि थे और जिनके पद अधिक प्रसिद्ध थे उन पर भी "चारबैत" कविता की गयी। इस प्रकार "चारबैत" का दायरा विस्तृन हो गया जिसके कारण वह अधिक प्रसिद्ध हुआ।

"चारबैत के दो भाग होते हैं– प्रथम भाग "सिरा" कहलाता है। और द्वितीय भाग को पश्तो मे "कड़ी" और उर्दू में "बन्द" कहते हैं। "सिरा" में कभी एक पंक्ति होती है और कभी दो पक्तियां होती हैं जो आपस में पधक होती है। "बन्द" में पंक्तियों की संख्या निश्चित नहीं होती। चार पंक्तियों के बन्द को कडबन्द कहा जाता है। "कडबन्द" में तीन पंक्तियाँ "पधक" होती है। चौथी पंक्ति में "सिरा" के साथ "पधक होता है। अगर पंक्ति के अन्तिम भाग में दूसरी पंक्ति का प्रथम भाग बनाया जाता है तो एसे "चारबैत" को "जंजीरी" कहते हैं। कभी–कभी "जंजीरी चारबैत" में फारसी के टुकड़े भी जोड़े जाते थे। जिनका उद्देश्य "चारबैत" को अधिक प्रभावशाली बनाना था। इसके अलावा प्रत्येक पंक्ति में अतिरिक्त पंक्तियां भी बढ़ा दी जाती थी जिसको "मुस्तजाद" कहते थे। इसका उद्देश्य भी "चारबैत" को प्रभावशाली बनाना था। "चारबैत" ताल में लिखे जाते थे और इनमें उचित भाषा की पंक्तियों का प्रयोग किया जाता था। परन्तु "चारबैल" को अधिक प्रभावी बनाने के लिए यदि कोई शब्द उचित नही होता, तो

कभी–कभी उचित शब्द का प्रयोग नहीं भी किया जाता था। बस इतनी बात ध्यान में रखी जाती थी कि "दफ" की थाप गाने वालों के अनुरूप हो। "चारबैत" में साहित्यिक आवश्यकताओं की तुलना में सुनने वालों के आकर्षण का ध्यान अधिक रखा जाता था। इसी कारण "चारबैत" अधिक लोकप्रिय हो गया।

रामपुर में "चारबैत" के लेखकों को नवाबों की सहायता प्राप्त थी। विशेष रूप से 19वी शताब्दी में नवाब "कल्बे अली खाँ" के शासनकाल में रामपुर के "बेनज़ीर बाग" में नारंगियों के वृक्षों के नीचे "चारबैत" के अखाड़े बारी–बारी लगते थे। यहाँ "चारबैत" निरन्तर गाया जाता था। जब भी नवाब साहब "बेनज़ीर बाग" से गुजरते थे, चारबैत गाने वालों को पुरस्कार देते थे। रामपुर से ही चारबैत की परम्परा दूसरी पठान रियासतों अर्थात "टोक" तथा "भोपाल" में भी पहुँची। "चारबैत" के एक गुरु "जान मुहम्मद खाँ" ने बरेली में भी एक अखाड़ा स्थापित किया था। बरेली में भी "पीरबहोड़ा" के स्थान पर "चारबैत" का "अखाड़ा" लगता था। परन्तु बरेली मे "चारबैत" का प्रचलन अधिक समय तक नहीं रहा और न ही बरेली में किसी "चारबैत" के गुरु या "अखाड़े" का नाम मिलता है। रुहेलखण्ड के दूसरे जनपदों में भी "चारबैत" के सम्बन्ध मे कोई सूचना नहीं मिलती हैं। "चारबैत" की परम्परा रामपुर से ही पड़ी थी, जिसका रामपुर में आज भी प्रचलन है। "चारबैत" के माध्यम से भी रामपुर के पठानों की संस्कृति को पहचाना जा सकता है।

रामपुर के "चारबैत" के लेखकों में (जिनका सम्बन्ध 18वीं और 19वीं शताब्दी से था और जिन्होंने "चारबैत" को विकसित किया) उनमें अब्दुल करीम खाँ, महबूब खाँ अम्बर शाह खॉ अशीफता, किफ़ायत उल्ला खाँ, किफ़ायत गुलाम नबी खाँ, सबर मियाँ खाँ अब्दू और जलिदल आदि प्रसिद्ध हुए।

राजा लाईब्रेरी रामपुर में "चारबैत" की कई पांडुलिपिया उपलब्ध हैं। "शब्बीर अली खॉ शकेब रामपुरी "की "चारबैत" पर एक पुस्तक का प्रकाशन भी हुआ है। यदि उर्दू के शोधकर्ता कार्य करते रहे, तो आशा है कि "चारवैत" को उर्दू साहित्य में शामिल कर लिया जायेगा। चारबैत की पश्तो बोलने वाले पठानों ने परम्परा डाली थी। अतः "चारबैत" के माध्यम से पठानों की परम्परा उनके व्यवहार, उनके समय की संस्कृति और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं की सूचना मिल सकती है। चारबैत के दो उदाहरण इस प्रकार हैं –

1. हमेस खिंची तेगेयार देखिए कब तक रहे
सर का ये गर्दन पर बार देखिए कब तक रहे
वायदा जो करके गये देखिए वह आये कब
प्यारी वह सूरत हमें देखिए दिखलाऐ कब
फुर्क तेजाना के दिन देखिए अब जाये कब
इसका हमें इन्तेजार दिखाये कब तक रहे।

2. मैं मौसम–ए–बरसात मे हूँ जान से आरी
जीना हुआ भारी
परदेस को पिया जिस वक्त घर से सीधारें,
दिल पर चले आरे
फुर्क्त में तड़पती हूँ यहाँ विरहा की मारी
जीना हुआ भारी
क्या मैने ख़ता की थी जो तू घर नहीं आया
परदेस बसाया
इस रैन अंधेरी में हूँ मै काँपती सारी
जीना हुआ भारी
बरसात के मौसम में जुदा हो गया जानी
कहूँ किससे कहानी
दिन रात तड़पकर मैं हुई जान से आरी
जीना हुआ भारी
ये मौसम–ए–बरतास है इक धूम मची है
घर–घर में खुशी है
मैं गमज़दा करती हूँ यहाँ गिरया–ओ–जारी
जीना हुआ भारी
कासिद तू खबर जाके "जलिदल" का भी ला दे
बस हाल सुना दे
कह देना कि घर आओ पिया तुम पे मैं वारी
जीना हुआ भारी,

(2) ढोला :

विभिन्न स्थानीय लोक कथाओं पर आधारित संगीत की यह विधा रुहेलखण्ड क्षेत्र की विशेषता है। "मारु का गौना" नाम लोककथा इसी प्रकार की लोक कथा है। जिसे प्रायः ढोला गायन का आधार बनाया जाता है। ढोला गायन में बरेली जिले के चनहेटी ग्राम के निवासी श्री ओम प्रकाश उर्फ प्रकाश भैया का स्थान सर्वप्रमुख है। स्थानीय देहाती भाषा में गाए हुए इनके गीत सहज रूप से किसी को भी अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम हैं। ढोला गायन में निम्नलिखित वाद्यों का प्रयोग किया जाता है –

1. बैन्जो (वादक – अशरफी लाल)
2. ढोलक (वादक – बाबू अली)
3. मजीरा (वादक – कृष्ण अन्जान)
4. खजरी (वादक –
5. चंग झंकार (वादक – सुरेन्द्र कुमार)

श्री ओम प्रकाश द्वारा गाए गीतों के कैसेट बड़ी मात्रा में स्थानीय बजारो तथा अन्य दूरस्थ नगरों में उपलब्ध हैं।

3. आलहा :

आलहा एक लम्बे समय से चली आ रही लोक कथाओं का नायक है। इसकी कथाओं को आधार बनाकर रुहेलखण्ड क्षेत्र में एक विशिष्ट गायन प्रथा को जन्म मिला जिसको "आलहा" नाम से जाना जाता है। इस प्रथा के गीत भी स्थानीय देहाती भाषा में है।

4. भारतीय संगीत के लिए रुहेलखण्ड की देन–सहसवान–रामपुर घराने का संगीत :

भारतीय संगीत अनेक क्षेत्रों और राज्यों के संगीत को अपने भीतर समहित किए हुए है। वास्तव में अनेकता में एकता भारतीय संगीत की प्रमुख विशेषता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सहसवान रामपुर घराने का योगदान अतुलनीय है।

सहसवान बदायूँ जिले में स्थित कस्बे का नाम है, जो 13वी शताब्दी से ही संगीत और साहित्य का केन्द्र रहा है। 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सहसवान में शाहबुद्धौला और कुतुबुद्धौला नामक दो संगीतज्ञ हुए, जो कि बाद में अवध के नवाब के दरबारी संगीतज्ञ थे। इनके शिष्य महबूब हुसैन खाँ ने अपना जीवन सहसवान में व्यतीत किया। यह ख़्याल शैली के गायक थे। महबूब हुसैन खाँ सितार वादन में भी निपूण थे। महबूब हुसैन खाँ ने अपने तीन पुत्रों को भी संगीत की विधिवत शिक्षा प्रदान की। इनमें से अली हुसैन तथा मुहम्मद हुसैन ने बीन नामक वाद्य को अपनाया जबकि इनायत हुसैन ने गायन को अपनाया। अपने पिता से संगीत की शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त तीनों भाई रामपुर चले गए। रामपुर इस समय संगीत का एक प्रमुख केन्द्र था। इनायत हुसैन खाँ ने रामपुर जाकर उस्ताद बहादुर हुसैन खाँ की शिष्यता ग्रहण की। बहादुर खाँ 18वीं शताब्दी के कुशल संगीतज्ञों में थे। इनायत हुसैन खाँ ने बहादुर हुसैन खाँ की शिष्यता में संगीत की घोर साधना की और स्वयं को एक कुशल संगीतज्ञ के रूप में स्थापित करने में सफल रहे। इनायत हुसैन खाँ मात्र 17 वर्ष की आयु में संगीत के क्षेत्र मे बुलंदियों पर थे। इस प्रकार उनकी इस सफलता के पीछे सहसवान और रामपुर घरानों की पृष्ठभूमि थी। उस्ताद इनायत हुसैन खाँ के फन से प्रभावित होकर रामपुर के नवाब ने उन्हें अपने दरबार में आमन्त्रित किया और उन्हें अपना दरबारी संगीतज्ञ बनाया। यहीं से संगीत के एक घराने का प्रारम्भ हुआ। चूँकि इनायत हुसैन खाँ की संगीत कला में सहसवान और रामपुर दोनों ही स्थानों का योगदान था, अतः इस घराने को सहसवान रामपुर घराने के नाम से जाना गया। उस्ताद इनायत हुसैन खाँ को जयपुर, दतिया, हैदराबाद, ग्वालियर और नेपाल के दरबारों में आमन्त्रित किया गया, जहाँ उन्होंने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद हद्दू खाँ इनायत हुसैन खाँ से अत्यन्त प्रभावित हुए और उनसे अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। इस विवाह संबध के पश्चात् रामपुर घराने ने ग्वालियर घराने से संगीत के क्षेत्र में काफी कुछ ग्रहण किया।

उस्ताद इनायत हुसैन खाँ के अनेक शिष्य हुए जिनमें मुश्ताक हुसैन खाँ विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। मुश्ताक हुसैन खाँ सहसवान के निवासी थे किन्तु बाद में यह रामपुर में बस गए। मुश्ताक हुसैन खाँ ख्याल गायकी में सिद्धहस्त थे। इसके अतिरिक्त बन्दिश तथा रामसागर पर भी मुश्ताक हुसैन खाँ की मजबूत पकड़ थी। उनकी कला से प्रभावित होकर रामपुर के तत्कालीन नवाब ने उन्हें अपना दरबारी संगीतज्ञ बनाया। शनै–शनैः उस्ताद मुश्ताक हुसैन खाँ की शोरहत

बढ़ती गई और अनेक संगीत प्रेमियों ने उनकी शिष्यता ग्रहण करी। संगीत पर उस्ताद मुश्ताक हुसैन खाँ की पकड़ का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि शास्त्रीय गायकी के क्षेत्र में प्रथम ''पद्म भूषण सम्मान'' सन् 1957 में उन्हीं को प्राप्त हुआ।

सहसवान–रामपुर घराने के अन्य गायकों में हामिद खाँ, साबिर हुसैन खाँ (इनायत हुसैन खाँ के पुत्र) इश्तियाक हुसैन खाँ (उस्ताद मुश्ताक हुसैन खाँ के पुत्र) और उस्ताद निसार हुसैन खाँ प्रमुख थे।

वर्तमान में सहसवान रामपुर घराने के प्रमुख गायकों में उस्ताद सखावत हुसैन खाँ ''निशात'' (पुत्र उस्ताद इश्तियाक अहमद खाँ) उस्ताद हफीज अहमद खाँ, उस्ताद गुलाम हुसैन खाँ तथा राशिद हुसैन के नाम उल्लेखनीय हैं।

सहसवान रामपुर घराने की विशेषताएं :

सहसवान रामपुर घराना मूलतः ख्याल गायकी पर आधारित है। इसके अतिरिक्त बन्दिश तथा सरगम भी इस घराने की प्रमुख शैलियां हैं। इस घराने के गायकों की पकड़ भैरव, जय जयवन्ती, केदार, गंड सरंग, गंड मल्हार इत्यादि पर भी रही है।

आज सहसवान रामपुर घराना अपनी स्वर्णमयी संगीत यात्रा के 150 वर्ष पूर्ण कर चुका है। वर्तमान में भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में रामपुर घराने की एक अलग पहचान है। आज की पीढ़ी के उस्ताद सखावत हुसैन खाँ उन युवा गायकों में से हैं, जिनसे संगीत की दुनिया को बेशुमार उम्मीदें हैं। उस्ताद सख़ावत हुसैन खाँ सहसवान–रामपरु घराने की पुरानी परम्परा को तोड़ना नहीं चाहते, इसीलिए वह आज भी रामपुर शहर से जुड़े हुए है और संगीत की सेवा में रत है।

●

गीत–संगीत पर आधारित लोक नाटिकाएँ

मनुष्य ने अपने मनोरंजन के निमित्त विभिन्न कलाओं को जन्म दिया। ये कलाएं मनोरंजन का साधन तो थीं ही, साथ ही इनमें से कुछ कलाओं के माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं, संदेशों तथा सामयिक घटनाओं को भी जनमानस तक पहुँचाया गया। ऐसी कलाओं में अभिनय कला सर्वोच्च स्थान पर थी। अभिनय कला का गीत–संगीत से गहरा सम्बन्ध रहा है। भारत के लगभग हर प्रान्त में ऐसी अनेक लोकनाटिकाएं प्रचलित हैं, जो गीत–संगीत पर आधारित हैं। ऐसी लोकनाटिकाएं पूर्णतया परम्परागत है। इस प्रकार की लोक नाटिकाएं रुहेलखण्ड की लोक संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। लोक नाटिकाओं की इन स्थानीय शैलियों में "स्वाँग" और "रसिया" का विशिष्ट स्थान है।

1. स्वाँग :

"स्वाँग" प्रकार की नाटिकाओं का केन्द्र बिन्दु रामायण, महाभारत तथा अन्य पौराणिक कथाएँ हैं। वास्तव में स्वाँग में किसी सम्पूर्ण कथा का प्रस्तुतीकरण न करके अमुख कथा के एक अंश–विशेष को प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार की नाटिकाओं में सवांद के साथ–साथ गायन का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। नाटिका के दौरान पृष्ठभूमि में संगीत की निरन्तरता बनी रहती है। इस संगीत में अग्रलिखित यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है –

1. नगाड़ा
2. हारमोनियम
3. ढोलक
4. मजीरा

रोचक तथ्य यह है कि स्वाँग में प्रायः पुरुष कलाकार स्त्री चरित्र को निभाते हैं।

रुहेलखण्ड क्षेत्र में "स्वाँग" परम्परा को बनाए रखने में बीसलपुर (बरेली से पूर्व दिशा में स्थित) की राधारानी जी का उल्लेखनीय योगदान है, जो स्वंय भी स्वाँग में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं।

2. रसिया :

स्वाँग की ही भाँति "रसिया" प्रकार की लोग नाटिकाएँ संगीत पर आधारित हैं। समाज मे व्याप्त विभिन्न कुरीतियाँ प्रायः इन नाटिकाओं का विषय हैं।

विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर शाम ढले गाँवों की चौपालों पर इनका प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इन नाटिकाओं के केन्द्रो में बिथरी चैनपुर, भोजीपुरा तथा पश्चिमी फतेहगंज के कुछ गाँव (सभी बरेली के निकट स्थित) हैं। "रसिया" के कलाकारों में निम्नलिखित का स्थान प्रमुख है –

1. माया देवी इलाहाबादी (शाहजहाँपुर)
2. डोरी लाल तथा पप्पू (बिथरी चैनपुरी निवासी)
3. जामन लाल तथा लक्ष्मी नारायण (ग्राम – क्यारा, निकट बरेली, निवासी)

इस लोक नाटिका में प्रयुक्त वाद्ययन्त्रों में हारमोनियम तथा ढोलक प्रमुख हैं।

लोक साहित्य

भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की मानवीय लालसा ने विभिन्न माध्यमों को जन्म दिया। लेखन, संगीत तथा विभिन्न प्रकार की कलाएँ इन्हीं माध्यमों में से थीं। अपने मनोभावो, विचारों तथा समस्याओं को अभिव्यक्त करने के लिए लेखन कला एक सशक्त माध्यम के रूप मे विकसित हुई। प्राचीन काल से वर्तमान तक की काल यात्रा में भारतवर्ष तथा विश्व के अन्य देशो मे ऐसे असंख्य लेखक हुए हैं, जिन्होंने अनेक विषयों को आधार बनाकर साहित्य रचना में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

भारतीय साहित्यकार शुरु से ही विश्व साहित्य के क्षेत्र में उच्च स्थान पर रहे हैं। रुहेलखण्ड क्षेत्र भी साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। रुहेलखण्ड में ऐसे अनेक साहित्यकार हुए हैं, जिन्होंने विविध विषयों पर साहित्य की रचना की है। इन साहित्यकारों का परिचय इस प्रकार है –

1. बच्चू सूर
2. भक्त कवयित्री कृष्णाप्यारी "दासी"
3. पं० राधेश्याम कथावाचक
4. पं० झब्बीलाल मिश्र "हकीर"
5. पं० नारयण दास पाराशरी "शोला"
6. लाल दास
7. पं० जागेश्वर प्रसाद
8. पं० छोटे लाल दीक्षित
9. श्री मन्नारायण

1 बच्चू सूर :

अब से लगभग 50 वर्षों पूर्व पीलीभीत जिले के जमुनिया ग्राम के निवासी पंडित बच्चुलाल आयु कवि, "बच्चू सूर" के नाम से प्रसिद्ध थे। हाँलाकि उस समय कवि सम्मेलनों का अधिक प्रचार नहीं हुआ परन्तु आर्य समाज और सनातन धर्म संस्थाओं के आयोजन प्रायः अनेक स्थानो

पर होते रहते थे। इन धर्म सभाओं में बच्चू सूर की कविताओं का एक पृथक कार्यक्रम रखा जाता था। बच्चू श्रोताओं की छोटी से छोटी समस्या की पूर्ति बहुत आसानी से करते थे। बच्चू सूर जनता के कवि थे। उन्होंने अपना परिचय निम्न प्रकार से दिया है –

"खीरी जिला विच वास करे हम, मैगलगंज में पोष्ट विचारो।
नम्र को नाम जमुनियां है, तेहि मध्य में राजत धाम हमारो।
ब्राह्मण वंश में जन्म लियो शुचि छन्दन को रस प्राण से प्यारे।
सूरजी सत्य ही कहो मम यही पता हिय बीच में धरो।

एक बार उन्हें नागरी शब्द की पूर्ति करने को दी गयी। इस पर सूर जी ने एक हरि गीतिका छंद बनाकर संनाया –

"जेहि मध्य है श्रुति चार जिनमें सुभग ध्वनी अमृत भरी।
है जिती विधा अन्य देशन सकल मध्य उजागरी।
सो धरहु चित में पढ़हु याको सकल उपभो भरी।
कवि सूर बच्चू मति बिसारो मातृ भाषा नागरी।

सूर जी किसी भी समस्या का समाधान अपनी भाषा में बहुत आसानी से कहा करते थे। एक प्रश्न कि चकोर जब–जब चन्द्र के भ्रम में अंगार खाने लगता है, तब उसकी जीभ और चोंच जल जाती होगी; फिर भी वह इस लगन को नहीं छोड़ पाता। इसका क्या कारण है? सूर जी ने इस का उत्तर घनाक्षरी छंद में इस प्रकार दिया –

हम बासें भूमि पर हमारो मित्र अकाश,
हाम चन्द्र मित्र से मिलन न पायेगें।
यासे वन्हि चिनगी चबाय चारू चोंचन से
अपने शरीर से भसम बनायेंगे।
बास कैहास तजि आवैं शम्भु भूमि तल,
मेरी भस्म हाथ लेकर सुतन लगायेंगे।

शम्भू के सुभाल बीच सोहत विशाल विधु,
भस्म ही होके मित्र तन लिपटायेगें।

प्रेम की प्रशंसा करने के लिए सूर जी ने बहुत ही भावुक पंक्तियों का प्रयोग किया है। एक व्याध वन में वीणा बजाकर एक मृग को मोह लेता है। मृग वीणा की ध्वनी से इतना मंत्र–मुग्ध हो जाता है कि व्याध के तीर से मार दिया जाता है। मृग मरने से पूर्व एक याचना करता है कि "हे व्याध एक बार वीणा की मधुर झंकार सुना दो।" सवैया और घनाक्षरी के माध्यम से श्री बच्चू सूर जी ने अपनी इस बात को बड़ी सहजता के साथ कह दिया –

"उत्तम कानन् पाय भली विधि व्याध ने जाय के वीणा बनाई,
प्रेम में नेभ के भूलि गयो मृग ताने सुनै लगो कान लगाई।
वीणा बजावत ही धनु तानि के तीर हन्थो उर लक्ष्य बनाई,
लागें विषंग कुरंग गिरेउ महि व्याधि से दीन गिरा प्रकटाई।"

"अमिष हितार्थ तैने लीने हमारे प्राण मांस बनवारी परिवारिन खिलाय दे।
मेरे सर श्रृंगन की अवश्य श्रंगी नाद करि मेरो तन धर्म ब्रहमचारिन गहाय दे।
ऐरे मित्र व्याध करबद्ध प्रार्थना है एक मेरी अभिलाषा यह ततक्षण पुराय दें।
जौन वीणा काज मैने आज आय दीन्हे प्राण मरत हूँ एक बार वीणा को बजाये दे।"

प्रकृति वर्णन के छन्द भी सूर जी ने रचे। बसन्त का छन्द, जिसमें श्याम बन माली की प्रतीक्षा में एक गोपी अपने दुःख का वर्णन कर रही है, इस प्रकार है –

"आली बनमाली दिन मदन क्रुचाली यह,
करत विघती तन मेरो दीन्त है।
श्याम गयो श्याम गयो, सुखद विश्राम गयो,
सुखमय आराम गयो, दुःख प्रगटन्त है।।
और ऋतु आबई, पियराई छोई ऐसे झूठ
मैं भी पियराई बैठि रोवत एकान्त है।
कुंज बसन्त में सुआती नाहिं कान्त हैं।

2. भक्त कयवित्री कृष्णाप्यारी 'दासी' :

19वीं शती के अंतिम दशकों में इस कवयित्री ने संभल के एक प्रतिष्ठित और धनी सक्सैना (कायस्थ) परिवार में जन्म लिया था। इन्होंने अधिकांश भजनों में स्वयं के लिए कृष्णा दासी नाम का प्रयोग किया है। कवयित्री ने दो दोहो में अपना परिचय इस प्रकार दिया है –

"नैहर संभल नगर में, कोल शहर ससुराल
वर बृजमोहन लाल से दमेअशिव त्रिपुरार
पुत्री मिट्ठन लाल की कृष्णा प्यारी नाम
भागनी हीरा लाल की सविनय करति प्रणाम्।

कवयित्री कृष्णा प्यारी की एक पुस्तक "प्रेम रस मंजीर" तीन संस्करणो में छपी है। इसमें 85 भजन और होली आदि का संग्रह है। उन्होंने लोक शैली में "भजन–रामायण" और 'रामकथा' को लेकर अनेक पद रचे हैं।

कवियत्री ने विविध छंदों में अपनी भक्ति भावना को प्रस्तुत किया है, इसके उदाहरण हैं–

वंदना गणेश :

ऋद्धि सिद्धि सागर गुणज्ञान बुद्धि आगर
त्रैलोंक में उजागर तुम नाशत भ्रम भारी है
मंगल शुभकरण हार विघ्न के हरन हार
दाता उदार सोतो हारयो भंड़ारी है
सेवत ऋद्धि सिद्धि सार ठाढ़े मुनिदेव द्वार
महिमा अपार आदि वेदन उचारी है
आनंद के कन्दन पड़े पुष्प धुप चन्दन
ऐसे पार्वती के नंन्दन को वन्दना हमारी है।

चेतावनी :

जिस गाड़ी में जाना तुमको
एक पल छिन में वो आती है।
कुछ देर नहीं बाँधे बिस्तर

घंटी उपदेश सुनाती है।
कर संट और अंजन गरजत
धर–धर जियरा मोरा लरजत है
कर्क–तर्क वतन उस देश चली
जहाँ से नहीं आने पाती है
जिस गाड़ी में जाना तुमको
एक पल छिन में वो आती है।

3. पंडित राधेश्याम कथावाचक :

पंडित राधेश्याम कथा वाचक अपनी बाल्यावस्था में अपने पिता के साथ जगह–जगह कथा करने जाते थे। कथावाचक जी जब लगभग आठ वर्ष के थे, तब एक बार अपने पिता के साथ "रूक्मणी मंगल कथा" कहने चन्दौसी गये। इस कथा के बीच–बीच में उन्होंने अपने कुछ स्वरचित गीत भी गाये, जिनको चन्दौसी की जनता ने बहुत पसंद किया। फलस्वरूप राधेश्याम जी जब बरेली वापस आये, तो उन्होंने नाटकों के गाने की तर्ज पर अनेकों भजन बना डाले। इसी मध्यान्तर में रामकथा के कई अंशों पर कथावाचक जी ने स्वरचित छन्दों को निरुपित किया. जिन्हें रूकमणी की मंगल कथा के बीच में गाया जाता था। इन्हीं छन्दों को राधेश्यामी छन्द कहा जाने लगा। छन्दों की लोकप्रियता को देखते हुये, सम्पूर्ण रामायण की रचना की गयी।

राधश्यामी छन्द मात्र पंडित राधेश्याम कथावाचक तक ही सीमित न रहे, राधेश्यामी छन्दों की लोकप्रियता को देखते हुये अन्य समकालीन बुद्धिजीवियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। इनमें बनारस के माधव शुक्ल जी, बरेली के निवासी रामसहाय "तमन्ना", चन्दौसी के 'रामरूप', पीलीभीत के ज्वाला प्रसाद, राधेश्याम कथावाचक के अनुज मदन मोहन शर्मा इत्यादि कवियों के नाम प्रमुख रूप से आते हैं।

माधव शुक्ल जी ने सम्पूर्ण महाभारत का राधेश्यामी छन्दों में अनुवाद प्रस्तुत किया।

राम सहाय "तमन्ना" ने ध्रुव चरित्र" की रचना राधेश्यामी छन्दों में की। इनकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

2. भक्त कयवित्री कृष्णाप्यारी 'दासी' :

19वीं शती के अंतिम दशकों में इस कवयित्री ने संभल के एक प्रतिष्ठित और धनी सक्सैना (कायस्थ) परिवार में जन्म लिया था। इन्होंने अधिकांश भजनों में स्वयं के लिए कृष्णा दासी नाम का प्रयोग किया है। कवयित्री ने दो दोहो में अपना परिचय इस प्रकार दिया है –

"नैहर संभल नगर में, कोल शहर ससुराल
वर बृजमोहन लाल से दमेअशिव त्रिपुरार
पुत्री मिट्ठन लाल की कृष्णा प्यारी नाम
भागनी हीरा लाल की सविनय करति प्रणाम्।

कवयित्री कृष्णा प्यारी की एक पुस्तक "प्रेम रस मंजीर" तीन संस्करणो में छपी है। इसमे 85 भजन और होली आदि का संग्रह है। उन्होंने लोक शैली में "भजन–रामायण" और 'रामकथा को लेकर अनेक पद रचे हैं।

कवियत्री ने विविध छंदों में अपनी भक्ति भावना को प्रस्तुत किया है, इसके उदाहरण हैं–

वंदना गणेश :

ऋद्धि सिद्धि सागर गुणज्ञान बुद्धि आगर
त्रैलोंक में उजागर तुम नाशत भ्रम भारी है
मंगल शुभकरण हार विध्न के हरन हार
दाता उदार सोतो हारयो भंड़ारी है
सेवत ऋद्धि सिद्धि सार ठाढ़े मुनिदेव द्वार
महिमा अपार आदि वेदन उचारी है
आनंद के कन्दन पड़े पुष्प धुप चन्दन
ऐसे पार्वती के नंन्दन को वन्दना हमारी है।

चेतावनी :.

जिस गाड़ी में जाना तुमको
एक पल छिन में वो आती है।
कुछ देर नहीं बाँधे बिस्तर

घंटी उपदेश सुनाती है।
कर संट और अंजन गरजत
धर--धर जियरा मोरा लरजत है
कर्क–तर्क वतन उस देश चली
जहाँ से नहीं आने पाती है
जिस गाड़ी में जाना तुमको
एक पल छिन में वो आती है।

3. पंडित राधेश्याम कथावाचक :

पंडित राधेश्याम कथा वाचक अपनी बाल्यावस्था में अपने पिता के साथ जगह–जगह कथा करने जाते थे। कथावाचक जी जब लगभग आठ वर्ष के थे, तब एक बार अपने पिता के साथ रूक्मणी मंगल कथा'' कहने चन्दौसी गये। इस कथा के बीच–बीच में उन्होंने अपने कुछ स्वरचित गीत भी गाये, जिनको चन्दौसी की जनता ने बहुत पसंद किया। फलस्वरूप राधेश्याम जी जब बरेली वापस आये, तो उन्होंने नाटकों के गाने की तर्ज पर अनेकों भजन बना डाले। इसी मध्यान्तर में रामकथा के कई अंशों पर कथावाचक जी ने स्वरचित छन्दों को निरूपित किया जिन्हें रूकमणी की मंगल कथा के बीच में गाया जाता था। इन्हीं छन्दों को राधेश्यामी छन्द कहा जाने लगा। छन्दों की लोकप्रियता को देखते हुये, सम्पूर्ण रामायण की रचना की गयी।

राधश्यामी छन्द मात्र पंडित राधेश्याम कथावाचक तक ही सीमित न रहे, राधेश्यामी छन्दों की लोकप्रियता को देखते हुये अन्य समकालीन बुद्धिजीवियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। इनमे बनारस के माधव शुक्ल जी, बरेली के निवासी रामसहाय ''तमन्ना'', चन्दौसी के 'रामरूप पीलीभीत के ज्वाला प्रसाद, राधेश्याम कथावाचक के अनुज मदन मोहन शर्मा इत्यादि कवियों के नाम प्रमुख रूप से आते हैं।

माधव शुक्ल जी ने सम्पूर्ण महाभारत का राधेश्यामी छन्दों में अनुवाद प्रस्तुत किया।

राम सहाय ''तमन्ना'' ने ध्रुव चरित्र'' की रचना राधेश्यामी छन्दों में की। इनकी कुछ पंक्तियॉ इस प्रकार हैं –

''कारण क्या आज चादनी मे, इस भाति मलिनता मिलती है,
आश्चर्य दिवाकर प्रस्तुत है, फिर भी न कमलिनी खिलती है,
आँखों को सुख देने वाली, आँखें क्यों विकल हो रही हैं,
काजल से कजराली काली, क्यों जल से सजल हो रही हैं।

चन्दौसी निवासी लाला रामस्वरूप ने भी श्री राधेश्यामी छंदों में संम्पूर्ण महाभारत को प्रस्तुत किया है। इसमें इनके द्वारा रचित ''कीचक बध'' प्रसंग बहुत ही प्रशंसनीय रहा है –

''दे दिया हुक्म मैमारों को एक नाच भवन सजवाने को।
कन्डील लैम्प फानूश झाड़ बिजली लाईट, लटकाने को।
सेदरी दुबारी चौबारे सब रंग रंगीले रंगवाय।
हर किस्म–किस्म के कमरों में कालीन मखमली बिछवाये।

पीलीभीत के ज्वाला प्रसाद कवि ने राधेश्यामी छंदों में ''महिषापुर बध'' की रचना की –

''संसार एक मायामय की, माया का दृश्य दिखाता है।
जिसमें पड़ ज्ञान–वान नर भी, मूरख सा चक्कर खाता है।
है देवि महामाया हरि की, जो सृष्टि जगत की करता है।
फिर पालन उसका करके बह, अपने ही में लय करती है।
संसार उसी की माया में, पड़कर भूला सा फिरता है।
मानव उसके ही कारण से, यों मोहकूप में गिरता है।

राधेश्याम कथावाचक के अनुज मदन मोहन शर्मा ने भी राधेश्यामी छन्दों में विभिन्न रचनाएं रचना कीं। इनमें से स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र एक है –

''जन्म क्यों व्यर्थ लिया, सरकार?
लिया जन्म ही था तो जग का संकट देते टार
मधुर बाँसुरी बजा प्रेम की फैलाई गोआर।
फिर यह डायन फूट रही क्यों, बोलो नन्द कुमार?

कंस और शिशुपाल के वध से, हरण हो गया भार?
उनके तुल्य यहाँ फिरते हैं, कितने दैत्य अपार।
अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं, छाये प्लेग बुखार।
'जन्माष्टमी' तुम्हारी का फिर, कैसे हो त्यौहार?
नहीं हरा है भार भूमि का फिर से हो अवतार,
इसीलिये तकं रहे एक हक, "मोहन"कारागार।

झब्बी लाल मिश्र 'हकीर' –

मुरादाबाद का नाम याद आते ही पिछली शताब्दी की अनेक संस्कृति टीकाएं, तंत्र शास्त्र के ग्रंथ और नाटक याद आने लगते हैं। इन तीनों ही विधाओं के लिये मुरादाबाद के विद्वानों की सेवाएं विशेष हैं। पं० झब्बीलाल मिश्र "हकीर" का जन्म मुरादाबाद के दीनदारपुरा मुहल्ले में सन् 1860 के लगभग हुआ था। सन् 1925 से पूर्व इनका निधन हो चुका था। हकीर जी उर्दू कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। इनकी कविताओं को पं० बल्देव प्रसाद मिश्र ने अपने एक संग्रह महामनमोहनी" में दिया है। हकीर जी "बुलबुल" और "प्रेमसखी" नाम से भी कविता करते थे। बुलबुल नाम से की गई अधिकांश कविताएं श्रृंगार परक हैं। गोपियों और कृष्ण की पनघट की छेडछाड़ और ऊधो गोपियों के संवाद जैसे विषय ही मुख्य रूप से इन्होंने बुलबुल नाम से लिखे। महामनमोहनी" के संग्रह से प्राप्त इनका राग जोगिया में दिया एक पद यहा भी दिया जा रहा है। इसमें एक नायिका अपने प्रियतम के परदेश जाने पर अपने दुःख कहती है –

"आलीरी अब कैसे जिऊँगी
मेरे पिया परदेश सिधारे यह दुख कैसे भरूंगी।
मन में मेरे ऐसो आवै जहर का प्याला पिऊँगी।
कटारी खाय मरूंगी
तैन मुझे नित आन सतावै, विरहा अगन में जरूंगी
सुनीसेज डरावन लागी, मैं बैठी तडफूंगी
हाय मैं तो रो रो मरूंगी

फागुन के दिन आये संखीरी का संग होरी खेलूंगी
सब सखियां पिया के सग सोवत, मैं किसके गले लगूंगी
पिया पिया किससे कहूंगी
बुलबुल कहै त्याग के वस्तर अंगाविभूति मलूंगी
करमें ले तुलसी की माला पियको नाम जपूंगी जोगन को वेष करूंगी।

प्रेम सखी के नाम से भी कृष्ण भक्ति की कविताएं हकीर जी ने लिखी। इनकी हिन्दी कविताएं लोक साहित्य में रखे जाने योग्य हैं। उन्नीसवीं शती में जनरूचि की सरल रचनाएं रचने की अभिरुचि लगभग सभी कवियों में थी। भारतेन्दु और पं० प्रताप नारायण मिश्र ने ऐसी अनेक लोक रूचि की कविताएं लिखी, जिनका संग्रह "महामनमोहनी" में विशेष है। हकीर जी का एक बारहमासा देखें। इसमें गोपियां कृष्ण के विरह में डूबी ऊँधों से अपने बारह मासों का कष्ट बता रही हैं –

कातिक आया सजे सब मंदिर अगन लिपाय सखी चंदन से रे।
भई है न हरि विन दीपमालिका ब्रज में ब्रजवालन में रे।
यमुनाजल स्नान करतही ब्रजवनिता सब आगहनमें रे
इक दिन चीर है मनमोहन आय गये किस से छिन मरे।
पूष में रूष गये हरि जब से फिर नाहिं आये ब्रजवनितन में रे।
आप न आये अपने बदले में पठयों ऊँधों को योग वियोगन मेरे।
माघ वसंत धरै सब्रके शिर अतर अगावै सब वस्त्र मैं मेरे।
हमरों बसन्त हरो कब जाने मोहिलिये हरिसेनन में रे।
फगुआ फीको रंग लाले बिन उड़त गुलाल न ग्वालन में रे।
रोम रोय नयन भये पिचकारी होरी भई ऐसी फागुन मेरे।
वारह मास व्यतीत भये मन लाग रहो हरि दर्शन में रे।
प्रेम सख़ी की यही पर दीजौ राखिलेहुमोहि चरणन में रे।
छोड़ गयो हरि वारी उभर में मन की रही ऊधों मन में रे।

पं० झुब्बीलाल मिश्र मुरादाबाद के प्रसिद्ध लेखक पं० कन्हैया लाल मिश्र के ताऊ थे। इनके पिता का नाम पंडित शिवदयाल मिश्र था। पं० झब्बीलाल जी ने सरल हिन्दी में कुछ काव्य रचे थे जो अपने समय में लोकप्रिय रहे। इनके द्वारा रचित लोक काव्यों में संगीत हीरापारी व लाल शहजादा, सब्जपारी महरू शहजादा, सनोवर परी व गुल शहजादा, परीरू व गुलरू, राजा परीक्षित अधर जोगन आदि प्रमुख है।

इनकी रचना, "प्रेम सरिता" को वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई ने प्रकाशित किया था। सन् 1926 मे प्रकाशित "प्रेम सरिता" में दान लीला, गेंद लीला, मुरली लाल, रास पंचाध्यायी, मुकुर लीला रूपधारण लीला, हिंडोर लीला, और उद्धव वृन्दावन गमन लीला, नाम के आठ अध्याय हैं। पूरे ग्रथ मे चौबीला छन्द का प्रयोग किया गया है एक चौबीला इस प्रकार है –

एक समय घनश्याम ने कियो मेरो सिंगार
निज करसों चोटी गुथी मोतिन मांग संवार
मोतिन मांग संवार श्याम बैंदी बैना पहिराये
नाक बीच नथ और कान में करन फूल लटकाये,
ऊधों जी शिर औदनी उतार मुझे सारी पहिराई
उनहीं श्याम ने ऊधों हाथ भभूत पठाई
पहुँची हाथ पांच में नुपूर सुन्दर चीन चढ़ाए
उन्हीं श्याम माटी के मुद्रा ऊधों हाथ पठाये।

मिश्र जी ने "प्रेम सरिता" में गद्य का भी यत्र तत्र प्रयोग किया। भाषा का यह उदाहरण अपने में पर्याप्त रोचक है। यह पंडिताऊ भाषा पुराने संस्कृत के टीकाकारों द्वारा प्रयोग में लाई जाती थी। एक अंश देंखें –

"ऐसे कहि श्री कृष्णचन्द्र वृषभान सुता को साथ ले अंतर्धान भये और एक वृन्दावन की कुज मे जाय पतन को बिछौना कर श्री राधा सहित विश्राम कियों फिर राधिकासों हरि कही कि हे प्यारी! मैं तेरो श्रृंगार करूं। यह कहकर फिर श्रृंगार करने को उपस्थित भये और जब प्रथम चोटी गुहन बैठे तब प्यारी के मुख देखन में अंतर हुआ। इससे हरि व्याकुल हो गये। तब प्यारी प्रीतम को विकल जान दर्पण अपने हाथ में लिया और अपने चन्द्रमुख हरि को दिखायों। फिर हरि प्रियो को देखिवे लगे।"

5. नारायण दास पाराशरी 'शोला' :

बदायूँ के लोक कवियों में पं० नारायणदास पाराशरी जी प्रसिद्ध रहे हैं। ये कविता में अपना नाम 'शोला' लिखते थे। शोला जी द्वारा रचित रामायण गाँव–गाँव में प्रचलित रही है। "शोला" जी की रची हुयी आला खड़ी बोली में थी, जिस पर बदायूँनी भाषा का पूरा–पूरा प्रभाव था। इनके समकालीन अन्य कवि मुंशी त्रिलोक चंद, मुंशी दयाशंकर, पं० खैराती लाल "निंदा", ठाकुरी सिंह "अख्तर" और मुंशी कल्याण राय आदि थे।

पं० राम गुलाम मिश्र, जो कि पाराशरी जी के ही समकालीन थे, ने ये पंक्तियों जी के बारे में लिखीं –

"बानी रस सानी सुनि शारदा सिंहानी
इस सृष्टि की कहानी चौबोला में वखानी है
काव्य रस प्यासे जो फिरत हैं निरासे
पी कविता के बताशे बुद्धि, तिनकी छबानी है
कविवर अनमोला प्रथम गावै बंभोला रामा
गुणचौबोला करि मुक्ति की निसानी है।
कृपा करै भोला और जीवै शौला
देखि इनके चौबोला बुद्धि कबिनु की बिकानी है।

लालदास :

लालदास जी बाँस बरेली के कवि थे, हांलाँकि बाँस बरेली के लाल दास के बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है, किन्तु भरत की बारामासी के अंतिम छंद में उनकी सामान्य चर्चा है–

"नब्बे साल लोंद की भादों
अगहन गहन परयो
बांस बरेली के लाल दास ने
राम नाम उचर यो
भरत की यह बारामासी
गावैं सुनें परम् पद पावैं

कहे यम की फांसी
वैदहि मिलि ऐसे ही गाई
करम लेख नहीं मिटे
करां कोई लाखन चतुराई।

लालदास की "बारहमासा भरत का" नामक रचना सन् 1870 में बरेली से प्रकाशित हुई थी जिसकी एक प्रति "इंडिया हाउस" लन्दन में सुरक्षित है। हमारे पास इसकी दो प्रतियां उपलब्ध हैं। पहली प्रति में 8 पृष्ठ हैं और वह लीथो पद्धति से मतबअ जहांगीरी में छपी थी। दूसरी प्रति मुल्ताजमल प्रिंटिग प्रेस नीमच से प्रकाशित "बड़ा सूर्य पुराण" में है। इसका रचना काल सन् 1833 है।

इस जन कवि की छंद योजना भी उत्तम श्रेणी की है। यहां उसे सम्पूर्ण दिया जा रहा है—

चैत पीछले पाख राम नौमी को जन्म लियो,
अवधपुरी सुख धाम सखिन मिलि मंगल चार कियो
खबर जब दशरथ ने पाई,
दिये दान गज वाज गऊ दिन थोरे की ब्याई
सभा सब प्रफुलित व्हे आई
कर्म लिखी जा मिटै करो कोई लाखो चतुराई

लागत ही वैशाख केतकी वावरि करि डारी
भरत कहै धृक हमरो भई जब तुम सी महतारी
दुःख सब नगरी को दीये,
तीन लोक के नाथ राम तैने वन वासी कीये
कूरमति कैसी वनि आई
कर्म लिखी न मिटे करो कोई लाखो चतुराई

जैठ जुरे सब पंच भरत को गद्दी बैठारो
भरत धरत कानन पै हाथ नाथ मोहि गरदन क्यों मारो

सरे जहिं इन वातज काजा
तीन लोक के नाथ नाम वे अयुध्या के राजा
बात यह सबके मन भाई
कर्म लिखी ना मिटे करो कोई लाखे चतुराई

7. पंडित जोगेश्वर प्रसाद :

जोगेश्वर प्रसाद जी चन्दौसी में होने वाली कवि गोष्ठियों में नियमित भाग लेते थे और यहाँ पर दी जानी वाली समस्याओं की पूर्ति करते थे। पं० जोगेश्वर प्रसाद कृत एक छंद –

काम की जो पाई देह रामनाम ही के हेतु
रतन लगावे अब क्यों न हरिनाम की
नाम रटन ही ते कलेश दुःख भाग जाय
प्राप्त हो तोय खानि अमित आराम की।
राम की कृपालुता से भव सिन्धु पार होय
सीधे तू पहुँचगाये शरण राम की
श्याम जी की जो छवि अभिराम न बिलौकी जोपै
व्यर्थ गयो जीवन तो ये आँखें कौन काम की।

8. पंड़ित छोटे लाल दीक्षित 'द्विज दास' :

ये भी चन्दौसी के प्रतिभाशाली कवि थे। पं० छोटे लाल दीक्षित के एक भाई कर्ण बास की दुष्टों के द्वारा गंगा में डुबोकर हत्या कर दी गई। दीक्षित जी की आत्मा को इस घटना से अपार कष्ट हुआ और उससे दुःखी होकर जो उन्होंने छंद रचे, वे साहित्य की निधि हैं। इनमें से कुछ छद इस प्रकार हैं –

"मौन क्यों हो कर्णवास के निवासी सब
मेरी अरजी को नैक चित में धरो नहीं
"द्विज दास" आरत पुकारत है बार–बार
द्वार–द्वार डौले दीन दुःख के हरो नहीं
अंध के सहारी प्राण धारो जैनारायण
कैसो गयो मारो सो बतावो सो ड़रो नहीं"

"कौन से कसाईन नसाई मोर आशा लता
माहिर सबै हो ताहि जाहिर करो नहीं
सिंह के सम्हारो खड्ग खप्पर त्रिशुधारी
वेगि ही पधारो द्विजदास प्रति पालिका
मौन क्यों सभी हो फिरि कौन पै फिराउ जाय
वेगि ही संहार करो शत्रु कुल सालिका
मारि–मारि दुष्टन के वंश निरवंश करो
राकहु वयै ना नरनारि बाल–बालिका
जौन–जौन जानि के हुबायो जै नारायण
तौब दुख देवा को कलेवा करो कालिका।

9. श्री मन्नारायण :

श्री मन्नारयण चन्दौसी के प्रतिष्ठित और प्रतिभावान कवि रहे हैं। इनके अनेक कवि शिष्य भी थे। श्री मन्नारायण द्वारा रचित "संगीत सुदामा चरित्र" ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ, जिसमें कृष्णा की शोभा पर छंद लिख गए हैं –

"मारे पच्छवारो स्वच्छ माथे पे मुकुट सोहे
श्री मनु सु सोहे मन कुण्डल हिलोर है।
पति पर अंग लसे काछनी विचित्र करने
मन्द–मन्द हँसे चित चो बर जोर है।
अति छवि बारी अरी। गुजमाला न्यारी
चल देख उठ प्यारी! माल केसर की खारे है
मुख में तमोल मनो खूबी के खजाने खोल
ढाढ़ों नन्दजू की धौरि नन्द को किशोर हैं।

रुहेलखण्ड के मेले

नाना प्रकार के मेले प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं। वास्तव में एक दूसरे के निकट आने और आपसी सहयोग और सौहार्द की भावना ने मेलों को जन्म दिया जिसकी झलक वर्तमान भारत में भी देखी जा सकती है। यहाँ एक ओर हम विज्ञान, तकनीक और विभिन्न क्षेत्रों में निरन्तर विकास कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर हम अपने पारम्परिक मेलों से भी उसी प्रकार आबद्ध हैं जैसे कि दूर के अतीत में थे।

"मेला" शब्द का अर्थ है "मिलन"। विस्तारपूर्वक मेला शब्द को इस प्रकार व्याख्यायित किया जा सकता है– "मेला वह है जहाँ पर विभिन्न समुदाय के लोग एक बड़ी संख्या में एकत्र होते हैं तथा पारस्परिक सद्भाव की भावना से एक दूसरे के सुख–दुख के बारे में जानकारी लेते हुए भारतीय विशेषता–अनेकता में एकता को चरितार्थ करते हैं। मेले में सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी होता है। मेलों का आकार, स्वरूप, प्राणतत्व के आधार पर निम्नवत् वर्गीकृत कर सकते हे–

1. क्षेत्रीय आधार पर
2. धार्मिक भावनाओं के आधार पर
3. ऋतु और समय के आधार पर

उपरोक्त वर्गीकरण को ध्यान में रखते हुए रुहेलखण्ड में मेलों की प्रकृति एवं विशेषताओं को समझा जा सकता है।

1. क्षेत्रीय आधार पर

(i) चौबारी मेला (बरेली) :

मेलो की प्रकृति गाँव से गाँव, जिले से जिले तथा विभिन्न छाटे–बड़े स्तरों पर बदलती रहती है। उदाहरणार्थ बरेली जिले के चौबारी नामक स्थान पर (बरेली से 10 कि.मी. दक्षिण) लगने वाला गंगा स्नान का मेला। यह मेला यद्यपि गंगा स्नान के पावन पर्व पर लगता है लेकिन यह अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध है। इस मेले की क्षेत्रीय विशेषतायें निम्नवत् हैं–

(अ) **नखासा (पशुओं की बिक्री का बाजार) :** चौबारी मेले में निकटस्थ एवं दूरस्थ क्षेत्रों से लोग पशुओं की खरीदारी व बिक्री के लिये आते हैं। प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में पशुओं की बिक्री एवं खरीदारी होती है। इन पशुओं में गाय, बैल, भैंस इत्यादि प्रमुख रूप से सम्मिलित होते हैं।

(ब) **पशुओं की दौड़ :** पशुओं की दौड़ के अन्तर्गत घुड़दौड़, चौबारी मेले का एक विशिष्ट आकर्षण है। यह प्रतियोगिता कई चरणों में सम्पन्न होती है। दर्शक और प्रतियोगी इन दौडों में बड़ी–बड़ी शर्तें लगाते हैं, जिसमें बड़े–बड़े महानगरों में आयोजित होने वाले "रेस कोर्स" प्रथा की झलक मिलती है।

(स) **दैनिक उपभोग की वस्तुओं का बाजार :** चौबारी मेले में दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक विशाल बाजार भी लगता है, जिसमें पशुओं की साज–सज्जा का सामान, पत्थर निर्मित चक्कियाँ एवं सिल, मिट्टी के बर्तन, ढोलक, खाद्य सामग्रियाँ बड़ी मात्रा में उपलब्ध होती हैं।

(i) ककोड़ा मेला (जिला बदायूँ) :

चौबारी के मेले की ही भाँति बदायूँ जिले में स्थित ककोड़ा गंगा–घाट पर भी गंगा स्थान के अवसर पर भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। इस मेले का प्रारम्भ लगभग 1770 ई० के आसपास नवाब अब्दुल्ला खाँ (ऑवला के रुहेला परिवार से सम्बन्धित) ने करवाया था। इस मेले का आरम्भ किस प्रकार हुआ, इस सम्बन्ध में एक किंवदन्ति प्रसिद्ध है। एक बार नवाब अब्दुल्ला खाँ शिकार पर गए। शिकार करते–करते वह रास्ता भूल गए और जंगल में भटकने लगे। तभी उन्हें जुम्मन नामक नाई (जिसकी मृत्यु काफी समय पूर्व हो चुकी थी) की आत्मा दिखाई दी। नाई की आत्मा ने नवाब साहब से कहा– "मैं आपको आज एक प्रेत कन्या के विवाह में ले चलूँगा। आप शाम होने तक एक पेड़ पर बैठे रहिए। रात्रि होने पर आप इस शादी को देख सकेंगे।" नवाब साहब रात्रि होने तक पेड़ पर बैठे रहे। शाम होने पर नाई की आत्मा नवाब साहब के पास आई और बोली कि अब प्रेत लड़की का विवाह नहीं हो सकता क्योंकि जिस व्यक्ति की आत्मा से उसका विवाह होना था, वह व्यक्ति मृत्यु होते ही गंगा के जल में गिर गया और उसे मुक्ति प्राप्त हो गई। इस बात को सुनकर नवाब साहब के हृदय में गंगा के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

इस श्रद्धा को व्यक्त करने के लिए नवाब अब्दुल्ला खाँ ने ककोड़ा घाट पर गंगा स्नान के पर्व पर प्रतिवर्ष मेले का आयोजन प्रारम्भ कराया। तब से आज तक इस मेले की परम्परा बरकरार है।

इस मेले के अवसर पर 10-12 दिन के लिए ककोड़ा घाट एक शहर के रूप में परिविर्तित हो जाता है। लोग कई–कई दिनों तक अस्थाई आवास बनाकर यहाँ निवास करते है। इस मेले मे दैनिक आवश्यकता की समस्त वस्तुओं की बिक्री होती है। गंगा–स्नान वाले दिन हजारों श्रद्धालु गंगा के जल में स्नान करते हैं। इस मेले की एक अन्य विशेषता यह है कि इस अवसर पर लोग बड़ी मात्रा में द्यूत क्रीड़ा में भाग लेते हैं।

(iii) दशहरा मेला (बहेड़ी, जिला–बरेली) :

बहेड़ी, बरेली जिले की एक तहसील है, जो कि बरेली से 48 किमी दूर नैनीताल मार्ग पर स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष दशहरे का भव्य मेला आयोजित किया जाता है। यह मेला लगभग 1 महीने तक चलता है। इस मेले की विशेषता यह है कि यहाँ भी चौबारी मेले की भाँति नरवासा (पशुओं की बिक्री का बाजार) लगता है। इसमें गाय, बैल, भैस इत्यादि जानवरों की विक्री होती है। यह नरवासा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नरवासों में सर्वोच्च स्थान पर है।

(iv) धौराटांडा का रामनवमी मेला (जिला–बरेली) :

धौराटांडा नामक स्थान बरेली शहर से लगभग 30 किमी उत्तर की ओर नैनीताल मार्ग पर स्थित है। यहाँ रामनवमी के अवसर पर भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यद्यपि यह मेला धार्मिक पर्व के अवसर पर लगता है, लेकिन यह अपनी कुछ क्षेत्रीय विशेषतओं के कारण प्रसिद्ध हे। इस मेले की क्षेत्रीय विशेषताओं में पशुओं का बाजार तथा दंगल प्रतियोगिताओं का आयोजन है। यहाँ की दंगल प्रतियोगिताओं में दूर–दूर के पहलवान भाग लेने आते हैं। विजेताओं को नाना प्रकार के पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

2. धार्मिक आधार पर

देवी–देवताओं, महापुरुषों, धार्मिक मिथकों और धार्मिक भावनाओं के आधार पर आयोजित किये जाने वाले मेलों तथा उर्सों का अपना एक पृथक वर्ग है। इनमें अधिकांश उर्स तथा मेले

़वी–देवताओं तथा महापुरुषों से माँगी जाने वाली मनोतियों के उद्देश्य से लगते हैं। इनमें नेम्नलिखित उल्लेखनीय हैं–

(i) गुलहड़िया गौरीशंकर मेला (जिला बरेली) :

बरेली से 43 किमी पश्चिम में स्थित गुल हड़िया गौरी शंकर मन्दिर में अत्यन्त प्राचीन शिवलिंग स्थापित है जिस पर पार्वती की प्रतिमा भी अंकित है। इस शिवलिंग की यह मान्यता है कि श्रद्धापूर्वक इसकी उपासना करने पर प्रत्येक मनोकामना पूर्ण होती है। शिवरात्रि पर्व के अवसर पर यहां भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें दूर–दूर से श्रद्धालुगण आते हैं। इसके अतिरिक्त सावन के प्रत्येक सोमवार को असंख्य मात्रा में यहाँ श्रद्धालु एकत्र होते हैं।

(ii) आला हज़रत का उर्स (बरेली) :

मुस्लिम शिक्षा के केन्द्र के रूप में बरेली का स्थान सर्वोपरि है। मुस्लिम शिक्षा के इस केन्द्र का संस्थापक आला हज़रत को माना जाता है। आला हज़रत के जन्म दिन के अवसर पर बरेली में विशाल उर्स आयोजित किया जाता है। इस उर्स में विभिन्न धार्मिक तथा शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों में मुशायरा तथा कव्वाली विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इस उर्स में भाग लेने न केवल भारत देश अपितु विश्व के प्रत्येक कोने से असंख्य मात्रा में लोग आते हैं। यह उस प्रतिवर्ष 23,24,25 सफर को मनाया जाता है।

(iii) गणेश–चौथ मेला (चन्दौसी) :

मुरादाबाद जिले में स्थित चन्दौसी तहसील में प्रत्येक वर्ष गणेश चतुर्थी के अवसर पर गणेश चौथ के मेले का आयोजन किया जाता है। इस मेले की विशेषता है भगवान गणेश की शोभायात्रा। इस शोभा–यात्रा में गणेश जी की विभिन्न शैलियों में असंख्य मूर्तियाँ प्रदर्शित की जाती हैं जिन्हें देखने प्रतिवर्ष विशाल जनसमूह एकत्रित होता है। गणेश चतुर्थी के अवसर पर चन्दौसी में एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है, जो लगभग 20 दिन तक चलता है। ज्ञातव्य है कि बम्बई महानगर में श्री गणेश चतुर्थी का उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

(iv) रामनगर (बरेली) में लगने वाले जैन मेले :

रामनगर नामक स्थान बरेली जिले की आँवला तहसील के निकट स्थित है। इस स्थान को जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की तपोस्थली माना जाता है। यहाँ एक प्राचीन जैन मन्दिर स्थित है जिसका वर्तमान में जीर्णोद्वार किया गया है।

रामनगर में प्रतिवर्ष तीन मेलों का आयोजन किया जाता है, जिनमें से प्रथम चैत्र कृष्ण अष्टमी से द्वादशी के अवसर पर, द्वितीय श्रावण शुक्ला सप्तमी पर तथा तृतीय पौष कृष्ण एकादशी के अवसर पर आयोजित किया जाता है। इन मेलों में हजारों की संख्या में भारत वर्ष के कोने--कोने से श्रद्धालुगण आते हैं और धर्म लाभ प्राप्त कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते है।

(v) श्री काली मन्दिर मेला (मुरादाबाद) :

मुरादाबाद नगर के लालबाग नामक स्थान पर श्री काली माता का प्राचीन मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर में प्रतिवर्ष रामनवमी तथा नवरात्र के अवसर पर भव्य मेलों का आयोजन किया जाता है। इन मेलों के अवसर पर असंख्य दुकानें लगाई जाती हैं, जिनमें पूजा की सामग्री के अतिरिक्त बच्चों के खिलौने तथा दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं बिक्री के लिए रखी जाती हैं।

(vi) खानकाहे अलिया नियाज़िया के विभिन्न उर्स (बरेली) :

खानकाहे अलिया नियाज़िया बरेली नगर में स्थित सूफी सम्प्रदाय की एक शाखा है। इस शाखा से अनेक महापुरुषों का सम्बन्ध रहा है। इन महापुरुषों ने सूफी सम्प्रदाय की इस शाखा को निरन्तरता प्रदान की। इन महापुरुषों को मुस्लिम वर्ग सरकार कहकहर सम्बोधित करता है। खानकाहे अलिया नियाजिया में प्रतिवर्ष विभिन्न सरकारों की स्मृति में चार उर्स आयोजित किए जाते हैं। इनमें से प्रथम जमादि उस्मानी की तारीख से 10 तारीख तक, द्वितीय बारह बफाद की 25,26,27 तारीख को तृतीय शब्बाल की 15,16,17 तारीख को तथा चौथा शाबान की 4,5,6 तारीख को आयोजित किया जाता है। इन उर्सों में देश--विदेश के श्रद्धालु भाग लेने आते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

(vi) हज़रत हाफिज सैय्यद शाह जमालउल्लाह कादरी का उर्स (रामपुर) :

हज़रत हाफिज़ सैय्यद शाह जमालउल्लाह कादरी रामपुर में हुए उन महापुरुषों में से थे,

जिन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश दिया।

हज़रत साहब का उर्स उनकी मज़ार शरीफ़ पर प्रतिवर्ष सफ़र के महीने में आयोजित किया जाता है। इस उर्स में दुनिया के हर हिस्से से सभी सम्प्रदायों के लोग भाग लेने आते हैं। इस उर्स में मुशायरे तथा कव्वालियों का आयोजन किया जाता है।

(viii) बड़े सरकार का उर्स (बदायूँ) :

हज़रत सुल्तान आरफ़ीन साहब रहम उल्लाह अलह उर्फ बड़े सरकार बदायूँ के एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्हें विशिष्ट प्रकार की दिव्य शक्ति प्राप्त थी। इस दिव्य शक्ति के बल पर हज़रत साहब ने अपने जीवन काल में हज़ारों लोगों की समस्याओं का समाधान किया। वर्तमान में उनकी मज़ार शरीफ़ बदायूँ नगर में स्थित हैं, जहाँ प्रतिदिन असंख्य श्रद्धालु आते हैं और अपनी समस्याओं के समाधान हेतु इबादत करते हैं। बड़े सरकार की ज़ारत पर प्रतिवर्ष रमजान के महीने में 20-25 रमजान तक उर्स का आयोजन किया जाता है। इस भव्य उर्स में कव्वाली, नात मिलाद इत्यादि कार्यक्रमों को सम्मिलित किया जाता है। इस उर्स में देश–विदेश के हजारों लोग भाग लेते हैं।

2. ऋतु के आधार पर

कुछ मेलों का आयोजन समय की ताल के आधार पर किया जाता है। पूर्णमासी, विषुवत संक्रान्ति, मकर संक्रान्ति तथा बसन्त पंचमी एवं अन्य पर्वों पर असंख्य मेलों का आयोजन रुहेलखण्ड क्षेत्र में होता है। इनमें भी माघ की पूर्णमासी के अवसर पर कछला घाट (जिला बदायूँ) पर आयोजित मेले का स्थान अग्रगण्य है।

रुहेलखण्ड के कुछ मेलों की सूची

मेला / उत्सव	स्थान	देव / स्वरूप
नेकपुर देवी का मेला	मढ़ीनाथ, नेकपुर, बरेली	दुर्गा
नरियावल का मेला	नकटिया, नरियावल	देवी
नेता का मेला	लाल फाटक, बरेली	शिव

भगवानपुर पंचोमी का मेला	पंचौमी, बरेली	शिव
नाग पंचमी	गंगापुर, बरेली	शिव
ग्वालपा सिद्ध	केन्द्र बरेली	गणेश/शंकर
गोर पूजन तीज	समस्त ग्रामों में	पार्वती
सकट	समस्त ग्रामों में	चन्द्रमा
हनुमान जयन्ती	बरेली एवं अन्य सभी स्थानों पर	हनुमान
राधाष्टमी	बरेली	राधा जी
गोवर्धन पूजा	समस्त परिक्षेत्र में	पशुओं/गोवर्धन पर्वत की पूजा
धोपेश्वर नाथ का मेला	बरेली	शिव
लिलहार मुड़ईया का मेला	लिलहार, मुड़ईया पीलीभीत	शिव
सिद्ध बाबा का मेला	हरिपुर, पूरनपुर (पीलीभीत)	गाँव की रक्षक देवता
वमियाना देवी का मेला	खुदागंज, शाहजहाँपुर	गाँव की राक्षिका देवी
ढाई घाट का मेला	खुदागंज, शाहजहाँपुर	गंगा देवी
खरैनिया बाबा का मेला	पीलीभीत	सिद्ध बाबा
पिन्नी	बरेली, रामपुर, बदायूँ	संकटा देवी
झंझिया टेसू	बरेली, रामपुर, बदायूँ	गौरा पार्वती
नगौरा नगौरिया	बदायूँ पीलीभीत	गौरा पार्वती
बाला जी की चलीसा	बरेली	हनुमान का बालरूप
अन्नकूट	बरेली	हनुमान का बालरूप
अगरस्त्य मुनि की शोभायात्रा	बरेली	अगरस्त्य मुनि

बरेली में मनाये जाने वाले उत्सव

1. बाला जी (बरेली शाखा) महोत्सव :

बाला जी हनुमान जी का बाल रूप माना जाता है। यह प्रमुखतः तिरुपति के बाला

जी–विष्णु भगवान का प्रतिरूप एवं धन का प्रतीक माना जाता है तथा मेहंदीपुर के बाला जी, जो कि हनुमान का प्रतिरूप स्वरूप है, राजस्थान से सम्बन्ध रखता है। यहाँ के आराध्य देव भैरो बाबा, बाला जी एवं प्रेत सरकार है। इसी की एक शाखा बरेली में पायी जाती है। इसकी बरेली में स्थापना लगभग 13 मई, 1984 में हुयी थी तथा इससे सम्बन्धित बाला जी की चौकी रामपुर, मिलक, काशीपुर, दिनेशपुर, मुरादाबाद, गाजियाबाद, गदरपुर आदि शहरों में स्थापित है। इसके विशेष अनुष्ठानों में 1. चालीसा, 2. मूर्ति स्थापना दिवस, 3. अन्नकूट हैं। यहाँ साल में चार बार शोभा यात्रायें निकाली जाती हैं। इनमें विभिन्न प्रकार की झांकी स्वरूप इत्यादि भी शामिल हैं।

चालीसा बरेली के बाला जी की शाखा में विशेष अनुष्ठान होता है। इसमें भक्तगण 40 दिन तक व्रत रखते हैं ये भक्त विशेष पोशाक जैसे– धोती–कुर्ता, कमर में अंगोच्छा बांधकर एवं माथे पर लाल पट्टी बांध कर लगातार 40 दिन तक विशेष मन्त्र "ऊँ हन्ता हनुमता नमः" का जाप करते हैं। यह जाप लगभग सवा लाख बार किया जाता है। चलीसा के अन्तिम दिन एक उद्यापन हवन होता है जो कि महन्त द्वारा सम्पन्न करवाया जाता है। तदोपरान्त भण्डारा होता है जिसमें देश एवं परदेश से आये भक्तगण सम्मिलित होते हैं और प्रसाद ग्रहण करते हैं। इसके पश्चात भजन कीर्तन इत्यादि का कार्यक्रम होता है तथा कार्यक्रम प्रातः चार बजे तक चलता है। पुनः प्रसाद का वितरण किया जाता है जिसमें हलुवे का वितरण किया जाता है। यह चलीसा साल के प्रथम मास में मनाया जाता है।

ठीक इसी प्रकार अन्नकूट का अनुष्ठान किया जाता है। इसमें तरह–तरह कार्यक्रम होते हैं। प्रातः काल से दोपहर 12 बजे तक कीर्तन चलता है। तदोपरान्त मन्दिर के महन्त द्वारा विभिन्न भोज्य पदार्थों को एक साथ मिलाकर भोग लगाया जाता है जिसे श्रद्धालु लोग प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। इसमें भी देश–परदेश से आये भक्तगण अपनी भागीदारी पूर्ण करते हैं।

2. श्री अगस्त्य मुनि महोत्सव :

श्री अगस्त्य मुनि सभा, बरेली महानगर के छोटी बमनपुरी में स्थापित हैं। यहाँ के लोग हर वर्ष श्री अगस्त्य मुनि जी का जन्म दिन मनाते हैं और शोभा यात्रा का आयोजन करते हैं। यह शोभा यात्रा बमनपुरी स्थित श्री अगस्त्य मुनि आश्रम से प्रारम्भ होकर महानगर की प्रमुख सड़कों

से होकर पुनः वापस छोटी बमनपुरी आकर समाप्त हो जाती है। श्री अगस्त्य मुनि का यहाँ से कोई विशेष संबंध नहीं जुड़ता है, मात्र जन्म दिन यहाँ मनाया जाता है और उनकी शिक्षाओं का प्रचार किया जाता है। इस संस्था द्वारा प्रकाशित उद्धत श्री अगस्त्य मुनि का संक्षिप्त जीवनी इस प्रकार है–

"एक बार त्रेता युग माहीं। शम्भु गये कुम्भज ऋषि पाहीं।।"

श्री मानस की उपरोक्त अर्द्धाली से प्रकट है कि श्री मुनि जी की तत्कालीन श्रेष्ठ ऋषि–मुनियों में गणना थी और शंकर जी इनके आश्रम में सती – सहित रान भक्ति का रहस्य जानने हेतु गये थे। इन महा तेजस्वी ऋषि की स्वयं उत्पत्ति अनेक ऋषियों के रुधिर से भरे कुम्भ से हुयी। अतः इन्हें कुम्भज कहा गया। इनकी पत्नी का नाम लोपा–मुद्रा था, जो इन्ही के शिष्य राजऋषि की कन्या थीं।

श्री अगस्त्य मुनि के बारे में प्रसिद्ध है कि "अर्ग पर्वतं स्तम्भयति इति अगस्त्य" अर्थात् जो पर्वत को भी स्तंभित कर दे। अपने नामानुसार उन्होंने विन्ध्य पर्वत को भी नम बना दिया जो कि अर्द्धगामी होता हुआ सूर्य के मार्ग को रोक रहा था।

इस प्रकार उन्होंने अपना सारा जीवन धर्म प्रचार एवं मानवता की रक्षा में व्यतीत किया। अगस्त्य जी का सप्त ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

कुछ लोक मान्यताएँ

एक लम्बी अवधि से हमारे समाज से कुछ ऐसी लोक–मान्यताएं सम्बद्ध हैं, जिनका कोई तार्किक और वैज्ञानिक आधार नहीं है। ऐसी मान्यताओं का आधार मात्र नानवीय विश्वास हे। रुहेलखण्ड क्षेत्र में भी कुछ ऐसी लोक मान्यताओं के दर्शन होते हैं जो लोगों की दृढ़ आस्था पर आधारित हैं। ऐसी मान्यताओं में कुछ का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है–

(i) ब्रह्म देव बाबा के निवास स्थल के रूप में पीपल के वृक्ष की उपासना :

रुहेलखण्ड क्षेत्र के गाँवों में पीपल के वृक्ष की उपासना की प्रथा अत्यन्त प्रचलित है। ग्रामीण लोगों का विश्वास है कि पीपल के वृक्ष पर ब्रह्म देव बाबा नामक दिव्य पुरुष निवास करते है ओर पीपल–वृक्ष की उपासना करने से यह दिव्य पुरुष प्रसन्न होकर प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करते है। रुहेलखण्ड के गाँवों में पीपल के ऐसे अनेक वृक्ष देखे जा सकते हैं, जो ग्रामीण लोगों की पूजा के केन्द्र हैं। प्रायः ऐसे वृक्षों के चारों ओर ऊँचा चबूतरा होता है। लोग ब्रह्मदेव बाबा को प्रसन्न करने के लिए पीपल की वृक्ष पर लाल झण्डियाँ तथा लंगोट चढ़ाते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से ब्रह्म देव बाबा प्रसन्न होंगे।

(ii) परियों का कुँआ (बदायूँ) :

वृक्ष–उपासना के साथ–साथ रुहेलखण्ड क्षेत्र में कुँओं की उपासना का प्रचलन भी है। इन कुँओं में बदायूँ नगर के समीप स्थित परियों का कुँआ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस कुँए के बारे में एक किंवदंति है। इस किंवदति के अनुसार – एक बार मुगल बादशाह अकबर सन्तान प्राप्ति की मन्नत माँगने बदायूँ में स्थित छोटे सरकार की ज़ारत पर आए। उनके साथ उनकी पत्नी जोधाबाई भी थीं। अकबर जोधाबाई के साथ इस कुँए के निकट से गुज़रे। कुछ दूर जाकर जोधाबाई ने देखा कि सफेद वस्त्र धारण किए हुए कुछ स्त्रियां इस कुंए के जल से स्नान कर रही हैं। यह देखकर जोधाबाई इस कुँए की ओर बढ़ीं। किन्तु कुँए के निकट आते ही वह स्त्रियाँ अदृश्य हो गई। कुछ स्थानीय लोगों ने जोधाबाई को बताया कि ये स्त्रियाँ संभवतः परियाँ थी। जोधाबाई ने इस कुंए के जल से स्नान किया। इसके उपरान्त वे छोटे सरकार की जारत पर गई। छोटे सरकार ने जोधाबाई को दिव्य रूप से यह संकेत दिया कि उन्हें सन्तान की प्राप्ति

गी। बाद में अकबर के यहाँ सलीम का जन्म हुआ। "तभी से इस कुँए के साथ यह मान्यता जुडी हुई है कि इसके जल से स्नान करने पर स्त्रियों को सन्तान की प्राप्ति अवश्य होती है। आज भी प्रतिदिन ऐसी असंख्य स्त्रियाँ इस कुँए के जल से स्नान करती हैं जिनको सन्तान प्राप्ति नही हो सकी है। स्त्रियों के मन में यह भावना अत्यन्त प्रबल है कि इस कुँए के जल के स्नान द्वारा मनचाही सन्तान प्राप्त होगी। सन्तान प्राप्ति की इच्छुक स्त्रियाँ लगातार छः बुधवार को यहाँ आकर स्नान करती हैं।

(iii) नवाब नौबत राय मन्दिर के चमत्कारी फर्श द्वारा त्वचा–रोगों का इलाज :

बदायूँ नगर में स्थित इस मन्दिर का निर्माण लगभग 150 वर्ष पहले नवाब नौबत राय ने करवाया था। पटियाली सराय में स्थित इस मन्दिर में शिव तथा अन्य देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित है। परन्तु इस मन्दिर से जुड़ा एक रोचक तथ्य है। यहाँ के एक कक्ष में स्थित सुन्दर तथा बहुरंगी फर्श। लोगों का दृढ़ विश्वास है कि इस फर्श पर लोटने से त्वचा के रोग (विशेषकर पित्थी) स्वत समाप्त हो जाते हैं। इस मन्दिर में ऐसे असंख्य लोग आते हैं जिनको पित्थी का रोग होता है। ऐसे लोग इस मन्दिर के चमत्कारी फर्श पर अपने शरीर का स्पर्श कराते हैं और स्वयं को निरोग महसूस करते हैं।

(iv) माती–माफी गाँव (जिला शाहजहाँपुर) से जुड़ी मान्यता :

जिला शाहजहाँपुर में स्थित माती–माफी गाँव के बारे में यह मान्यता प्रचलित है कि हिन्दुओ द्वारा पुज्य सातों देवियों का जन्म यहाँ हुआ था। यहीं से वे देवियाँ अन्य स्थानों को गईं। आज कल प्रत्येक अमावस्या को इस गाँव में एक मेला लगता है। लोगों का विश्वास है कि इस दिन सातों देवियाँ यहाँ आती हैं। इस मेलें में असंख्य श्रद्धालु आते हैं और मनौतियाँ माँगते है माती–माफी में काली देवी तथा उल्कादेवी के मन्दिर स्थित हैं। उल्का देवी के मन्दिर के पास ही भुगनई ताल है। लोगों के हृदय में यह विश्वास अत्यन्त दृढ़ है कि भुगनई ताल में स्नान कर से हर मनोकामना पूर्ण होती है।

●